इस्कॉन डिसाईंपल्स कोर्स

आयोजक: इस्कॉन, उज्जैन

इस्कॉन डिसाईपल्स कोर्स विषय सूची

इकाई एक

प्रस्तावना, सिद्धांत एवं प्रसंग

अध्याय एक

स्वागत एवं परिचय

१. सिद्धांत एवं मूल्य
२. पाठ के उद्देश्य
३. पाठ्यक्रम मूल्याङ्कन

अध्याय दो

गुरु तत्त्व एवं परंपरा

१. गुरु तत्त्व
२. गुरुओं के प्रकार
३. गुरु परंपरा प्रणाली
४. मरणोपरांत ऋत्विकवाद का खंडन

अध्याय तीन

इस्कॉन में श्रील प्रभुपाद का स्थान

१. इस्कॉन के संस्थापकाचार्य
२. प्रभुपाद: श्री चैतन्य महाप्रभू के शक्तिप्रदत्त प्रतिनिधि
३. इस्कॉन का भविष्य

अध्याय चार

इस्कॉन के गुरु

१. एक इस्कॉन गुरु का मनोभाव
२. इस्कॉन अधिकारी एवं गुरु के निर्देश
३. इस्कॉन के बाहर के गुरु

अध्याय १ स्वागत एवं परिचय

पाठ के विषय

कक्षा के मानदंड
सिद्धांत एवं मूल्य
पाठ्यक्रम के मुख्य उद्देश्य
पाठ्यक्रम मूल्यांकन

कक्षा मे व्यवहार के मानदंड

पाठ्यक्रम के दौरान, अध्ययन के अनुकूल वातावरण बनाये रखने के लिए सभी छात्र कक्षा के मानदंडों से सहमत रहना महत्वपूर्ण है|(देखें परिशिष्ट ६, पृष्ट ७४)

कोर्सके उद्देश्य

इस्कॉन के अंतर्गत शिष्यता की गुणवत्ता में बढ़ोत्तरी करना जिससे श्रील प्रभुपाद के संघ और उसके अनुयाइयों को दीर्घकालिक लाभ हो सके|

यह उद्देश्य इस प्रकारप्राप्त किया जाएगा:

१. छात्रों को शिष्यता के दीघकालिक सिद्धांतों की स्पष्ट समझ प्रदान कर जो श्रील प्रभुपाद की पुस्तकों एवं गौडीयवैष्णव की व्यापक रूप से में प्रदर्शित हैं| साथ ही उन्हें इन शिक्षाओं का महत्त्व समझाकर|

२. इन सीधांतों का उपयोग करना:

ए. अपने गुरु एवं वरिष्ठ वैष्णवों के साथ आध्यात्मिक रूप से स्वस्थ एवं रचनात्मक संबंध स्थापित करने के लिए |

बी. इन संबंधों की अनुरूप व्यवहार करने के लिए |

३. एक शिष्य से उपेक्षित मूल्यों एवं व्यवहार को विकसित करना|

४. व्यक्तिगत आचरण एवं उपदेश के माध्यम से भगवान व उनके प्रतिनिधियों की सहयोगपूर्वक सेवा करना जिससे श्रील प्रभुपाद की शिक्षाओं एवं आन्दोलन को चिरस्थाई किया जा सके|

डिसाइपल्स कोर्स के उद्देश्य

किस प्रकार मुझे शिष्य के रूप में सुधार की आवश्यकता है?

पाठ्यक्रम के सिद्धांत एवं मूल्य

१. श्रील प्रभुपाद पूर्वप्रतिष्ठित शिक्षा गुरु|
२. इस्कॉन एवं परंपरा के प्रति निष्ठा|
३. अनेक प्राधिकारियों एवं वरिष्ठ वैष्णवों के प्रति आदर|
४. गुरु का विचारपूर्वक चयन|
५ गुरु के निर्देशों पर श्रद्धा|
६. श्रील प्रभुपाद के आन्दोलन एवं अपनी प्रतिज्ञाओं के प्रति प्रतिबद्धता|
७. अनुकर्णीय साधना, आचरण एवं जीवन शैली|
८. सेवा, विनम्रता एवं समीक्षा|
९. अनुकूल संग, विस्तृता एवं सहयोग|
१०. हरिनाम का अनुशीलन एवं प्रचार|

पाठ्यक्रम मूल्यांकन

निम्नलिखित प्रश्न अथवा उनका एक चयन, आपके फेसिलिटेटर द्वारा आपको आवंटित किया जाएगा| जिनके उत्तर आपकोलगभग २५०शब्दों के भीतर लिखने हैं| तारांकित प्रश्न अनिवार्या हैं|

फेसिलिटेटर आपकेआपको अपने कार्य का मूल्यांकन-पत्र प्राप्त होगा| पूर्ण रूप से उत्तीर्ण होने के लिए प्रत्येक प्रश्न के ६५% प्राप्त करना अनिवार्य है| सफल प्रतिभागियों को जी.बी.सी. गुरु सेवा कमिटी के द्वारा इस्कॉन डिसैपल्स कोर्स का एक प्रमाण प्रत्र प्रदान किया जाएगा|

एकाई १ प्रस्तावना , सिद्धांत एवं प्रसंग

गुरु तत्त्व एवं परंपरा (अध्याय २)

१. गुरुओं की दो प्रमुख श्रेणियों के बीच भिन्नतायें एवं अभिन्नतायें समझायें|

२. ऋत्विकवाद विचारधारा का खंडन करने वाले कम-से-कम चार तर्क दें| अपने उत्तर में उपयुक्त प्रसंगप्रस्तुत करें|

इस्कॉन में गुरुपादाश्रय (पाठ ३,५, एवं ८)

३. इस्कॉन के अंतर्गत गुरुपादाश्रय का वर्णन करें|

४. किस प्रकार श्रील प्रभुपादइस्कॉन के पूर्वप्रतिष्ठित शिक्षा गुरु एवं संस्थापकाचार्य के रूप में कार्य करते हैं?*

५. इस्कॉन के भविष्य मे आनेवाली पीढ़ियों के लिए श्रील प्रभुपाद का पूर्वप्रतिष्ठित शिक्षा गुरु बने रहना क्यों आवश्यक है? *

६. श्रील प्रभुपाद एवं इस्कॉन के वर्तमान एवं भविष्यत गुरुओं की गुरु-पूजा की उपयुक्त विधियों का संक्षेप मे वर्णन करें|

इस्कॉन के गुरु (पाठ ४)

७. इस्कॉन के अंतर्गतश्रील प्रभुपाद की शिक्षाओं एवं इस्कॉन के प्राधिकार संरचना के प्रति एक इस्कॉनगुरु की उपयुक्त व्यवहार का वर्णन करें|*

८. किसी व्यक्ति को इस्कॉनमेंहीशिक्षा व दीक्षा गुरुक्योंस्वीकारनेचाहिए, बाहरी गुरुओं कोक्योंनहीं?

९. अन्य गौड़िया वैष्णव परंपरा एवं संगठनों के गुरुओं के प्रति एक इस्कॉन शिष्य के उपयुक्त व्यवहार कर वर्णन करें|

एकाई दो एवं ३ गुरु के साथ सम्बन्ध के अंतर्गत कार्य करना

गुरु का चुनाव एवं दीक्षा की प्रतिज्ञाएँ (पाठ ६)

१०. श्रील प्रभुपाद के कथनों का प्रसंग देते हुए दीक्षा की प्रतिज्ञाओं का महत्व समझायें|

११. शस्त्रों के आधार पर गुरु की कुछ योग्यताओं को लिखें|

१२. गुरु चुनाव करने के लिए उपयुक्त एवं अनोप्युक्त विधियों एवं कारणों की चर्चा करें|वर्तमानइस्कॉन

नियम एवं शस्त्रों के आधार पर उपयुक्त रुप से अपना उत्तर लिखें|*

गुरु सेवा (पाठ ९ एवं १०)

१३. इस्कॉनके आन्दोलन मेंसेवा एवं गुरु-सेवा के बीच संबंध की उदाहरण सहित चर्चा करें| इन दोनो के प्रति संतुलित दृष्टिकोण बनाए रखने के महत्त्व बताएं|*
१४. गुरु की *वपु* सेवा एवं *वाणी* सेवा क्या है? कौन-सी सेवा अधिक मत्वपूर्ण है और क्यों?
१५. चार ऐसे उपयुक्त एवं अनोप्युक्त विषयों के उदाहरण दे जिनपर गुरु का परामर्श लेना चाहिए| अपने उत्तर उपयुक्त शास्त्राधार पर दें|
१६. एक शिष्य का अपने गुरुभाइयों एवं गुरुबहनों से कैसा व्यवहार करना चाहिए, चर्चा करें| अपना उत्तर उपयुक्त शास्त्राधार पर दें|

एकाई चार:सहयोग-पूर्वक संबंध निभानाकरना

अपने गुरु को प्रस्तुत करना (पाठ १२ एवं ५)

१७. अपने गुरु को सार्वजनिक रूप से एवं वैष्णव समाज में बढ़ावा देने के विषय में अपने अनुसार एक शिष्य के उपयुक्त दृष्टिकोण और व्यवहार का वर्णन करें| अपने उत्तर को उपयुक्त शास्त्राधार एवं वर्तमान इस्कॉन नियमों का आधार दें| इस विषय में इस्कॉन के शिष्यों के लिए उपयुक्त व्यवहारको विकसित करना क्यों आवश्यक है?*
१८. श्रील प्रभुपाद को इस्कॉन के संस्थापकचर्या एवं पूर्वप्रतिष्ठित शिक्षा-गुरु के रूप में वर्तमान एवं भविष्य मे बढ़ावा देने की आवश्यकता क्यों है? शस्त्रों एवं वर्तमान इस्कॉनलॉ के आधार पर अपना उत्तर लिखें|*

इस्कॉन के भीतर-संबंध (पाठ १३)

१९. दीक्षा-गुरु के आधार पर भेद-भाव करने के संबंध में एक इस्कॉन शिष्य के *अनोप्युक्त दृष्टिकोण* एवं व्यवहार का वर्णन करें| इस विषय में उपयुक्त व्यवहार को विकसित करने का क्या महत्व है?*
२०. समस्त इस्कॉनवैष्णवों से सहयोगपूर्ण संबंध विकसित करने एवं बनाए रखने के व्यावहारिक तरीकों का वर्णन करें|*

पाठ २ गुरु तत्त्व एवं परंपरा

पाठ के विषय

गुरु तत्त्व गुरु के प्रकार गुरु परंपरा की पद्धति मरणोपरांत ऋत्विकवाद का खंडन

गुरु तत्त्व

गुरु की स्थिति का अपने शब्दों मे संक्षेप वर्णन करें

गुरु तत्त्व

आध्यात्मिक गुरु श्रीकृष्ण से अभिन्न हैं

गुरु कृष्णरूप हन्य शास्त्रेर प्रमाणे
गुरुरूपे कृष्ण कृपा करेन भक्तगणे

सभीशास्त्रों के स्पष्ट मतानुसारगुरु श्रीकृष्ण से अभिन्न हैं| श्रीकृष्ण गुरु के रूप में अपने सभी भक्तों का उद्धार करते हैं|

शिष्य का आपने गुरु के साथ संबंध परमेश्वर के साथ संबंध जितना ही श्रेष्ठ है|

श्री चैतन्य चरितमृत आदि लीला १.४ से

आचार्यं मां विजानियान नावमन्येत कर्हिचित् |
नमर्त्यबुद्धयासूयेत सर्व देव मयो गुरुः ||

"व्यक्ति को गुरु को मेरे समान समझना चाहिए और किसी भी प्रकार से उसका अनादर नहीं करना चाहिए|क्योंकि गुरु सभी देवताओं आ प्रतिनिधि है इसीलये उसे साधारण मनुष्य जानकार उससे ईर्ष्या नहीं करना चाहिए|"

श्रीमदभागवतं ११.१७.२७

अगरकोई अपने गुरु को साधारण मनुष्य समझता है, उसका सर्वनाश हो जाता है...

शास्त्रों के अनुसार गुरु का आदर श्रीभगवान के समान किया जाना चाहिए| *सक्षाधरित्वेन समस्त शास्त्रैःयः* सभी शास्त्रों का मत है|*आचार्यंमां विजानीयात्* (भागवत११.१७.२७)| व्यक्ति को चाहिये कि वः गुरु को भगवान के समान समझे| औरइन सभी उपदेशों के बाद भी अगर कोई व्यक्ति आध्यात्मिक गुरु को साधारण मनुष्य समझे तब उसका सर्वनाश हो जाता है|

श्रीमदभागवतं ७.१५.२६ के तात्पर्य से

जो सिद्ध रूप से अपनाकार्य करता है वह स्वयं भी सिद्ध कहलायेगा...

एक डाकिये ने हमें हज़ार रुपये पहुँचाए, परंतु हम यह नहीं सोचते कि हज़ार रुपये हमें डाकिये ने दिए हैं| डाकिये का कार्य केवल यह है की बिना कुछ जोड़े घटाए वह धनराशि हम तक पहुँचाए जो वास्तव मे एक मित्र ने हमें भेजी है| किसी के मित्र द्वारा भेजी गयी धन राशि को पहुँचना ही उसके कार्य की पूर्णता है| डाकिये में काई त्रुटियाँ हो सकती हैं परंतु जब वह अपना कार्य उत्तमरूप से करता है, वह उत्तम हो जाता है...

प्रभुपाद व्यास-पूजा दिवस प्रवचन, न्यू वृंदावन, सितंबर २, १९७२

जो मुक्ति को प्राप्त नहीं अथवा कम बुद्धिमान व्यक्ति हैंभी गुरु के रूप में कार्य कर सकते हैं...

भक्तिविनोद ठाकुर के कथन शास्त्रों जीतने हीश्रेष्ठ है क्योंकि वे मुक्त जीव हैं| साधारणतया, भगवान अपने पार्षदों के साथ आविर्भूत होते हैं; लेकिन यदि कोई जीव उनकेद्वारा बताए गये नियमों का पालन करता है तो वह श्री भगवान के पार्षदों के समान श्रेष्ठ हो जाता है... एक व्यक्ति जो मुक्त आचार्य एवंगुरु है कभी भी कोई त्रुटि नहीं करता, परंतु कुछ ऐसे कम बुद्धिमान व्यक्ति भी हैं जो परंपरा का सख्ती से पालन करते हुए गुरु के रूप में कार्य कर सकते हैं|

जनार्धन को लिखे एक पत्र से न्यू यॉर्क २६ अप्रैल, १९६८

जब आप शुद्ध भक्त के पद चिन्हों का पालन करते हैं, तब आप भी शुद्ध भक्त बन जाते हैं|

अगर आप शुद्ध भक्त का अनुसरण कर रहे हैं तो आप भी शुद्ध भक्त हैं| हो सकता है कि कोई १०० प्रतिशत शूध नहो|क्योंकि हम स्वयं को बद्ध- जीवन के उपर उठाने का प्रयत्न कर रहे हैं| परंतु जब हम शूध भक्त का सख्ती से अनुसरण करते हैं, तब हम भी शूध भक्त कहलाते हैं| जितना भी हम कर सकें वह शुद्ध है|शुद्ध भक्त का अर्थ यह नहीं कि कोई १०० प्रतिशत शुद्ध हो गया है| परंतु जब कोई "शुद्ध भक्त के अनुसरण" नमक सिद्धांत का सतत रूप से पालन करता है तब उसकी क्रियाएं... वह एक शुद्ध भक्त जितना ही श्रेष्ठ है|

भगवद्गीता २.१-१०
लास अंजेलेस, नवंबर २५, १९६८

गुरु के प्रकार

दीक्षा गुरु (एक)
- उपदेश देते हैं |
- परंपरा से संबंध स्थापित एवं आरंभ करते हैं |
- आध्यात्मिक नाम प्रदान करते हैं |
- मंत्र प्रदान करते हैं (मंत्र गुरु) |
- शिष्य की प्रतिज्ञा स्वीकार करते हैं |
- शिष्यओं को पापकर्मों से मुक्त करते हैं (दीक्षा के समय) |

शिक्षा गुरु (अनेक)
- उपदेश देते हैं|

"शिक्षा गुरुओं की कोई निश्चित संख्या नहीं है..."

मन्त्र गुरु आर शिक्षागुरुगण |
तान्हार चरण आगे करिए वंदन ||

सर्वप्रथम मई अपने दीक्षा गुरु एवं समस्त शिक्षा गुरुओं के चरणकमलों में आदरपूर्वक नमस्कार करता हूँ|

तात्पर्य: एक भक्त का केवल एक ही दीक्षा गुरु होना चाहिए क्योंकि शस्त्रानुसार एक से अधिक दीक्षा गुरु स्वीकारना वर्जित है|

तथापि शिक्षा गुरु स्वीकारने की संख्या पर कोई प्रतिबंध नही है| आमतौर पर आध्यात्मिक गुरु जो सतत एक शिष्य को निर्देशित करता है वही उसका दीक्षा गुरु बनता है|

श्री चैतन्य चरितमृत आदि लीला १.३५

दीक्षा एवं शिक्षा दोनों ही समान हैं

जो गुरु महा मन्त्र देकर दीक्षा देता है वह दीक्षा गुरु कहलाता है, और वे सभी साधू जो कृष्णभावनामृत में विकास करने के लिए उपदेश देते हैं, शिक्षा गुरु कहलाते हैं| शिक्षा और दीक्षा गुरु दोनों ही भगवान् श्रीकृष्ण के समान प्रकाश हैं, जब कि उनके कार्य भिन्न-भिन्न होते हैं|

तात्पर्य, श्री चैतन्य चरितामृत आदि लीला १.३४

शिक्षा गुरु बृंद कृपा कोरिय अपार
साधके सीखन साधानेर अंग-सर

परंतु मैं अनगिनत शिक्षा गुरुओं को अत्यंत महत्वपूर्ण समझता हूँ, क्योंकिउन्होने एक नवीन भक्त को साधना भक्ति के समस्त विषयों मे प्रशिक्षित कर उसपर असीम कृपा की|

श्रील भक्तिविनोद ठाकुर कृत *श्री श्री कल्याणा कलपतरूसे*

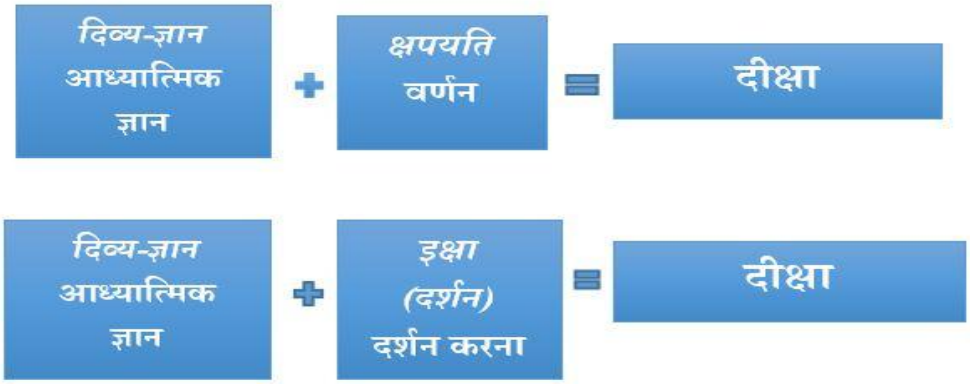

"दीक्षा का अर्थ है आध्यात्मिक गतिविधियों का आरंभ..."

'दीक्षा' का यही अर्थ है, "यह आरंभ है." दीक्षा, दि... दिव्य. दो शब्द हैं, दिव्य-ज्ञान| दिव्य ज्ञान का अर्थ है अलौकिक, आध्यात्मिक ज्ञान|'दी' है दिव्य और ज्ञानम्, क्षपयती, व्याख्या है 'क्षा', "दी-क्ष"| इसे कहते हैं दीक्षा, संयोजन है दीक्षा. अतः दीक्ष का अर्थ है आध्यात्मिक कार्य आरंभ करने की दीक्षा| यह दीक्षा कहलाती है| गुरु शिष्य से प्रण लेते है "आप इतनी बार जप करेंगे,""जी गुरुदेव|""आप इन नियमों का पालन करेंगे,""जी गुरुदेव|" यह कहलाती है दीक्षा| उस व्यक्ति को पालन करना है और जप करना है| अन्य सब कुछ स्वतः आ जाता है|

श्रीमद्भागवतम् ६.१.१५ के प्रवचन से----
ऑकलॅंड, फ़रवरी २२,१९७३

संस्कृत शब्द दीक्षा कहलाता है| दीक्षा अर्थात... दी, दिव्य-ज्ञानं, आध्यात्मिक ज्ञान, और 'क्षा', 'क्षा' का अर्थ है दर्शन, देखना, अथवा क्षपयती, व्याख्या| इसे कहते हैं '*दीक्षा*'|

बलि-मार्दन दास की दीक्षा के प्रवचन से----
मांट्रियल, जुलाई २९ १९६८

दीक्षा के बगैर... सभी भक्ति कार्य व्यर्थ हैं...

अदीक्षितस्य वामोरु कृतं सर्वं निरर्थकं |
पशुयोनिं अवाप्नोति दीक्षाविरहितो जनः ||

"एक परंपरा प्राप्त आध्यात्मिक गुरु से जबतक किसी की दीक्षा नहीं होती उसके समस्त भक्ति कार्य व्यर्थ हैं. जो व्यक्ति उचित रूप से दीक्षित नहीं है वह पुनः पशु योनियों में उतार जा सकता है."

हर भक्ति विलास (२.६)

विसनु यामल से एवं
श्री चैतन्य चरितमृत मध्य लीला १५.१०८ के तात्पर्य से

प्रथम दीक्षा (हरि-नाम दीक्षा)

कृष्ण भावनामृतआंदोलन के छात्र आरम्भ में भक्तों से संग में रहना स्वीकार करते हैं और क्रमशः ४ प्रतिबंधित क्रियाएं जैसेअवैध यौन संबंध, द्यूतक्रीड़ा, माँसाहार एवं नशे से वर्जना करते हुए वे भक्ति कार्यों में अग्रसर होते हैं| जब कोई व्यक्ति इन नियमों का सतत रूप से पालन करता है| तब उसे हरि-नाम दीक्ष दी जाती है और वह नियमित रूप से १६ माला का जप करता है| इसके उपरांत, छः महीने बाद उसे दूसरी बार दीक्षित किया जाता है और नियमित यज्ञों और अनुष्ठानों के उपरान्त जनएऊ प्रदान किया जाता है|

श्री चैतन्य चरितमृत आदि लीला १७.२६५ तात्पर्य

हरिनामदीक्षा व मंत्र-दीक्षा

प्रथम अनुष्ठान हरिनाम दीक्षा है, फिर मंत्र दीक्षा. ये सभी बालक एक वर्ष पहले हरिनाम दीक्षित किए गये तेओर अब उन्हे मंत्र दीक्षा दी जा र्हीं है, जी...

गायत्री मंत्र दीक्षा पर प्रवचन---बोसटन, मई ९, १९६८

गुरु परम्परा प्रणाली

एवं परंपरा प्रापतम

यह सर्वोच्च विज्ञान गुरु परंपरा के मध्यम से प्राप्त किया गया था|

भगवद् गीता यथारूप ४.२

हमें शिक्षा एवं दीक्षा गुरु स्वीकारने की क्या आवश्यकता है?

"परंपरा प्रणाली..."

शिष्य द्वारा किया गया आदर गुरु स्वयं नहीं स्वीकारते परंतु श्रीकृष्ण को अर्पित कर देते है... भगवद् गीता में बताया गया हैं की श्रीकृष्ण का ज्ञान गुरु परंपरा द्वारा ही प्राप्त होता है|*एवं परंपरा प्रापतम्* (गीता ४.२) गुरु यह सम्मान अपने गुरु को अर्पण करते हैं, और उनके गुरु अपने गुरु को, इस प्रकार सम्मान श्रीकृष्ण तक पहुँचता है| श्रीकृष्ण की कृपा परंपरा द्वारा ही प्राप्त होती है, और भगवान को अर्पित सम्मान परंपरा द्वारा ही उन तक पहुँचता है| इस प्रकार से हमें परम परमेश्वर भगवान की ओर बढ़ना चाहिए...

भगवान कपिल का शिक्षामृत, अध्याय १३

व्यक्ति को इस वर्तमान कड़ी कोस्वीकारना चाहिए

...श्रीमद् भागवतम का संदेश परंपरा से आ रहा है, इसीलिए श्रीमद् भागवतम के को वास्तविक रूप में समझने के लिए व्यक्ति को वर्तमान कड़ी को स्वीकारना चाहिए, अर्थात परम्परा के वर्तमान गुरु को |

श्रीमदभागवतं २.९.७

गुरु परंपरा प्रणाली

"आप सीधे उच्च स्तरीय गुरु तक छलांग नहीं लगासकते..."

अगर हम भगवद् गीता को समझना चाहते हैं तो हमें उसी व्यक्ति से सुनना होगा जिसने स्वयं भगवान से सुनी हो| यह कहलाती है परंपरा प्रणाली| मानिए अगर मैने अपने गुरु से कुछ सुना है तो मैं भी यथारूप आपसे वही बात कहूँगा| मेरे गुरु ने क्या कहा इसकी आप कल्पना नहीं कर सकते कुछ पुस्तकें पढ़कर भी आप नहीं समझ सकते जब तक आप मुझसे न सुनें| इसे परंपरा प्रणाली कहते हैं| आप उच्च गुरु की ओर छलाँग नहीं लगा सकते, अगले आचार्य की उपेक्षा करते हुए, तत्कालीन आचार्य की|

श्रीमाद भागवतम १.१५.३० के प्रवचन से ---
लॉस आंजल्स, दिसंबर ८,१९७३

श्रीकृष्ण की ओर सीधे पहुँचने के लिए छलाँग न लगायें|यह व्यर्थ प्रयासहै|

सबसे पहले आपकेआध्यात्मिक गुरु, फिर उनके गुरु, फिर उनके गुरु , फिर उनके गुरु, अंततः श्रीकृष्ण| यह है विधि| श्रीकृष्ण को सीधे छलाँग लगाकर प्राप्त करने का प्रयत्न न करें|यह व्यर्थ है| जैसे आपको यह ज्ञान परंपरा के चरणों में मिला है, इसी प्रकार से हमें श्रीकृष्ण के ओर अग्रसर होना चाहिए|

श्रीमद् भागवतम १.२.४
रोम, मई २८, १९७४

एक व्यक्ति को वैष्णव गुरु स्वीकारना चाहिए... केवल पुस्तकें पढने के माध्यम से ही नहीं|

किसी को अहंकार-वश यह नही सोचना चाहिए की उसने पुस्तकें पढ़कर ही भगवान की प्रेममयी सेवा

प्राप्त कर ली है... उसे एक वैष्णव गुरु स्वीकार करना चाहिए(*आदौगुर्वाश्रयं*), और फिर प्रश्नोत्तर के मध्यम से क्रमशः सीखना चाहिए की श्री कृष्ण की शुद्ध भक्तिमय सेवा क्या है. इसे कहते है परंपरा प्रणाली|"

श्री चैतन्य चरितमृत अंत्य लीला ७.५३, तात्पर्य

जिन शिष्यों को मैं दीक्षा दे रहा हूँ... भविष्य में आध्यात्मिक गुरु होंगे

यह छात्र जो मेरे द्वारा दीक्षित किए जा रहे हैं, सभी मेरी तरह कार्य करेंगे| जेसे मेरे कई गुरु भाई कार्य कर रहे हैं| इसी प्रकार जिन छात्रों को मैं दीक्षा दे रहा हूँ भविष्य के गुरु बनने के लिए तैयार हो रहे हैं|

वार्तालाप, डेटराइट, जुलाई १८, १९७१

मैं अपने शिष्यों को प्रामाणिक गुरु बनता देखना चाहता हूँ

मैं अपने शिष्यों को प्रामाणिक गुरु बनकर श्रीकृष्ण भावनामृत का व्यापक प्रचार करता देखना चाहता हूँ, इससे श्रीकृष्ण बहुत प्रसन्न होंगे... अगर आप सख्ती से प्रशिक्षित रहेंगे तभी आप प्रामाणिक गुरु होंगे, आप इसी सिद्धांत पर शिष्य बना सकेंगे| परंतु सदाचरनुसार अपने आध्यात्मिक गुरु के जीवन कल के दौरान शिष्य को आध्यात्मिक अभ्यार्थियों को अपने गुरुकेपास दीक्षालेने के लिए ले जाने चाहिए, और उनके तिरोभाव अथवा गैर-मौजूदगी में आप दीक्षा दे सकते हैं| यह परंपरा का सिद्धांत है|

तुष्ट कृष्ण को लिखे पत्र से, दिसंबर २, १९७५

मेरीइच्छा हैकिमेरी अनुपस्थिति में मेरे शिष्यप्रामाणिक गुरु हों

जो भी व्यक्ति एक प्रामाणिक प्रतिनिधि के निर्देशानुसार भगवान श्रीचैतन्य महाप्रभु की आज्ञा का पालन करता है वह आध्यात्मिक गुरु बन सकता है और मेरी यह आशा है की मेरी अनुपस्थिति में मेरे सभी शिष्य कृष्ण भावनामृत को संपूर्ण विश्व मे फेलने हेतु प्रामाणिक गुरु बनें|

मधुसूदन को लिखे पत्र से- नवद्वीप, २ नवंबर, १९६७

"जीतने आप विनम्र सेवा करेंगे-तब आप उतने ही विक्सितबनेंगे"

यह परंपरा कहलाती है. आपको सेखना होगा केसे श्री कृष्ण के दासों के दास बनें| आप जितनी निम्न स्थिति में स्वयं को देखेंगे---दास, दास सौ बार दास---आप उतनी ही प्रगति करेंगे|

भगवद् गीता २.२ के प्रवचन से--
लंडन, अगस्त ३, १९७३

मरणोपरांत ऋत्विकवाद के खंडन करते तर्क

मरणोपरांत ऋत्विकवाद एक मिथ्या है जिसके अनुसार एक दीक्षा गुरु अपने तिरोभावोपरांत ऋत्विको अथवा स्थापन्न पुरोहितों की संस्था के माध्यम से दीक्षा प्रदान करते हैं|

- किसी भी प्रामाणिक वैष्णव संप्रदाय में किसी के परम गुरु से दीक्षा लेने का उदाहरण नही है|
- किसी के परम-गुरु से दीक्षा लेने के पक्ष में कोई शास्त्रीय प्रमाण नहीं है|
- नित्यानंद प्रभु के पुत्र वीरभद्र गोस्वामी, श्रीनिवास आचार्य को लिखे अपने पत्र में एक जय-गोपाल नामक व्यक्ति को वैष्णव समाज से बहिष्कृत करते है उसके स्वयं को अपने परम-गुरु का शिष्य बताने के कारण|

गौड़िया वैष्णव अभिधान, खंड ३

- प्रभुपाद के शिष्यों मे से एक भी योग्य दीक्षा-गुरु नहीं है, यह तर्क प्रभुपाद की शिक्षाओं को अप्रभावी सिद्ध करता है. तो फिर प्रभुपाद का ऋत्विक द्वारा दीक्षा शिष्य बनना किस प्रकार लाभकारी हुआ?
- एक ऋत्विक गुरु उपदेश एवं सुझाव देता है परंतु एक प्रामाणिक दीक्षा गुरु के समान शिष्य का उद्धार करने दायित्व नहीं स्वीकारता|

अतिरिक्त बिंदु:

गुर तत्त्व

आचार्य को भगवान जिनतासम्मान देना चाहिए|

विश्वनाथ चक्रवर्ती ठाकुर ने भी कहा है... साक्षाधरित्वेनसमस्त शस्त्रैर उक्तस्तथ भावयतः एव षड्भिः| आचार्य, गुरु भगवान के समान हैं|*साक्षाद हरित्वेन*| आचार्य को कृष्ण के समान सम्मान देना चाहिए *आचार्यं मां विजानीयान नावमयेत कर्हिचित्* (भगवातम ११.१७.२७)| अगर कोई अज्ञानता पूर्वक यह सोचता है, "वे मेरे जैसे सधरन मनुष्यहैं और एक उच्च आसन पर बैठकर अपने शिष्यो का अर्चन एवं सम्मान स्वीकार रहे हैं|" कभी-कभी वे ऐसे प्रश्न पूछ सकते हैं| किंतु वे नही जानते कैसे एक आचार्य का सम्मान कियाजानाचाहिए|*साक्षाद हरित्वेन*, भगवान के समान आचार्य का सम्मान करना चाहिए. यह अतिशयोक्ति नही है| यह शास्त्रों में वर्णित है| और प्रमेश्वर भगवान तक पहुँचने के लिए ही आचार्य यह सम्मान स्वीकारते हैं| यह प्रणाली है|

श्रीमद्भागवतं १.७.४५-४६---
वृंदावन, अक्तूबर ५, १९७६

श्रीमती राधारनी के पार्षद एवं नित्यानंद प्रभु के प्रतिनिधि

वास्तविक वैदिक विचारधारा है अचिन्त्य भेदाभेद तत्व जिसके अनुसार इस संसार का सबकुछ एक ही समय पर भगवन के व्यक्तित्व से भिन्न एवं अभिन्न है| श्रील रघुनाथदास गोस्वामी कहते हैं कि यह है प्रामणिक आध्यात्मिक गुरु की वास्तविक स्थिति और बताते हैं कि शिष्य को सदैव अपने गुरु को उनके श्री मुकुंद के साथ सम्बन्ध कास्मरण रखते हुए देखना चाहिए|श्रील जीव गोस्वामी, अपने ग्रन्थ भक्ति सन्दर्भ(२१३) में कहते हैं कि क्योंकि भगवान् शिव एवं अपने गुरु को एक भक्त भगवान् के सामान ही समझता है क्योंकि वे दोनों ही श्रीभगवान को अत्यंत प्रिय हैं परन्तु साथ ही वही भक्त सभी प्रसंगों में, दोनों को भगवान् के सामान नहीं मानता|श्रील रघुनाथ दस गोस्वामी एवं श्रील जीव गोस्वामी का अनुसरण करते हुए श्रील विश्वनाथ चक्रवर्ती ठाकुर भी इसी तथ्य को स्थापित करते हैं|श्रील विश्वनाथ चक्रवर्ती ठाकुर यह कहतेहैंकि सर्वशास्त्रनुसार आध्यात्मिक गुरु भगवान के सामान हैं क्योंकि वे भगवान कोअत्यंत प्रिय उनके एवं गोपनीय सेवक हैं| इसीलिए गौडीय वैष्णव अपने गुरु, श्री गुरुदेव को उनके श्री भगवान के शिष्यत्व के प्रकाश में देखते हैं| सभी प्राचीन भक्ति शास्त्रों एवं श्रील नरोत्तम दास ठाकुर, श्रील भक्तिविनोद ठाकुर व अन्य शुद्ध वैष्णवों के नवीन गीतों में गुरु को सदैव या तो श्रीमती राधारानी का गुप्त पार्षद अथवा श्री नित्यानंद प्रभु का प्रतिनिधि माना गया है|

श्री चैतन्य चरितामृत आदि लीला १.४७

आध्यात्मिक गुरु चैत्य-गुरु के बाह्य प्रकाश हैं...

सर्वोच्च आध्यात्मिक गुरु श्री कृष्ण हैं, इसीलिए वे चैत्य गुरु कहलाते हैं. यह परमात्मा की ओर संकेत करता है जो सभी के हृदय में स्थित हैं|वे भीतर से हमारी सहायता करते हैं जैसे कि भगवद्गीता में भी कहा गया है, और वे आध्यात्मिक गुरु भेजते हैं जो बाहर से हमारी सहायता करते हैं| आध्यात्मिक गुरु चैत्य गुरु के बाह्य अवतार हैं, चैत्य गुरु जो सभी के हृदय में विराजित आध्यात्मिक गुरु हैं|

श्रीमदभागवतं ४.८.४४, तात्पर्य से

" हम१००प्रतिशत सिद्धनभीहोंपरन्तुयथासंभवजितनाहमपालनकरपायेंगेउतनीहीसिद्धिको प्राप्त करेंगे| इसप्रकारसेव्यक्तिसिद्धकहलाताहै| व्यक्तिको अनुसरण करना होगा| यही उदाहरण, समझने काप्रयास करें, कि अगर कोई दक्ष अभियंता कार्य कर रहा है और उसके निर्देशानुसार कोई और भी कार्य कर रहा है| यह दूसरा व्यक्ति, क्योंकि एक दक्ष व्यक्ति से निर्देशित है, वह भी दक्ष कहलाता है|वह स्वयं १०० प्रतिशत दक्ष न हो परन्तु उसका कार्य दक्ष है| यह स्पष्ट है? क्योंकिवह एक दक्ष के अंतर्गत कार्य कर रहा है| आप समझ रहे हैं? इसी प्रकार आप अगर शुद्ध भक्त का अनुसरण करते हैं तब आप भी शुद्ध भक्त हो जातेहैं|संभव है किहम१०० प्रतिशत शुद्ध न हो|क्योंकि हम स्वयं बद्ध जीवन से ऊपर उठने का प्रयास कर रहे हैं| अगर हम एक शुद्ध भक्त का सख्ती से आचरण करते हैं, तो हम भी शुद्ध भक्त हैं| शुद्ध भक्त होने काअर्थ यह नहीं है कि किसी को १०० प्रतिशत शुद्ध बनना होगा| परन्तु कोई अगर "शुद्ध भक्त का अनुसरण" सिद्धांत कासख्ती से पालन करता है, तब उसके कार्य...वह शुद्ध भक्त के समान होगा|

भगवद-गीता २.१-१०

लोस अन्जेलेस, नवंबर २५, १९६८

गुरु के प्रकार

"वे अनेक नहीं एक हैं, गुरु तत्व..."

गुरु से सर्वप्रथम आदरपूर्वक प्रार्थना की जाती है,*वन्दे गुरुन्*|*गुरुन्* बहुवचन है, उतने सारे गुरु| परन्तु वे अनेक नहीं एक हैं, गुरु-तत्व...

श्री चैतन्य चरितामृत अदि-लीला १.१ परप्रवचन से,

मायापुर, मार्च २५, १९७५

दीक्षा व्यक्ति को पूर्व पाप-कर्मों से मुक्ति दिलाती है

दीक्षा काले भक्त करे आत्म समर्पण
सै-काले कृष्णा तारे करे आत्म-सम

दीक्षा के समय जब कोई शिष्य भागवत-सेवा के प्रति समर्पित होता है, श्री कृष्ण समान श्रेष्ठ] मानकर स्वीकार करते हैं|

सै देहा करे तार चिदानंदमय
अप्राकृत-देहे तान्हार चरण भजय

जब शिष्य का शरीर आध्यात्मिक बन जाता है तब, वह भक्त, इस अलौकिक शरीर के द्वारा भगवान के चरण कमलों पर सेवा अर्पित करता है|

श्री चैतन्य चरितामृत अन्त्य लीला ४.१९२

दीक्षा एवं शिक्षा गुरु

...आध्यात्मिक गुरु जो शास्त्रानुसार दीक्षित करता है वह दीक्षा गुरु कहलाता है, और जो आध्यात्मिक उन्नति के लिए उपदेश देता है वेह शिक्षा गुरु कहलाता है|

श्री चैतन्य चरितामृत मध्य ८.१२८

दीक्षा पुराश्चर्या-विधि अपेक्षा ना करे
जिह्वा स्पर्शे आ-चंडाल सबारे उद्धारे

किसी को भी दीक्षा लेने अथवा दीक्षा-पूर्व अनुष्ठानों का पालन करने कि आवश्यकता नहीं है| एक व्यक्ति को केवल अपनहोठों से भगवान का नाम करना है| इस प्रकार सबसे निम्न कुल के चंडाल का भी उद्धार हो सकता है|

श्री चैतन्य महाप्रभु कि सत्यराज खान के साथ वार्तालाप से,
श्री चैतन्य हरितामृत, मध्य १५.१०८

आध्यात्मिक गुरु अपने शिष्य के सभी पाप कर्मों को स्वीकार करते हैं

पहली दीक्षा के समय आध्यात्मिक गुरु अपने शिष्यों के सभी पाप कर्मों को स्वीकार कर लेते हैं. मैं दीक्षा बड़ी आसानी से दे देता हुन, परन्तु मैं कर क्या सकता हूँ? मैं श्री चैतन्य महाप्रभु की सेवार्थ नरक में भी जाने को तैयार हूँ|

जदुरानी को लिखे पात्र से----
न्यू-वृन्दावन ४ सितंबर, १९७२

प्रथम बार श्रवण करने से नित्य सम्बन्ध आरम्भ हो जाता है|

आपके प्रश्नों के सम्बन्ध में, दूसरी दीक्षा वस्तविक दीक्षा होती है| प्रथम दीक्षा प्रारंभिक दीक्षा होती है, शिष्य को तैयार करने के लिए, प्रारंभिक एवं उच्च शिक्षा के समान| पहली दीक्षा उससे शुद्ध होने का अवसर प्रदान करती है, और शुद्धि के बाद वह ब्राह्मण के रूप में स्वीकाराजाता है, इसका अर्थ है वास्तविक दीक्षा| शिष्य एवं गुरु का नित्य सम्बन्ध पहले दिन श्रावण करने पर ही स्थापित हो जाता है| मेरे आध्यात्मिकगुरु कि तरह| १९२२ में मेरे साथ पहली भेंट में उन्होंने पूँछा था कि आप शिक्षित व्यक्ति इस ज्ञान का प्रचार क्यों नहीं करते? वह आरम्भ था अब सत्य बन गया है|अर्थात, यह सम्बन्ध उस दिन ही स्थापित हो गया था|

जदुरानी को लिखे पात्र से—
न्यू-वृन्दावन ४ सितंबर,१९७२

गुरु परंपरा प्रणाली

सर्वप्रथम आप मेरे भक्तों के भक्त बनें...दास दास दासानुदासः

हम सीधे श्री कृष्ण कि और छलांग नहीं लगा सकते| यह अलग नासमझी है| हमें गुरु के माध्यम से श्रीकृष्ण तक पहुँचने का प्रयास करना चाहिए| यह परम्परा कहलाती है| श्रीकृष्ण कोई मूल्यहीन वास्तु नहीं जो कि सीधे छलांग लगाकर प्राप्त कर ली जाये| कोई अगर कहता है, "अरे, मैं किसी को गुरु क्यों मानूं? मैं श्रीकृष्ण तक स्वयं पहुँच सकता हूँ|" यह सही नहीं है|श्रीकृष्ण इनको नहीं स्वीकारते *मद-भक्तः पूजाभ्याधिकः*. श्रीकृष्ण कहते हैं "आप सर्वप्रथम मेरे भक्तों क भक्त बनें|" चैतन्य महाप्रभु कहते हैं, गोपी भर्तुह पद-कमल्योर दास-दास- दासानुदासः, "मैं श्री कृष्ण के दासों के दासों का दास हूँ|"

एक प्रमाणिक गुरु स्पष्ट रूप से एक शिष्य के दोष बता देते हैं...

वह व्यक्ति जो तथाकथित ज्ञान से अत्याधिक गर्वित है और विनम्रता से विहीन है कभी भी एक प्रमाणिक गुरु के शरण में नहीं जाता| वह यह सोचता है कि उसे आध्यात्मिक गुरु की आवश्यकता नहीं है और वह अपने प्रयासों से परम गति प्राप्त कर लेगा| ऐसे व्यक्ति वेदान्त सूत्रों का अध्ययन करने के लिए योग्य नहीं हैं| जो व्यक्ति अत्याधिक रूप से भौतिकता के प्रति आसक्त हैं वे परम्परा केउपदेशों की उपेक्षा करते हुए स्वयं के विचारों का उत्पादन करते हैं और इसी प्रकार वेदान्त के अधिकारकक्षेत्र के बहर चले जाते हैं| एकप्रमाणिक गुरु को इस प्रकार के शुष्क विचारकों की भर्त्सना करनी चाहिए| और जब आध्यात्मिक गुरु शिष्य की नासमझी प्रकाशित करते हैं तब उन्हें अन्यतः नहीं लेना चाहिए|

भगवानशिक्षा चैतन्य महाप्रभु का शिक्षामृत, १८ अध्याय
प्रकाशानंद के साथ बातचीत

भक्तिविनोद ठाकुर गौर किशोर दास बाबाजी के सीधे गुरु नहीं थे

भक्तिविनोद ठाकुर गौर किशोर दास बाबाजी के औपचारिक गुरु नहीं थे| गौर किशोर दास बाबाजी पहले से ही परमहंस स्टार पर थे, परन्तु ठाकुर भक्तिविनोद जो उस समय ग्रहस्थ आश्रम में थे तब भी गौर किशोर बाबाजी के द्वारा गुरु माने जाते थे, और उनकी उच्चतम आध्यात्मिक समझ के कारण उन्हें वे ग्रहस्थ होने पर भी उन्हें अपना गुरु माना करते थे| आध्यत्मिक गुरु दोभागों में विभाजित होते हैं, शिक्षा गुरु और दीक्षा गुरु| इसीलिएप्रत्यक्ष रूप से भक्तिविनोद ठाकुर, गौर किशोर दास बाबाजी के शिक्षा गुरु जैसे थे|

दयानंद को लिखे पत्र से
एल्सटन, मास
१ मई १९६९

परम्परा का यह अर्थ नहीं कि व्यक्ति को सीधे शिष्य होने की आवश्यता नहीं है|

और दूसरा बिंदु यह है कि परम्परा का अर्थ यह नहीं कि व्यक्ति को सीधे ही शिष्य बनना है एक विशेष गुरु का| वे सभी निष्कर्ष जप हमने भगवद्गीता यथारूप में समझाए है, अर्जुन के निष्कर्षों के समान हैं... दूसरा उदाहरण है कि एक वृक्ष में कई शाखाएं होती हैं, और आपको एक पत्र यहाँ मिलेगा और दूसरा वहां| परन्तु जब आप दोनों स्थलों के पत्रों को चखेंगे आपको स्वाद एक ही आएगा| स्वाद ही निष्कर्ष है, और स्वाद के माध्यम से ही आप जान सकते हैं कि दोनों पत्र एक ही वृक्ष के आये हैं|

कीर्तनानंद को लिखे पत्र से,
लोस एंजेलेस
२५ जनवरी १९६९

गुरु एक ही होता है|

गुरु एकही होता है क्योंकि वह गुरु परंपरा में आता है| जो व्यासदेव एवं श्री कृष्ण ने ५००० वर्ष पहले सिखाया वह अभी भी सिखाया जा रहा है| दोनों उपदेशों में कोई भी अंतर नहीं है| कई आचार्य आकर जा चुके हैं परन्तु सन्देश वही है| वास्तविक गुरु दो नहीं हो सकते, क्योंकि वास्तविक गुरु अपने पूर्व गुरुओं से भिन्न विचार नहीं रखता|

पाठ के विषय

संस्थापकाचार्य के कार्य
प्रभुपाद- श्री चैतन्य महाप्रभु के शक्तिप्रदत्त प्रतिनिधि
भविष्य का इस्कॉन

संस्थापकाचार्य के कार्य

स्थापना करने के अर्थएक सुदृढ़ नीव एवं आश्रय प्रदान करना.
सिद्धांत स्थापित करना|
किसी संस्था को सर्वप्रथम स्थापित करना और उसके बने रहने के लिए उचित प्रतिबन्ध करना|

ऑक्सफ़ोर्ड इंग्लिश डिक्शनरी के अनुसार, ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस

सूचीबद्ध करें कि किस प्रकार श्रील प्रभुपाद इस्कॉन के संस्थापकाचार्य के रूप में कार्य करते हैं:

श्रील प्रभुपाद- श्री चैतन्य महाप्रभु के शक्तिप्रदत्त प्रतिनिधि

श्रील प्रभुपाद को श्री चैतन्य महाप्रभु केशक्तिप्रदत्त प्रतिनिधि के रूप में स्वीकारे जाने के कारण नीचे

दिए हुए बक्से में सूचीबद्ध करें :

मोर भक्त सेनापति

एबे नाम संकीर्तन तीक्ष्ण खड़ग लैया अन्तर असुर जिवेर फेलिबे कतिया
यदि पापी छड़ी धर्मं दुरे देसे यया मोरा सेनापति-भक्त येबे तथय

नाम संकीर्तन की धारदार तलवार से मैं बद्ध जीवों के ह्रदय के समस्त असुरी भावों का सर्वनाश करूँगा| अगर कुछ पापी व्यक्ति धार्मिक नियमों का त्याग कर दूर देशों को भागेंगे तब मेरा सेनापति भक्त उनतक पहुँच कर उन्हें कृष्ण भक्ति देगा|

लोचन दस ठाकुर द्वारा चैतन्य मंगल में लिखित
(सूत्र खंड, गीत १२, श्लोक ५६४-५६५)

भविष्य में इस्कॉन

श्रील प्रभुपाद के भविष्य मैं समस्थापकचार्य एवं स्थापन्न शिक्षा-गुरु बने रहना सुनिश्चित करने के लिए

क्या किया जा सकता है? निचे दिए गए बक्से में अपने विचार लिखें.

मैं केवल श्री चैतन्य महाप्रभु का संदेशवाहक हूँ....

इसके साथ-साथ मैं आपकों धन्यवाद कहना चाहूँगा मेरे प्रवचनों, पत्रों एवं पुस्तकों कि प्रशंसा करने के लिए| यह मेरे शब्द नहीं हैं क्योंकि मैंने बार-बार बिना जोड़े अथवा घटाए हुएश्री चैतन्य महाप्रभु के सन्देश को आपतक परम्परानुसार पहुँचाया है| इसी प्रकार, अगर आप इन शब्दों को आगे बढ़ायेंगे तब यह आलौकिक परंपरा ज्यों-कि-त्यों बनी रहेगी और आम जनता को अत्यंत लाभ होगा|

भगवान को लिखे पात्र से-

लोस अन्जेलेस

१० जनवरी, १९७०

पाठ ४ इस्कॉन के गुरु

पाठ के विषय

शिष्य के गुण
एक इस्कॉन गुरु का व्यव्हार(रवैया)
गुरु एवं इस्कॉन अधिकारिओं के निर्देश
इस्कॉन के बहार के गुरु

शिष्य के गुण

शिष्य के कुछ गुणों को सूचीबद्ध करें.

इस्कॉन गुरु का मनोभाव

आपके अनुसार सामान्य रूप से एक इस्कॉन गुरु को उपयुक्त मनोभावनिम्नलिखित के सम्बन्ध में क्या होना चाहिए:

- श्रील प्रभुपादकी शिक्षाएं
- इस्कॉन के अंतर्गत प्राधिकारिक-संरचना?

अपने विचार लिखें...

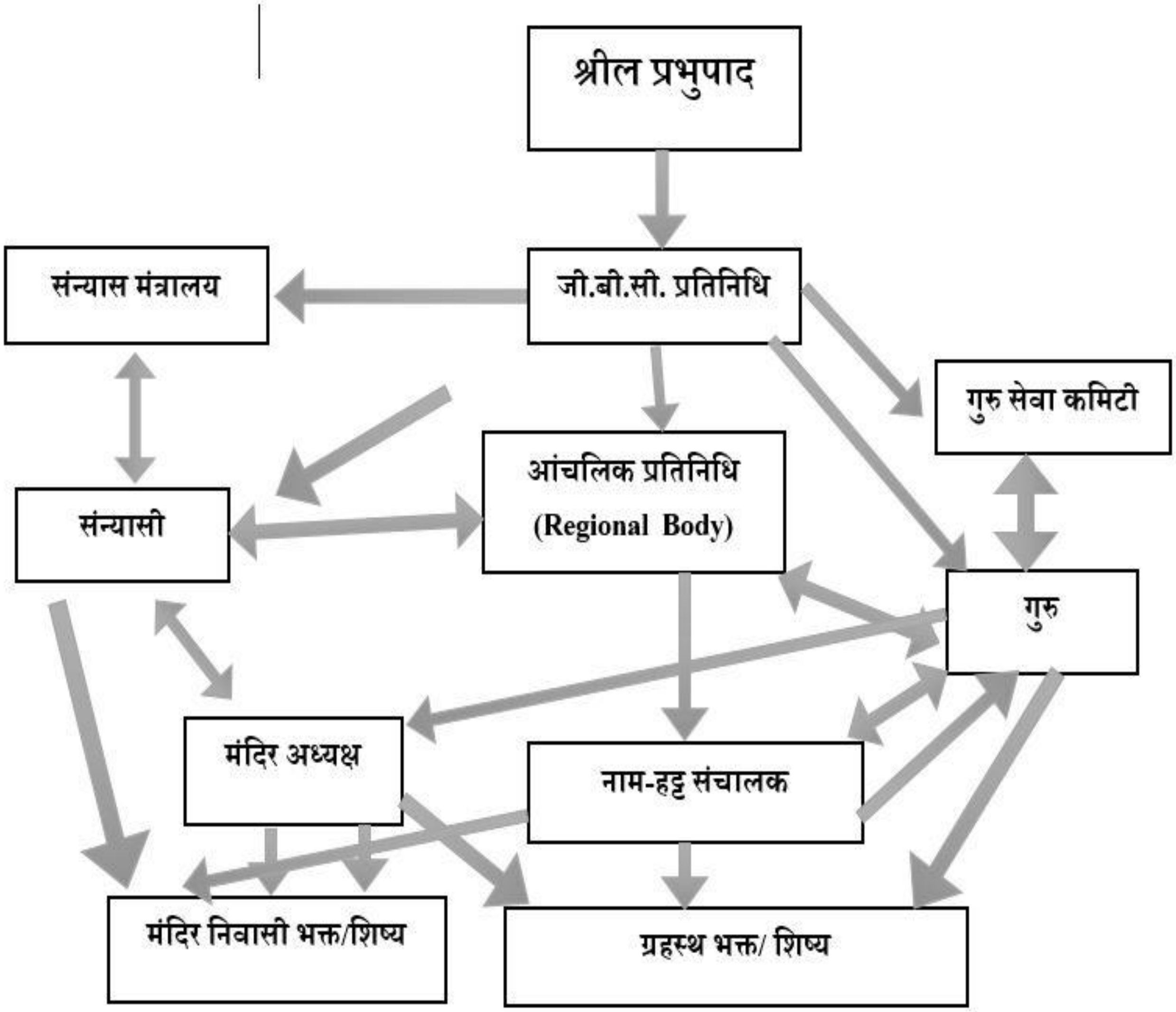

उपरोक्त चार्ट केवल शिक्षण हेतु है शासनादेश नहीं है यह केवल शैक्षणिक उद्देश्य हेतु ही है| यह प्रदर्शित करता है कि किस प्रकार सभी इस्कॉन के सदयों को श्रील प्रभुपाद एवं जी.बी.सी. के निर्देशानुसार सेवा कर सकते हैं| और, इस्कॉन में अनेक प्राधिकार है जिनकी हमें सेवा और सम्मान करना है|

गुरु एवं इस्कॉन के प्राधिकारियों के उपदेश

सामूहिक गतिविधि:

निम्नलिखित प्रदर्शित करते हुए एक नाट्य प्रस्तुत करें:

एक अनुपयुक्त व्यव्हार उस परिस्थिति में जब मंदिर प्राधिकरण के उपदेश भक्त के गुरु के उपदेशों से भिन्न होते हैं|

एकउपयुक्तव्यव्हार उस परिस्थिति में जब मंदिर प्राधिकरण के उपदेश भक्त के गुरु के उपदेशों से भिन्न होते हैं|

नीचे दिया गया स्थान नाट्य की तैयारी करने में उपयोग करें

इस्कॉन के बाहर के गुरु

इस्कॉन के अंतर्गत शिक्षा एवं दीक्षा गुरु स्वीकारने के कुछ लाभों को नीचे दिए कोष्टक में क्रमबद्ध करें|

इस्कॉन गुरु का व्यव्हार

श्रील प्रभुपाद एवं गुरु परम्परा की सेवा

जो व्यक्ति इस्कॉन में शिक्षा एवं दीक्षा गुरु के रूप में सेवा कर रहे हैं उन्हें चाहिए कि वे श्रील प्रभुपाद कि शिक्षाओं को ओने वचन एवं व्यव्हार द्वारा सिखाने में पारंगत हों. शिक्षा गुरु श्रील प्रभुपद एवं परंपरा की ओर से आध्यात्मिक निर्देश एवं प्रेरणा प्रदान करते हैं. दीक्षा गुरु आध्यात्मिक निर्देश, प्रेरणा, वास्तविक दीक्षा, एक आध्यात्मिक नाम प्रदान करते हैं एवंइसके उपरांत ब्राह्मण दीक्षा प्रदान कर शिष्य को श्रील प्रभुपाद एवं गुरु परंपरा का योग्य सेवक बनाते है.

३०३, श्रील प्रभुपाद के स्थान पर जी.बी.सी. का कथन(मार्च २०१३)

भक्तिसिद्धांत सरस्वती ठाकुर की प्रशासनिक कमिटी

अपने देह-त्याग के समय श्रील भक्ति सिद्धांत सरस्वती ठाकुर ने अपने सभी शिष्यों से अनुरोध किया था कि वे सभी प्रचार कार्य सहयोगपूर्वक जारी रखने के लिए एक प्रशासनिक कमिटी का गठन करें| उन्होंने किसी एक भक्त को आचार्यबंनने का आदेश नहीं दिया| परन्तु उनके मरणोपरांत उनके सहायकों ने अधिकारहीन होते हुए दो समूह बना लिए, आचार्य का पद हड़पने के लिए. दोनों ही गुट असार थे, वे अधिकारहीन थे, अपने गुरु कि अवज्ञा करने के कारण|

श्री चैतन्य चरितामृत आदि लीला १२.८

इस्कॉन के गुरु एवं अधिकारीयों के निर्देश

श्रील प्रभुपाद का अनुसरण परन्तु जी.बी.सी. कानहीं...

“जब वे कहते हैं कि वे इस्कॉन एवं जी.बी.सी. को नापसंद करते हैं वास्तव में यह कहते हैं कि वे मेरा अनुसरण नहीं करना चाहते| वे मेरी आज्ञा को नापसंद करते हैं| इसका अर्थ है कि उन्हें मेरी आज्ञा पर विश्वास नहीं है| यह गुरु-अपराध है| यह कहना कि उन्हें मुझपर श्रद्धा है केवल एक ढोंग है|”

फरवरी ८, १९७५,
इस्कॉन होनुलुलू,
हवाई
लीलामृत से- सत्स्वरूपदास गोस्वामी द्वारा लिखित

इस्कॉन के बहार के गुरु

परंपरा के बहार किसी का श्रवण न करें

अच्छा है कि आप अधिकार प्राप्त व्यक्तियों का श्रवण करिएँ, जेसे आपके आध्यात्मिक गुरु अथवा अनुभवी गुरुभाई. परन्तु परंपरा क्रम के बहार के व्यक्ति का श्रवण कभी ना करें. यह समय कि बर्बादी है और पुनः हमें अपने उल्लू सीधा करना होगा.

हम्स्दूत को लिखे पत्र से
हैम्बर्ग
५ सितंबर, १९६९

कृपया उनसे दूर रहे

“मैं आपके ३/९/१९७५ का दिनांकित पत्र के सम्बन्ध मैं लिखा रहा हूँ जिसमे आपने बॉन महाराज को कथित किया है| इसीलिए मैंने आदेश जारी किये है कि मेरे सभी शिष्य मेरे गुरुभाइयो से दूर रहें| उनके साथ कोई लेन-देन एवं पत्राचार न करें, न उन्हें कोई पुस्तकेंदें अथवा उनकी कोई पुस्तक लें, न ही आपको उनके किसी मंदिर में जाना चाहिए| कृपया उनसे दूर रहें|”

विश्वकर्म को लिखे पत्र से
बॉम्बे ९ नवम्बर,१९७५

“उन्हें प्रसाद दें, उनका एक वरिष्ठ वैष्णव की तरह आदर करें, परन्तु वे प्रवचन नहीं कर सकते...”

सभी वैष्णव अधिकारी कृष्ण भावनामृत का प्रचार कर सकते हैं परन्तु अधिकार के भी चरण होते हैं| मोटे-तौर पर अगर इन बॉन महाराज का उद्देश्य मुझे दबाना ही है तो वेह यहाँ क्यों आये हैं, हम उनका स्वागत कैसे कर सकते हैं? वे पहले ही एक प्राफेसर को गलत धारणा दे चुके हैं वे अतिथि कि तरह समझे जा सकते हैं, जब वे हमारे मंदिर में आयें, उन्हें प्रसाद देवें, एक वरिष्ठ वैष्णव की तरह सम्मानित करें, परन्तु वे प्रवचन नहीं कर सकते| अगर वे आपसे अनुरोध करते हैं, आप केवल उन्हें यह बताएं कि पहले ही एक प्रवक्ता निर्धारित हैं|

सत्स्वरूप को लिखे पत्र से
होनुलुलू ४ जून,१९७५

जी.बी.सी.

"अंतिम सञ्चालन अधिकार सम्पूर्ण कृष्ण भावनामृत संघ के, गवेर्निंग बॉडी कमीशन (जी.बी.सी.) के होंगे|"

श्रील प्रभुपाद कीवसीयत, जून १९७७

गौड़ीय मिशन अपने प्रचार कार्य में असफल है...

आपको इस प्रचार कार्य में निरंतर लगा रहना होगा| इस सिद्धांत का पालन करने के कारण गौडीय मैथ का प्रचार कार्य असफल हो गया| उन्हें एक मठ के नाम पर तनिक-सा आश्रय मिलता और वे पहुँच जाते एक दर्जन शिष्य लकर और कहाँ हरे कृष्ण भजन करते, यहदिखानेने के लिए कि वे कितने बड़े किर्तानिया हैं| और आपका प्रचार क्या है?... इसीलिए मेरे गुरु महाराज ने इस प्रचालन की भर्त्सना की|*मन तुमि किसर वैष्णव: 'तुम कैसे वैष्णव हो?' प्रतिष्ठार तारे निर्जने घरे: 'और केवल तुच्छ प्रसिद्धि के लिए, अरे वे वैष्णव* हैं| वे जप कर रहे हैं| अच्छा.'... कोई तकलीफ नहीं, क्योंकि कोई प्रचार नहीं इसीलिए कोई परेशानी भी नहीं| आप बैठकर लोगों को दिखा सकते हैं,'मैं एक मुक्त जीव हूँ' और जप करें| यह केवल शयन है| इस प्रकार की क्रियाएँ मेरे गुरु महाराज द्वारा प्रतिबंधितकी गई हैं|*प्रतिष्ठा तारे निर्जन घरे तवा हरिनाम केवल*| यह केवल ठगी है| इस प्रकार के कार्य वर्जित हैं| वे देखना चाहते थे कि सभी व्यक्ति प्रचार कार्य में लगे रहें|

श्रीमद भागवतम ६.३.१८ गोरखपुर,
फरवरी ११, १९७१

जी.बी.सी के अधिकार श्रील प्रभुपाद का आदेश है

वैष्णव सिद्धांत के अनुसार गुरु की आवश्यक योग्यता है कि वह अपने गुरु की आज्ञा का सख्ती से पालन करें| वह सदैव सेवक रहता, कभी गुरु बनने का प्रयत्न नहीं करता| इसी प्रकार इस्कॉन में गुरु बनने के किये श्रील प्रभुपाद के आदेशों का सख्ती से पालन करना आवश्यक है जिन्होंने सभी भक्तों को सहयोगपूर्वक जी.बी.सी के निर्देशानुसार कार्य करें| जी.बी.सी. के अधिकार को स्वीकारना सबही के लिए निवार्य है क्योंकि यह श्रील प्रभुपाद का आदेश है, यह गुरुत्व के लिए भी आवश्यक है|

गुरु रिफार्म----
रविन्द्र स्वरूप दास---
इस्कॉन कम्युनिकेशंस पत्र क्र. २.१

शिष्य को सपने गुरु के आदेशों का पालन डटकर करना चाहिए|

श्रील भक्तिसिद्धांत सरस्वती गोस्वामी महाराज इस सन्दर्भ में कहते हैं "एक शिष्य अपने जीवन के लक्ष्य में पूर्ण रूप से सफल हो सकता है अगर वेह अपने गुरु के मुख मंडल से निकले निर्देश का सख्ती से पालन करे|" यह श्रोत-वाक्य कहलाता है जो इंकित करता है कि शिष्य को गुरु के निर्देशों का अडिग होकर पालन करें| श्रील विश्वनाथ चक्रवर्ती ठाकुर इस सम्बन्ध में टिपण्णी करते हुए कहते हैं कि एक शिष्य को अपने गुरु कि निर्देश को अपनी आत्मा व जीवन मानना चाहिए|

श्री चैतन्य चरितामृत आदि ७.७२

श्रील प्रभुपाद का आज्ञा पालन परन्तु उनकी जी.बी.सी का नहीं...

एक और वाकया हुआ श्रील प्रभ्पाद के कक्ष में, उन भक्तों के साथ जो श्रील प्रभुपाद का अनुसरण करने को तैयार थे परन्तु जी.बी.सी के प्रतिनिधि का नहीं, न ही उनके इस्कॉनका.... यह भक्त इस्कॉन हवाई के प्रतिनिधि थे परन्तु इस्कॉनछोड़कर चले गए थे और स्वयं के नाम से अर्थ व संपत्ति का उपयोग करेने कि धमकी दे रहे थे| श्रील प्रभुपाद उनसे पूछते रहे आप क्यों चले गए? आप रहते क्यों नहीं? आप शरणागत क्यों नहीं होते? परन्तु वे भक्त कहते रहे किवे श्रील प्रभुपाद पर विश्वास करते थे प्रांत जी.बी.सी पर नहीं|

उन भक्तों का प्रभुपाद का साधारण से शरणागत होने के आवेदन को आस्विकर करते देख एक जी.बी.सी सदस्य तंग होकर कहते हैं... "आप कहते हैं कि आप प्रभुपाद को स्वीकार करते हैं?"

"हाँ," उन्होंने कहा|

"और आप कहते हैं आपको उनपर विश्वास है?"

"हाँ"

"आप कहते हैं कि प्रभुपाद जो भी कहेंगे आप पालन करेंगे?"

"जी हाँ"

"फिर अगर प्रभुपाद आपक जी.बी.सी का अनुसरण करने को कहेंगे तो आप करेंगे?" पूरा कक्ष शांत एवं गंभीर हो गया|

"नहीं, हम नहीं कर सकते"

जैसे ही उन्होंने न कहा, श्रील प्रभुपाद ने अपना हाथ मेज़ पर मारा और पतित भक्तों कि ओर इशारा करते हुए कहा, "देखिये इनका ढोंग!"

प्रभुपाद के कठोर निर्णय के बाद भी उन्होंने अपने "प्रभुपाद हाँ-जी.बी.सी. ना" की विचारधारा जारी रखी जबतक प्रभुपाद ने उन्हें जाने को नहीं कहा| कक्ष में बचे बाकी भक्तों से श्रील प्रभुपाद ने कहा,

“जब वे कहते हैं कि वे इस्कॉन एवं जी.बी.सी. को नापसंद करते हैं वास्तव में यह कहते हैं कि वे मेरा अनुसरण नहीं करना चाहते| वे मेरी आज्ञा को नापसंद करते हैं| इसका अर्थ है कि उन्हें मेरी आज्ञा मैं विश्वास नहीं है| यह गुरु-अपराध है| यह कहना कि उन्हें मुझपर श्रद्धा है केवल एक ढोंग है|”

८ फरवरी १९७५,
होनुलुलू,
श्रील प्रभुपाद लीलामृत से,
सत्स्वरूप दास गोस्वामी द्वरा लिखित

एक शिष्य को अपने गुरु के सामने नासमझ ही बने रहना चाहिए...

चैतन्य महाप्रभु शिष्य के सर्वश्रेष्ठ उदहारण प्रस्तुत करते हैं| एक आध्यात्मिक गुरु यह बहुत अच्छी तरह जानते हैं कि किस प्रकार शिष्यों में सेवा बांटी जाये, परन्तु अगर एक शिष्य यह मान बैठता हैं कि वह अपने गुरु से अधिक उन्नत है और अपने गुरु की अवज्ञा कर स्वतन्त्र रूप से कार्य करता है तब वह स्वयं का आध्यात्मिक विकास बाधित कर लेता है| प्रत्येक शिष्य को कृष्ण-विज्ञान के सम्बन्ध में स्वयं को अज्ञानी मन जाना चाहिए और श्री गुरुकी आज्ञा पालन करने के लिए सदैव तत्पर रहना चाहिए जिससे कृष्ण भावनामृत का विकास हो सके. एक शिष्य को अपने गुरु के समक्ष अज्ञानी बनकर रहना चाहिए...

श्री चैतन्य चरितामृत आदि लीला ७.७२

एक समझदार व्यक्ति को इस प्रकार कार्य करना चाहिए, सही व गलत का भेद समझते हुए...

इसीलिए हमें इस प्रकार से जीवन यापन करना चाहिए कि हम बौधिक एवं मानसिक रूप से स्वस्थ रहे एवं कठिनाइयों एवं दुखों भरे जीवन से अपने लक्ष्य का भेद कर सकें| एक समझदार व्यक्तियों को इस प्रकार आचरण करना चाहिए, सही व गलत का भेद समझते हुए, और इसी प्रकार जीवन कि लक्ष्य प्राप्ति होगी|

श्रीमद भागवतं ७.६.५ तात्पर्य

इकाई दो:

गुरु के साथ सम्बन्ध स्थापित करना

पाठ ५--- गुरु पदाश्रय

प्रभुपादाश्रय

शिक्षा/दीक्षा गुरु-पदाश्रय एवं प्रभुपादाश्रय

पाठ ६---- गुरु का चयन

प्रमाणिक गुरु की योग्यताएं

गुरु का चयन

पाठ ७ दीक्षा की प्रतिज्ञाएँ

प्रतिज्ञा का सख्ती से पालन

प्रतिज्ञा पालन में आने वाली कठिनाइयाँ

कठिनाइयों के समाधान

संशोधन के चरण

पाठ ५ गुरु-पदाश्रय

पाठ के विषय

प्रभुपादाश्रय
दीक्षा/शिक्षा गुरु-पदाश्रय

प्रभुपादाश्रय सम्बंधित निर्देश

कुछ ऐसे तरीके सूचीबद्ध करें जिनके द्वारा आप श्रील प्रभुपद के साथ, अपने आध्यात्मिक जीवन के

आरम्भ में ही एक गहन सम्बन्ध स्थापित कर सकते हैं|

श्रीलप्रभुपाद का प्रत्येक इस्कॉन भक्त के साथ अनोखा सम्बन्ध है

अंतर्राष्ट्रीय कृष्ण भावनामृत संघ का संस्थापकाचार्य, पूर्व प्रतिष्ठित शिक्षा गुरु एवंसर्वोच्च प्राधिकारी होने के कारण, श्रील प्रभुपाद का प्रत्येक इस्कॉन भक्त के साथ अनोखा सम्बन्ध है|

३०३, श्रील प्रभुपाद के स्थान पर जी.बी.सी का कथन(मार्च २०१३)

नए सदस्यों को श्रील प्रभुपाद का आश्रय लेने के लिए निर्देशित करें

इस्कॉन के भक्त नए सदस्यों को श्रील प्रभुपाद का आश्रय लेने के लिए निर्देशित करेंगे एवं जो भक्त उन्हें कृष्ण भावनामृत में निर्देशित कर रहे हें वे नए सदस्यों को मार्गदर्शन, शिक्षा एवं सहायता प्रदान करेंगे|इस्कॉन के सदय स्वयं चुन सकते हैं के वे किससे दीक्षित होना चाहते हैं| उनका ध्यान श्रील प्रभुपाद स्थित इस विचार पर होना चाहिए कि श्रील प्रभुपाद इस्कॉन के संस्थापकाचार्यएवंपूर्व-प्रतिष्ठितशिक्षा गुरु हैं|

इस्कॉन लॉ ७.२.१ प्रर्थम(हरिनाम) दीक्षा

कम से कमश्रील प्रभुपाद के प्रणाम मन्त्र का पहला भाग पढना चाहिए

अपने दीक्षा गुरु के प्रणाम मन्त्र पढने के बाद, प्रभुपादकेशिष्यों के सभी शिष्य एवं आने वाली पीढ़ी के भक्त कमसेकम श्रील प्रभुपाद के प्रणाम मन्त्र का पहला भाग प्रणाम करते समय पढ़े, संस्थापकाचार्य के प्रति आदर प्रदर्शित करने के लिए|

इस्कॉनलॉ ७.२.१ प्रथम(हरिनाम) दीक्षा

दीक्षा/शिक्षा गुरु-पादश्रय एवं प्रभुपादाश्रय

दीक्षा/शिक्षा गुरु-पादश्रय एवं प्रभुपादाश्रय में क्या संबंध है?

इस्कॉन में गुरु-पादश्रय

इस्कॉन में एक शिष्य को तीन आश्रय स्वीकारने चाहिए:

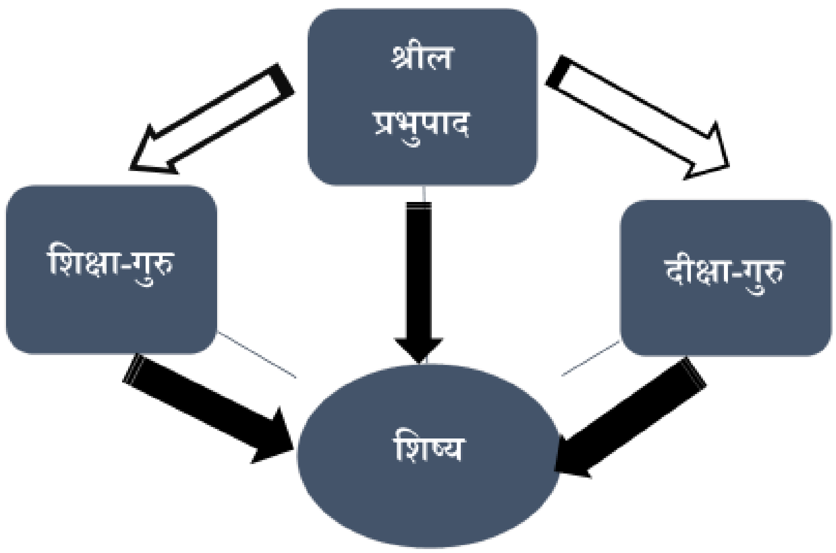

शिक्षा-गुरु दीक्षा गुरु की शिक्षाओं के विरुद्ध कुछ नहीं कह रहे हैं...

दीक्षा गुरु सदैव उपस्थित नहीं रहते| इसीलिए एक व्यक्ति एक वरिष्ठ भक्त से शिक्षा एवं उपदेश प्राप्त कर सकता है| यह शिक्षा गुरु कहलाते हैं| शिक्षा गुरु का अर्थ यहनहीं कि वे दीक्षा गुरु के विरुद्ध शिक्षा दें| तब वह शिक्षा गुरु नहीं असुर हैं|

भगवद गीता १७.१-३ के प्रवचन से

होनुलुलू, जुलाई ४, १९७४

एक भक्त का भगवान की विभिन्न माध्यमों से कृपा प्राप्त करने से उद्धार होता है...

अंततः श्रीकृष्ण की कृपा से ही भक्त का उद्धार होता है जो विभिन्न माध्यमों से उसे प्राप्त होतीं हैं| इसमें आते है चैत्य गुरु, श्रील प्रभुपाद, गुरु परंपरा, एक दीक्षा गुरु, अन्य शिक्षा गुरु, हरिनाम, शास्त्र एवं भक्ति के नौ अंग, औरभगवान की कृपा इन सभी तक भी सीमित नहीं रहती|

श्रील प्रभुपाद प्रत्येक इस्कॉन सदस्य के लिए पूर्व-प्रतिष्ठित शिक्षा गुरु हैं|

इन सहयोगी तत्वों के अंतर्गत श्रील प्रभुपाद इस्कॉनके संस्थापकचार्य होने के कारण लिए पूर्व-प्रतिष्ठित शिक्षा गुरु हैं|इस्कॉन के सदस्य, सभी पीढ़ियों के, प्रभुपाद का आश्रय लेने के लिए प्रोत्साहित किये जाते हैं| इसके साथ-साथ प्रभुपाद की पुस्तकों ,शिक्षाओं, सेवा एवं उनकी इसकों सोसाइटी का भी|

३०३, श्रील प्रभुपाद के स्थान पर जी.बी.सी का कथन(मार्च २०१३)

पाठ ६ गुरु का चयन

पाठ के विषय

प्रमाणिक गुरु की योग्यताएं
गरु का चयन

आप गुरु में क्या ढूंढ रहे हैं?

प्रमाणिक गुरु की योग्यताएं

प्रमाणिक गुरु की योग्यताएं क्या हैं? चर्चा से नोट्स बनाये और निचे लिखें|

प्रमाणिक गुरु की योग्यताएं

वाचो वेगं मनसः क्रोध् वेगं जिह्वा वेगं उदरोपस्थवेगं|
एतान् वेगान् यो विषहेत धीरः सर्वां अपीमां पृथ्वीं स शिष्यात्||

एक भद्र व्यक्ति बोलने के वेग, मन के वेग, क्रोध के वेग एवं जिव्हा के वेग, उदर एवं जनेंद्रियों के वेग को नियंत्रित कर सकता है वह सम्पूर्ण विश्व में शिष्य बना सकता हैं|

उपदेशामृत श्लोक १

दो योग्यताएं...

तद्विज्ञानार्थं सगुरुंएवाभिगच्छेत्
समित्पाणीः श्रोत्रियं ब्रह्म निष्ठं

"इन विषयों को सही प्रकार समझने के लिए, एक व्यक्ति को विनम्रता-पूर्वक, हाथ में एक लकड़ी लेकर एक ऐसे गुरु के पास जाना चाहिए जो वेदों में पारंगत है और परम सत्य में दृढ़ता पूर्वक स्थित है|"

मुण्डक उपनिषद् १.२.१२

एक प्रमाणिक गुरु कोई भी बनावटी ज्ञान नहीं बताते,उनका ज्ञान परम्परा प्राप्त होता है| वह भागवतसेवा में दृढ़ता पूर्वक स्थित होते हैं (ब्रम्ह निष्ठं)|यह हैं गुरु की दो योग्यताएं, पहली कि उन्होंने वेदज्ञान गुरु-शिष्य परंपरा में प्राप्त किया हो और दूसरी कि वे भक्ति में दृढ़ रूप से स्थित हों| उन्हें बड़ा विद्वान होना आवश्यक नहीं केवल उन्होंने उपयुक्त प्राधिकारी का श्रवण किया हो|

भगवान कपिल का शिक्षामृत, श्लोक ४, अध्याय ४

गुरु का चयन

निचे सूचीबद्ध करें, उरु चुननें के अनोप्युक्त कारण.

गुरु के चयन करने के चरण

निम्नलिखित दीक्षा की ओर बढ़ने के चरण हैं, इस्कॉन लॉ पर आधारित|इस्कॉन लॉ पेज ७० परिशिष्ठ ४ में अंकित हैं,

एक साल का प्रशिक्षण

भक्तिमय सेवा में सकारात्मक रूप से कार्यरत होना

४ नियमों का सख्ती से पालन करना

प्रतिदिन १६ माला करना

पूर्ण प्रातः-कालीन कार्यक्रम भाग लेना(मंदिर में रहने वालों के लिए)

घर अथवा नाम-हट्ट में प्रातः-कालीन कार्यक्रम में भाग लेना(बाहर रहने वालों के लिए)

प्रभुपदाश्रय

प्रभुपाद के पूर्व-प्रतिष्ठित शिक्षा गुरु होने पर ध्यान करना

प्रभुपाद का प्रणाम मन्त्र करना प्रणाम करते हुए

इस्कॉन के आध्यात्मिक अधिकारीयों से मार्गदर्शित होना.

दीक्षा एवं शिक्षा गुरु पादाश्रय

उपरोक्त नियमों का छः महीनो तक पालन करने के पश्च्यात एक सदस्य इस्कॉन के एक अधिकारिक दीक्षा गुरु को चुनकर उससे दीक्षा प्राप्त करे, अपने स्थापित शिक्षा गुरुओं से स्मरण रहे कि छः महीने न्यूनतम काल है, व्यक्ति जितना चाहे उतना समय ले सकता है गुरु-चुनाव के लिए.

भक्तों का यह दायित्व है कि वे अपने बुद्धि का उपयोग कर गुरु चुनें.

इस्कॉन अधिकारी द्वारा आयोजित लिखित परीक्षा देवें.

इस्कॉन अधिकारी से शिफारिश-पत्र प्राप्त करें

चुन हुए गुरु से अनुमति लें

गुरु के आराधना आरम्भ करें एवं उनका प्रणाम मन्त्र पढ़ें (उसके बाद प्रभुपाद का कमसेकम पहला प्रणाम मन्त्र पढ़ें)

दीक्षा एवं उपदेशप्राप्त होने के बाद, एक व्यक्ति अपने स्थापित शिक्षा गुरुओं के द्वारा उपदेशितहोता रहता है|

गुरु एवं निकटम अधिकारीयों से संपर्क करें यदि भक्त किसी और इस्कॉन गुरु से दीक्षा लेना चाहता है|

हरिनाम दीक्षा

कमसेकम छः महीनों के बाद एक भक्त वैष्णव दीक्षा ले सकता है|

गुरु के लिए भक्त को दीक्षा देना अनिवार्य नहीं है|

दीक्षा उपरांत दीक्षा गुरु के आदेशानुसार शिक्षा-गुरु स्वीकारने चाहिए|

व्यक्तिगत व्यव्हार एवं प्रचार

आचार प्रचार नामेर करह दुई कार्य

तुमि सर्व गुरु तुमि जगतेर आर्य

“आप हरिनाम से सम्बंधित दोनों दैयित्व साथ-साथ निभाएं अपने आचार एवं प्रचार केद्वारा| इसीलिए आप समस्त जगत के आध्यात्मिक गुरु हैं, क्योंकि आप सबसे बड़े भक्त हैं|”

तात्पर्य: सनातन गोस्वामी स्पष्ट रूप से पूरे विश्व के प्रमाणिक गुरु की परिभाषा दे दी| दो योग्यताएं बताई है जो शास्त्रानुसार आचरण एवं प्रचार हैं| जो यह करता है वही प्रमाणिक गुरु है.

श्री चैतन्य चरितामृत अन्त्य ४.१०३

किसी भी आश्रम से

किबा विप्र किबा न्यासी शुद्र केने नय
येई कृष्ण-तत्व-वेत्त, सई गुरु हय

यदि किसी को कृष्ण विज्ञान प्राप्त है तब वह आध्यात्मिक गुरु बन सकता है, चाहे वह ब्राह्मण हो, संन्यासी हो अथवा शुद्र हो|

श्री चैतन्य चरितामृत मध्य लीला ८.१२८

आप सभी आध्यात्मिक गुरु बनें

अमार अज्ञाय गुरु हया तार एई देश
यारे देखा, तारे कह कृष्ण उपदेश

श्री चैतन्य चरितामृत, मध्य ७.१२८

भगवान श्रीचैतन्य महाप्रभुकहते हैं कि आप सब आध्यात्मिक-गुरु बनिए, सभी|एक दो क्यों? आप सभी. “अरे गुरु बनना कठिन है!” नहीं| कोई कठिन कार्य नहीं|*अमार अज्ञाय*|”केवल मेरी आज्ञा का पालन करें| बस, तब आप आध्यात्मिक गुरु बन जाते हैं|”

भगवद-गीता ४.१-२--- कोलंबस, मई ९,१९६९

“मेरी आज्ञा पर|” यह महत्वपूर्ण बिंदु है|

सभी आध्यात्मिक गुरु केसे बनें? गुरु को पर्याप्त ज्ञान एवं अन्य योग्यताएं होनी चाहिए. नहीं| योग्यताओं के बिना भी, आध्यात्मिक गुरु बन सकता है| केसे? विधानुसार, श्री चैतन्य महाप्रभु कहते हैं, “अमार अज्ञाय”: “मेरी आज्ञा पर|”यह महत्वपुर्ण बिंदु है, कोई व्यक्ति अपने मर्ज़ी से आध्यात्मिक गुरु नहीं बन जाता| वह आध्यात्मिक गुरु नहीं है| उसे उच्च अधिकारी से आज्ञा प्राप्त होनी चाहिए| तब वह आध्यात्मिक गुरु होता है| “आमार अज्ञाय|” हमारी तरह| हमारे उच्च प्राधिकरण, हमारे आध्यात्मिक गुरु, उन्होंने मुझे निर्देशित किया कि आप इस ग्रन्थ का प्रचार करें, जो भी आपने मुझसे सीखा है, अंग्रेजी में|” इसीलिए हमने कोशिश कि है| बस, ऐसा नहीं कि मैं बहुत योग्य हूँ| एकमात्र योग्यता है कि मैंने अपने वरिष्ठ अधिकारी की आज्ञा का पालन करने का प्रयास किया है| यह सफलता का रहस्य है|

भगवद गीता २.२, लन्दन अगस्त ३, १९७३

हमें अचानक कट्टरवाद के बल पर गुरु नहीं चुन लेना चाहिए. यह बहुत खतरनाक है|

शास्त्रानुसार, हमें गुरु चुनने से पहले उनका सूक्ष्म विश्लेषण करते हुए यह पता लगाना चाहिए कि हम उनके प्रति शरणागत हो सकते हैं या नहीं? हमें कट्टर होकर गुरु नहीं बना लेना चाहिए| यह बहुत खतरनाक है| गुरु को भी शिष्य का आंकलन करके यह जानना चाहिए कि वह दीक्षित करने लायक है या नहीं| इस प्रकार से गुरु और शिष्य के बीच सम्बन्ध स्थापित होता है...

आत्म साक्षात्कार का विज्ञान २अ: गुरु कौन है

कमसेकम एक साल तकगोष्ठी करें

सनातन गोस्वामी द्वारा रचित हरी-भक्ति-विलास के अनुसार गुरु एक शिष्य को एक वर्ष तक गोष्टी करनी चाहिए, इससे शिष्य को यह ज्ञात हो जायेगा कि “यहाँ एक व्यक्ति हैं जिन्हें मैं गुरु स्वीकार कर सकता हूँ|” और गुरु भी यह जान पाएं कि “यहाँ एक छात्र है मेरे शिष्य बनने लायक|” इस प्रकार सम्बन्ध मधुर होते हैं|

श्रीमद भागवतम १.१६.२५ के प्रवचन से---हवाई, जनवरी २१, १९७४

कमसे कम एक वर्ष उनसे श्रवण करें

इसीलिए सही विधि है कि दीक्षा लेने से पहले एक वर्ष उनका श्रवण करे| और जब वे आश्वस्त हो जाये कि “यही वे गुरु हैं जो मुझे शिक्षा दे सकते हैं,” तब आप गुरु स्वीकारें| अपनी सनक से नहीं|

श्रीमद भागवतम १.१६.२५ के प्रवचन से---हवाई, जनवरी २१, १९७४

किसी को गुरु त्याग की विपदा अपने ऊपर नहीं लानी चाहिए

गुरु एवं शिष्य दोनों को एक दुसरे को स्वीकारने से पहले अच्छी तरह परख लेना चाहिए जैसा कि शास्त्रों में वर्णन है...क्योंकि आजकल साधारण उपयोग की वस्तुएं भी जाँच परख कर ली जाती हैं, केवल एक अभागा नासमझ ही वास्तविक गुरु चयन के परीक्षा काल से नहीं गुजरेगा| गुरु, जोसभीजीवों के सुहृद अर्थात सच्चे मित्र हैं... वास्तविक बिंदु यह है कि व्यक्ति को गुरु त्याग की विअपदा कभी भी अपने ऊपर नहीं लानी चाहिए| अगरव्यक्ति बुद्धिमान है तब वह ऐसे स्थिति से बच सकता है|

हरिनाम चिंतामणी ६

सामाजिक धारणाओं पर गुरु नहीं स्वीकारना चाहिए...

यह अत्यावश्यक है कि एक गंभीर छात्र शास्त्रानुसार गुरु का चयन करे| जीव गोस्वामी के अनुसार सुझाते हैं कि किसी को गुरु वन्शानुसार अथवा सामाजिक धारणाओं के आधार पर दीक्षा नहीं लेनी चाहिए| एक व्यक्ति को एक प्रमाणिक गुरु ढूंढना चाहए वास्तविक आध्यात्मिक प्रगति के लिए|

चैतन्य चरितामृत अदि लीला १.३५, तात्पर्य

अपनी बुद्धि इस्तेमाल करते हुए सही प्रकार से गुरु चुनें...

एक छात्र का यह निजी दायित्व है कि अपनी बुद्धि लगाकर एक भक्त को अपनाआध्यात्मिक गुरु चुने| एक भक्ति कि अपने शिष्य को भागवत-धाम ले जाने कि क्षमता के प्रति परिपक्व एवं सुदृढ़ श्रद्धा होने के बाद ही उनसे दीक्षा स्वीकारनी चाहिए| एक भक्त का आध्यात्मिक विकास का पता लगाने के लिए साधू, शास्त्रएवं गुरु उपयुक्त मायिने हैं|इस्कॉन के आधिकारिक गुरु होने की सहमती का अर्थ है कि उस भक्त ने सफलता पूर्वक इस्कॉन लॉ द्वारा रचित प्राधिकृत विधि को पूर्ण कर लिया है, और वरिष्ठ भक्तों द्वारा निर्धित| नियमों एवं निर्देशों के आधार पर खरा उतरा है| फिर भी इस प्रकार कि सहमती भागवत-साक्षात्कार का प्रमाण नहीं मानी जानी चाहिए, और यह दीक्षा-इच्छुक छात्र की बुद्धि को प्रतिस्थापित करने के लिए नहीं है|

इस्कॉन लॉ ७.२, छात्र का दीक्षा-दायित्व

अतिरिख्त कथन   पाठ ६   गुरु का चयन

प्रमाणिक गुरु की योग्यताएं

तस्माद्गुरुं प्रपद्येत जिज्ञासुः श्रेय उत्तमं

शाब्दे परे च निष्णातं ब्रह्मण्यउपशमाश्रयं

इसीलिए अगर किसी व्यक्ति को वास्तविक आनंद की प्राप्ति करनी है तब वह एक प्रमाणिक गुरु खोजकर उससे दीक्षा ले औरउनके प्रति शरणागत हो| गुरु की योग्यता है कि वह विवेचना द्वारा शास्त्रों के निष्कर्षों का साक्षात्कार कर चूका है एवं और लोगों को इन साक्षात्कारों कि प्रति आश्वस्त कर सकता है| ये महाजन जिन्होंने समस्त भौतिक चिंताओं से दूर होकर परम परमेश्वर भगवान कि शरण ग्रहण की है, एक प्रमाणिक गुरु मने जाने चाहिए|

श्रीमद भागवतम ११.३.२१

गुरु का चयन

एक शिष्य को एक उत्तम अधिकारी को आध्यात्मिक गुरु के रूप में चुनने के प्रति सावधान रहना चाहिए|

जब एक व्यक्ति लो अपने श्री कृष्ण के नित्य सेवक होने का साक्षात्कार हो जाता है तब वह कृष्ण-सेवा छोड़ अन्य सभी क्रियाओं में रूचि खो देता है| वह सदैव कृष्ण का चिंतन करता है और हरीनाम के प्रचार करने के उपाय ढूंढता रहता है, वह समझता है कि उसका एक मात्र कार्य सम्पूर्ण विश्व में श्री कृष्ण भावनामृत का प्रचार करना है.ऐसा व्यक्ति ऊतम अधिकारी कहलाता है और उसे ६ विधियों(ददाति, प्रतिग्रह्णाति) के अनुसार तुरंत ही स्वीकार कर लेना चाहिए| व्यक्ति के पास जी कुछ भी संपत्ति हो उस भक्त को प्रस्तुत करना चाहिए क्योंकियह कहा गया है कि व्यक्ति के पास जो कुछ भी हो सब कुछ आध्यात्मिक गुरु को अर्पित करे...

श्रील भक्तिविनोद ठाकुर नें यह स्थापित करने के लिए कई संकेत दिए हैं कि एक उत्तम अधिकारी कई पतित आत्माओं को वैष्णव बनाने कि क्षमता से पहचाने जा सकते हैं|

...इस श्लोक में श्रील रूप गोस्वामी सुझाते हैं कि एक भक्त को कनिष्ठ अधिकारी, मध्यम अधिकारी एवं उत्तम अधिकारी में भेद करने की बुद्धि होनी चाहिए...उत्तम अधिकारी बने बगैर किसी को भी

आध्यात्मिक गुरु नहीं बनना चाहिए| एक कनिष्ठ एवं मध्यम अधिकारी भी शिष्य स्वीकार सकते हैं, परन्तु ये शिष्य समान स्तर पर होने चाहिए, और यह समझना चाहिए कि वे जीवन के परम लक्ष्य कि ओर बिना पर्याप्त मार्गदर्शन के, अग्रसर नहीं हो सकते| इसीलिए शिष्य को गुरु के रूप में उत्तम अधिकारी को ही चुनने के प्रति सावधान रहना चाहिए|

उपदेशामृत श्लोक ५ तात्पर्य

गुरु क्या है, इसकी आपको लम्बी-चौढ़ी परिभाषा नहीं चाहिये

गुरु क्या है, इसकी आपको लम्बी-चौढ़ी परिभाषा नहीं चाहिये इसीलिए वैदिक ज्ञान आपको संकेत देता है *तद-विज्ञानार्थं*| अगर आपको आध्यात्मिक जीवन का विज्ञान जानना है, *तद्विज्ञानार्थं स गुरुं एवाभिगच्छेत्*(मुकुंद उपनिषद १.२.१२), आपको एक गुरु के समीप जाना चाहिए. और गुरु कौन है? गुरु कार्थ है भगवान का वफादार सेवक| कितना आसन है|

श्रीमद भागवतम ६.१.२६-२७ पर प्रवचन से, फिलेडेल्फिया, जुलाई १२, १९७५

पाठ ७ दीक्षा की प्रतिज्ञाएँ

पाठ के विषय

दीक्षा कि प्रतिज्ञाओं का सख्ती से पालन
प्रतिज्ञा-पालन में आने वाली कठिनाइयाँ
कठिनाइयों के उपाय
सुधार के चरण

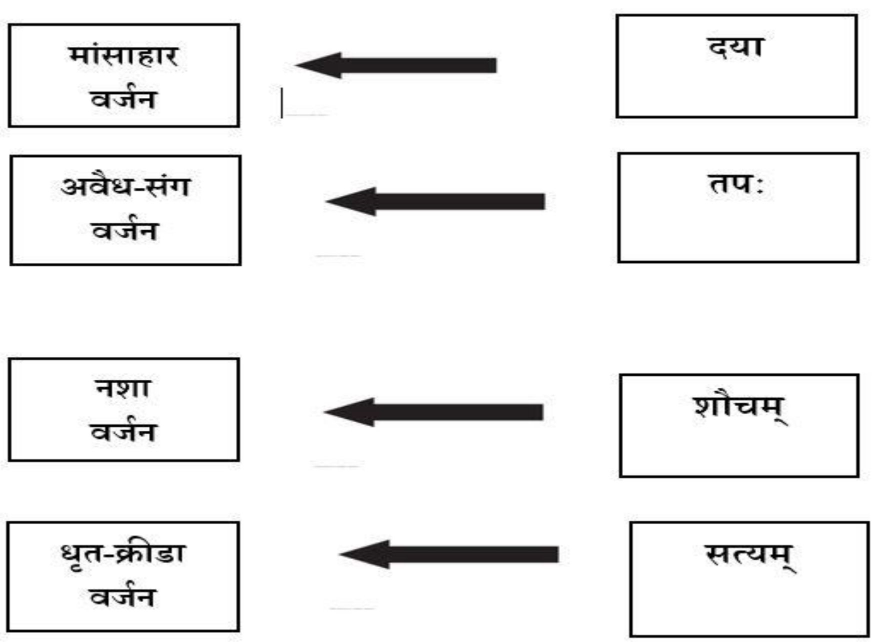

श्रीमद भागवतम १.१७.२४

दीक्षा-प्रतिज्ञाओं का पालन करने का महत्व

मै आपको सुरक्षित नहीं रख सकता| यह संभव नहीं|

इन चार नियमों का पालन करना कठिन नहीं है, अगर आप गंभीर हैं तब अवैध वस्तुओं का वर्जन करें अथवा ढोंग करते हुए चाहे जो करें|मैं आपकी रक्षा नहीं कर पाउँगा| यह संभव नहीं है|इसीलिए अगर आप गंभीर हैं तो आपको इन नियमों का पालन करना होगा| उसके उपरांत दीक्षा स्वीकारें| अन्यथा ढोंग न करें| यह मेरा निवेदन है|

श्रीमद भागवतम १.१६.३५---हवाई, जानवर २८, १९७४

अन्यथा, वे मेरे शिष्य नहीं

मेरा सुझाव है १६ माला हरे कृष्ण महामंत्र का जप एवं चार नियमों का पालन| मेरे सभी शिष्यों को इससे सहमत होना चाहिए अन्यथा वे मेरे शिष्य नहीं...मेरे शिष्यों को सदैव इननियमों का पालन करना चाहिएचाहे वे स्वर्ग में हो अथवा नर्क में|

राज-लक्ष्मी को लिखे पत्र से---मायापुर १७ फरवरी, १९७६

समस्याएँ सुलझानेहेतु उपाय

४ नियमों के सख्ती से पालन करने के लिए सहायक कुछ सुझाव नीचे दिए बक्से में लिखें

तपस्या आपको कृष्ण भावना में तीव्र विकास दिलाने के लिए है

अगर आप अभी भी आध्यात्मिक गुरु को दिए वचन को निभाने में असमर्थ हैं, अपने आपको भक्त अथवा शिष्य कहना का क्या अर्थ? यह ढोंग है| आपको इस प्रकार सोचना चाहिए कि आपने अपने गुरु को यह वचन दिया है अब अपवाद-हीन रूप से आपको इसे निभाना है, अन्यथा अपने आपको शिष्य या भक्त कहने का कोई अर्थ नहीं| यह आपको कृष्ण भावनामृत में तीव्र रूप से अग्रसर होने के लिए बाधित करेगी| तपस्या के बिना विकास का कोई प्रश्न नहीं| अगर भौतिक जगत आपको इतना ही सुन्दर प्रतीत होता है कि आप कोई भी वस्तु त्याग नहीं सकते तो सभी भक्ति-कार्य छोड़कर जेसे पहले थे वैसे ही पुनः बन जाएँ| अगर आप स्वयं को भक्त कहते हैं और उसी क्षमता से सेवा करते हैं तो आपको अपवाद-हीन रूप से सभी ४ नियमों का प्रत्येक परिस्थिति में पालन करना होगा| एक या दो बार क्षमा करना कृष्ण के लिए कठिन नहीं है परन्तु बार-बार क्षमा करना उनके लिए भी कठिन है और संभावना है कि आप सब कुछ खो बैठें इतना अधिक समय नष्ट करने के बाद भी|

शंकर्षण को लिखे पत्र से-----बम्बई ३१ दिसंबर, १९७२

विरोध का अर्थ है आध्यात्मिक गुरु से सम्बन्ध तोडना

आपने प्रश्न किया थाकि क्या आध्यात्मिक गुरु अपने सभी शिष्यों को आध्यात्मिक जगत में पहुँचाने तक क्या भौतिक जगत में ही रहता है?उत्तर है हाँ, यही नियम है| इसीलिए सभी छात्रों को सावधान रहना चाहिए कि कोई ऐसा अपराध न करें जिससे उनकी आध्यात्मिक प्रगति बाधित हो, और पुनः आध्यात्मिक गुरु को उसका उद्धार करने के लिए शरीर स्वीकारना पड़े| इस प्रकार की सोच आध्यात्मिक गुरु के प्रति अपराध है| इन दस अपराधों में से प्रमुख अपराध है गुरु कि अवज्ञा करना| दीक्षा के समय ली गयी प्रतिज्ञा का सख्ती से पालन करना चाहिए| यह एक भक्त को आध्यात्मिक मार्ग में अग्रसर करेगा| परन्तु कोई शिष्य अगर इन निर्देशों का जान बुझकर उल्लंघन करता है तब उसका आध्यात्मिक विकास आरम्भ से ही बाधित हो जाता है| विरोध का अर्थ है आध्यात्मिक गुरु से सम्बन्ध तोडना| अगर कोई ऐसा करता है तो जन्म-जन्मान्तर तक गुरु प्राप्त करने कि आशा उसे छोड़ देनी चाहिए| मुझे आशा है कि यह आपके प्रश्न का उपयुक्त उत्तर होगा|

जयपताका को लिखे पत्र से---लोस अन्जेलेस ११ जुलाई, १९६९

अतिरिक्त कथन पाठ ७ दीक्षा की प्रतिज्ञाएँ

अगर मैं उसमे पानी डालूँगा,प्रज्जवलित करने में कठिनाई होगी...

निश्चित ही हरिनाम का जप आपकी शुद्धि करेगा| यह बहुत अच्छा है| परन्तु अगर मैं अग्नि प्रज्ज्वलित करना चाहता हूँ, और यह सूखी लकड़ी है| और इसे मैं सूखा ही रखूं तब वह बड़ी अच्छी तरह आग पकड़ेगी परन्तु उसमे अगर मैं पानी दाल दूँ तो वह प्रज्ज्वलित करने में कठिन होगी| इसी प्रकार कृष्ण भावनामृत की अग्नि आपको सदा प्रगतिशील रखेगी फिर भी अगर अपराध न करें तो बहुत ही अच्छा होगा| और अगर आप जल छिड़कते रहेंगे... उस व्यक्ति के तरह जो औषधि लेने के साथ-साथ सारे वर्जित कार्यों में संलग्नरहता है और उसकी व्याधि सुधरती नहीं अथवा बहुत अधिक समय लगाती है, आपकी भी सामान स्थिति होगी| और क्योंकि जीवन बहुत छोटा है हमें गैर-ज़िम्मेदर नहीं रहना चाहिए|

सेन-फ्रंसिको में दिए दीक्षा प्रवचन से, १० मार्च १९६८

चैतन्य महाप्रभु सभी प्रकार के पापियों को स्वीकार करते हैं, एक शर्त पर

जब चैतन्य महाप्रभु अपने सुदर्शन चक्र का आह्वाहन कर रहे थे और नियानंद प्रभु उनसे दोनों भाइयों को क्षमा करने कि प्रार्थना कर रहे थे, तभी दोनों जगाई और मधाई चैतन्य महाप्रभु के चरणों में गिर गए एवं अपने व्यव्हार के लिए उनसे क्षमा याचना करने लगे| नित्यानंद प्रभु ने इन दोनों क्षमा याचकों का उद्धार करने के लिए श्री चैतन्य महाप्रभु से अनुरोध किया और चैतन्य महाप्रभु ने इस शर्त पर उन्हें स्वीकार कि वे अबसे सारे पाप-कार्यों एवं बुरीआदतों त्याग देंगे| दोनों भाइयों ने ऐसा करने की प्रतिज्ञा ली जिसके बाद श्री चैतन्य महाप्रभु ने उन्हें स्वीकारा और फिर कभी उनकी आदतों की चर्चा नहीं की| यह श्री चैतन्य महाप्रभु विशेष दयालुता है| इस जगत में कोई भी पाप-मुक्त नहीं है| अपने को पापहीन बताना किसी के लिए भी संभव नहीं है| परन्तु श्री चैतन्य महाप्रभु एक शर्त में सभी पापियों को स्वीकारते है के वे प्रमाणिक आध्यात्मिक गुरु से दीक्षा प्राप्त करने के पश्च्यात पाप कर्मों में लिप्त नहीं होंगे... इस कलियुग में सभी व्यक्ति जगाई और मधाई ही हैं| अगर उन्हें अपन पाप-कर्मों से मुक्त होना है,वे चैतन्य महाप्रभु की शरण ग्रहण करें और दीक्षोप्रांत शास्त्र-विरुद्ध कोई भी कार्य ना करे|

श्रीमद भागवतं की भूमिका से

शुद्धिकरण-विधि पहले से ही भक्त के ह्रदय में उपस्थित है

शास्त्रों के अनुसार अगर कोई अपनी उच्च स्थिति से पतित हो जाता है तब यह नियम है कि वह पश्च्याताप करे| परन्तु एक भक्त के लिए ऐसा कोई नियम नहीं है क्योंकि शुद्धिकरण-विधि पहले से ही भक्त के ह्रदय में स्थित है, क्योंकि वह सदैव श्री परम परमेश्वर भगवान का चिंतन करता रहता है| इसीलिए हरे कृष्णा हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे/ हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे का जप निरंतर करना चाहिए|

भगवद गीता ९.३१

तब आप भद्र-पुरुष भी नहीं, भक्त का तो प्रश्न हीनहीं|

ह्दयानंद(अनुवाद करते हुए): वे जानना चाहते हैं कि क्या सबसे घोर अपराध गुरु कि अवज्ञा है|

प्रभुपाद: जी हाँ, यह पहला अपराध| गुरोर्-अवज्ञा श्रुति-शास्त्र निन्दनम्| अगर आप गुरु स्वीकार कर उसकी अवज्ञा करेंगे तब आपकी क्या स्थिति होगी? आप भद्र-पुरुष भी नहीं होंगे| अगर आप गुरु के समक्ष कहते हैं, “मैं इस प्रकार कार्य करूँगा एवं आपकी आज्ञा का पालन करूँगा ” और नहीं करते| तब आप भक्त तो क्या भद्र पुरुष भी नहीं| यह सर्वज्ञात है|

भगवद-गीता २.११ मेक्सिको में दिए प्रवचन से, फरवरी ११, १९७५

इकाई ३:

गुरु के साथ सम्बन्ध के अंतर्गतकार्य करना

पाठ ८ गुरु पूजा

श्रील प्रभुपाद की नियमित पूजा
गुरु पूजा का महत्व
इस्कॉन गुरुओं की औपचारिक पूजा
व्यास पूजा

पाठ ९ गुरु सेवा

दीक्षा हेतु योग्यताएं
गुरु-सेवा और इस्कॉन की सेवा
संतुलित रूप से अनिवार्यताओं को पूर्ण करना

पाठ १० गुरु की वपु एवंवाणी सेवा

गुरु की वपु एवं वाणी सेवा करने के उपाय
गुरु की वपुः सेवा के महत्व
गुरुकी उपस्थिति में उपयुक्त व्यवहार करना
गुरु से जिज्ञासा करना
गुरु की वाणी सेवा के महत्व

पाठ ११ गुरुत्याग (आध्यात्मिक गुरु का त्याग)

गुरु त्याग का सिद्धांत एवंप्रक्रिया
पुनर्दीक्षा

इस्कॉन के अंतर्गत भक्ति में संलग्न रहना

पाठ ८ गुरु -पूजा

पाठ के विषय

श्रील प्रभुपाद की निरंतर अर्चना
गुरुपूजा का महत्त्व
इस्कॉन गुरुओं की व्यावहारिक पूजा
व्यास-पूजा

गुरु पूजा का महत्त्व

साक्षाद धरित्वेना समस्त शस्त्रैर
उक्तास तथा भव्यतएवषड्भि:

आध्यात्मिक गुरु का भगवानके सामान आदर कियाजाना चाहिए क्योंकिवे भगवान के गोपनीय सेवक हैं|

श्री श्री गुर्वाष्टक शलोक ७

आराधनानां सर्वेषां विष्णोराराधानंपरम्
तस्मात् परतरं देवी तदीयनां समर्चनं

[शिव ने दुर्गा से कहा:] “प्रिय देवी, जबकि वेदों में देवताओं की पूजा बताई गयी हैं परंती विष्णु की आराधाना सर्वोच्च है| तब भी, उपरोक्त विष्णु आराधना वास्तव में उनके अनुयाइयों, वैष्णवों की सेवा है|’

चैतन्य चरितामृत, अदि पुराण से, मध्य-लीला ११.२८

ये मे भक्त जनाः पार्थ ना मे भक्ताश्चते जनाः
मदभक्तानां च ये भक्तास्ते मे भक्त तमामताः

“[भगवानभगवान कृष्ण अर्जुन से:] जो मेरे भक्त हैं वे वास्तव में मेरे भक्त नहीं, परन्तु जो मेरेसेवकके भक्त हैं वे वास्त्व में मेरे भक्त हैं|”

अदि पुराण से, चैतन्य चरितामृत मध्य लीला ११.२८ में कथित

यह अतिश्योक्ति नहीं; वास्तविक शिक्षा है

यह गुरु-पूजा हम कर रहे हैं, अतिश्योक्ति नहीं है; यह वास्तविकशिक्षा| आप प्रतिदिन क्या गाते हैं? *गुरु मुख पद्म वाक्य चित्तेते करिया एक्य*|बस, यही अनुवाद है| मैं आपसे सच कहूँ, जितनी भी सफलता हमें प्राप्तहै इस कृष्ण भावनामृत आन्दोलन में, वह केवल मेरे गुरु महाराज के वाक्यों पर मेरा विश्वास था| आप भी ऐसा जारी रखें| तब सारी सफलताएं प्राप्त होंगी|

आगमन संबोधन --- न्यू यॉर्क, जुलाई ९,१९७६

नियमित रूप से गुरु-पूजा करने के लाभ लिखें

इस्कॉन गुरुओं के पूजा

प्रणाम मन्त्र

अपने दीक्षा गुरु के प्रणाम मन्त्र पढने के बाद, सभी शिष्यों के शिष्य एवं आने वाली पीढ़ी के भक्त कमसेकम श्रील प्रभुपाद के प्रणाम मन्त्र का पहला भाग प्रणाम करते समय पढ़े, संस्थापकाचार्यका सम्मान करने के लिए|

इस्कोन लॉ ७.२.१

आरती क्रिया

मंदिर में अथवा मंदिर कार्यक्रमों में आरती करते समय, पुजारी को आरती अल्टर के बजाय पूजा की थाली में, मेज़ में, अपने दीक्षा गुरु की छवि रख सकता है, गुरु को इस्कॉन द्वारा मान्यता प्राप्त होनी चाहिए अच्छी स्थिति में| दीक्षा गुरु कि छविप्रभुपाद कि छवि से छोटी होनी चाहिए और आरती के बाद हटा देनी चाहिए|

इस्कॉनलॉ ६.४.८.३. अ

गुरु पूजा (वर्तमान इस्कोन दीक्षा गुरु के लिए)

इस्कॉन गुरुओं के शिष्य श्रील प्रभुपाद के आलावा अपने गुरुओं की पूजा मंदिर के बाहर जाकर कर सकते हैं| शिष्यों को पूजा करने के लिए मंदिर प्राधिकरण को सुविधाएं प्रदान करनी चाहिए|

इस्कॉन लॉ ६.४.८.१.१

वर्जित नाम

कोई भी इस्कॉन सदस्य सामाजिक रूप से ‘‘हिज डिवाइन ग्रेस’’ कहकर संबधित नहीं किया जायेगा न ही उसके नाम के अंत में –‘‘पाद’’ अथवा ‘‘देव’’ जेसी उपधि लगायी जाएँ| शिष्य अपने शिक्षा गुरु को गुरुदेव या ‘‘गुरु महाराज’’ कह सकते हैं|

वैष्णवों का स्वागत

वैष्णवों के स्वागत करने के कार्यक्रम, उनके लिए भी जो गुरु के रूप में कार्य कर रहे हैं, सभी इस्कॉन मंदिरों को साधारण रहने चाहिए| उदहारणतया, आसन प्रदान करना, प्रसाद एवं पेय पदार्थ प्रदान करने, माला पहनना, और कीर्तन करना|

इस्कॉन लॉ ६.४.८.२

व्यास पूजा

व्यास पूजा उत्सव उपस्थिति के कुछ साक्षात्कार लिखें:

इस्कॉनवर्तमान शिक्षा एवं दीक्षा गुरु की व्यास-पूजा

प्रत्येक भक्त का श्रील प्रभुपाद कि साथ विशेष सम्बन्ध हैपरन्तु,इस्कॉन संपत्ति के अंतर्गत इस्कॉनके शिक्षा व दीक्षा गुरु व्यास पूजा स्वीकार कर सकते हैं (आरती व/अथवा चरण धोहन) साल में एक बार| यह उत्सव मंदिर में आयोजित किया जा सकता है|इस्कॉन सदस्य जो व्यास पूजा आयोजित कर रहे हैं उन्हें यह साधारण रूप से एवं श्रील प्रभुपाद व्यास-पूजा से कम भव्य रूप से करनी चाहिए| सामान्यतः भक्तों को व्यास पूजा अपने निकटम क्षेत्र में ही मनानी चाहिए. इस्कॉनमें, व्यास-पूजा पुस्तकें केवल श्रील प्रभुपाद के लिए ही लिखी जानी चाहिए|

इस्कॉन लॉ ६.४.८.१

नोट

सामान्यतःअपनेगुरुकेगुरु-भाइयोंएवंगुरु-बहनों कोगुरुकीव्यासपूजाकेअवसरपरप्रशंसा करने, भाग लेने अथवा ओफ्फेरिंग लिखे के लिए अनुरोध करना वैष्णव सदाचार के सिरुद्ध माना जाता है|

गुरुसेवा कमिटी का सुझाव

श्रील प्रभुपाद की व्यास-पूजा एवं तिरोभाव तिथि

इस्कॉन के सदस्यों को श्रील प्रभुपाद कि व्यास-पूजा एवं तिरोभाव तिथि महोत्सव इस्कॉनके पूर्व प्रतिष्ठितव्यास-पूजा एवं तिरोभाव-तिथि महोत्सव के रूप में मनानी चाहिए| सभी इस्कॉन सदस्य श्रील प्रभुपाद को वार्षिक विज्ञप्ति लिखें|

इस्कॉन लॉ ६.४.८

अतिरिख्त कथन पाठ८ गुरु पूजा

गुरुकी छवि का आदर करें

मेरी छवि एवं मुझमें कोई अंतर नहीं है| इसीलिए हमें इस भाव से छवि रखनी चाहिए| अगर हम ये छवि फेक दें तब यह अपराध होगा|नाम और छविआध्यात्मिक जगत में अभिन्न हैं|

जदुरानी को लिखे पत्र से, न्यू वृन्दावन ४ सितंबर,१९७२

आध्यात्मिक गुरु की अविर्भाव तिथि व्यास पूजा की जाती है

पका हुआ फल हांथोहाथ गुरु परंपरा के द्वारा प्राप्त होता है एवं वहसभी गुरु परंपरा में कार्य करते हैं वे व्यासदेव के प्रतिनिधि कहलाते हैं और इसीलिए आध्यात्मिक गुरु के अविर्भाव तिथि के दिन व्यास-पूजा की जाती है| इतना ही नहीं, उच्च आसनजिसपर गुरु बैठते हैं वह भी व्यासासन कहलाता है|

बलि-मार्दन को लिखे पात्र से --- टोक्यो २५ अगस्त,१९७०

एक भी आभूषण या उपहार वाइसराय नहीं छू सकता...

व्यास पूजा का अर्थ है अपने गुरु जो श्रील व्यासदेव के प्रतिनिधि हैं और बिना कुछ जोड़े घटाए आध्यात्मिक ज्ञान प्रदान कर रहे हैं, वर्षमें एक बार उनके जन्मदिवस पर सम्मानित किये जायें| यह व्यास पूजा कहलातीहै| और सम्पूर्ण सम्मान गुरु परम परमेश्वर भगवान के लिए स्वीकार करते है, स्वयं के लिए नहीं| जिस प्रकार ब्रिटिश राज में जब वाइसराय किसी गोष्ठी में जाते हैं तो लोग उन्हें कई प्रकार के कीमती उपहार प्रदान करते हैं, किन्तु वाइसराय के लिए कुछ भी नहीं होता| सभी कुछ शाहीकोष में जाता है| वाइसराय राजा कीतरफ से स्वीकार कर सकते हैं परन्तु उनकी कोई संपत्ति नहीं है, सब कुछ राजा का ही है, और वह राजा को ही जाता है| इसी प्रकार व्यास-पूजा दिवस में जितना भी सम्मान, उपहार व भावनाएं गुरु को अर्पितकी जाती हैं वह परंपरा के माध्यम से श्री भगवान तक पहुंचता है| इसी प्रकार सम्मान नीचे से ऊपर की ओर बढ़ता है|आध्यात्मिक गुरु छात्र का शिक्षक होता है और इसी प्रकार उसे छात्र को भगवान को सम्मान वापस लौटाना सिखाना होगा| यह कहलाती है व्यास-पूजा|

श्री व्यास-पूजा --- न्यू वृन्दावन, सितंबर २, १९७२

व्यास पुजा का रहस्य

यहहै व्यास-पूजा का रहस्य| जब हम भगवान की अलौकिक लीलाओं पर ध्यान करते है तब हमें यह जानकर गर्व होता है कि हम उनके नित्य सेवक हैं और हम आनंदमय होकर नृत्य करते हैं| मेरे अलौकिक गुरु की जय होजिनके असीम कृपा के कारण हमारे ह्रदय में ऐसे नित्य आन्दोलन का उत्सर्जन हुआ| आइये हम उनके चरणों में नमस्कार करें|

श्रील प्रभुपाद व्यास पूजा
भक्ति सिद्धांत सरस्वती ठाकुर को प्रणति
बम्बई(अब मुंबई), फरवरी १९३५

पाठ ९ गुरु-सेवा

पाठ के विषय:

शिष्य की योग्यताएं
गुरु-सेवा एवं इस्कॉन की सेवा
संतुलित रूप से अनिवार्यताओं को पूर्ण करना

सेवया

जिसप्रकार किसी वस्तु का क्रय करने पर उसका मूल्य चुकाना होता है जिसे कहते हैं *सेवया*| आध्यात्मिक गुरु द्वारा दी गयी विद्या का आप मूल्य नहीं चूका सकते| यह संभव नहीं हैं| इसीलिए इसे सेवया कहते हैं| आपको अपना जीवन इस सेवा के लिए समर्पित करना होगा| आप अपने आद्यात्मिक गुरु को दे ही क्या सकते हैं?

गुरु-सेवा एवं इस्कॉन की सेवा

नीचे दिए गए टेबल में सूचीबद्ध करें:

गुरु कि सेवा करने के तरीके	इस्कॉन के आन्दोलन कि सेवा करने के तरीके

गुरु-सेवा एवं इस्कॉन की सेवा को संतुलित रूप से करने के महत्त्व पर टिपण्णी करें

संतुलित रूप से अनिवार्यताओं को पूर्ण करना

अपने जीवन कि कुछ एवं गुरु के प्रति बाध्यताएं नीचे सूचीबद्ध करें:

संतुलित रूप से गुरु एवं अन्यों के प्रति बाद्ध्यताएँ पूर्ण करने में आने वाली समस्याओं को सुलझाने हेतु

कुछ उपाय सुझाएँ

शिष्य का दायित्व है आज्ञा पालन...श्री चैतन्य महाप्रभु के सन्देश का सम्पूर्ण विश्व में प्रचार

पृथवीते आछे यत नगरादि ग्राम
सर्वत्रप्रचार हैबे मोर नाम

(श्री चैतन्य भागवत अन्त्य खंड ४.१२६)

चैतन्य महाप्रभु के भक्तों को साभी ग्रामों एवं चहरों मं कृष्ण भावनामृत का प्रचार करना ही चाहिए| यह भगवान को संतुष्ट करेगा| अपनी व्यक्तिगत तुष्टि के लिए मनचाहा कार्य नहीं| यह आज्ञा परंपरा द्वारा प्राप्त हुई है, और आध्यात्मिक गुरु शिष्य को यह आज्ञा प्रस्तुत करते है जिससे कि वह श्री चैतन्य महाप्रभु के सन्देश का प्रचार कर सके| यह प्रत्येक शिष्य का धर्म है कि वह प्रमाणिक आध्यात्मिक गुरु और चैतन्य महाप्रभु का सन्देश सम्पूर्ण विश्व में फैलाये|

श्री चैतन्य चरितामृत मध्य-लीला १६.६५ तात्पर्य

गुरु सेवा

तद्विद्धिप्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया
उपदेक्षन्ति ते ज्ञानं ज्ञानिनस्तत्त्व दर्शिनः

एक आध्यात्मिक गुरु से तत्वजानने का प्रयास करें| श्रद्धापूर्वक उनसे प्रश्न करें व उनकी सेवा करें| तत्व ज्ञानी आपको ज्ञान दे सकते है क्योंकि उन्होंने परम सत्य का दर्शन किया है|
एस आध्यात्मिक गुरु पूर्ण शरणागति से स्वीकार जान चाहिए, और बिना अहंकार के उसकी सेवा करनी चाहिए| तत्व दर्शियों की संतुष्टि आध्यात्मिकविकास का रहस्य है|

भगवद-गीता यथारूप ४.३४

शरणागति नहीं, विकास नहीं

हमारे आन्दोलन में आध्यात्मिक विकास का आरम्भ शरणागति है| शरणागति नहीं तो विकास भी नहीं|*सर्वधर्मं परित्यज्य माम एकं शरणम व्रज* (गीता १८.६६)| यह आरम्भ है|अगर यह उपस्थित नहीं है तो विकास कार्य आरम्भ भी नहीं होता| इसकी हम पहले भी चर्चा कर चुके हैं|*ना सिद्धिं सा अवाप्नोति न सुखं नपरम गतिः*| यह आध्यात्मिक जीवन का आरम्भ है|शब्द है शिष्य| शिष्य का अर्थ है जो शिष्यत्व स्वीकार करे| कोई शिष्यत्व नहीं तब व्यक्तिशिष्य कैसे कहलायेगा?

कक्ष वार्तालाप----जुलाई १ १९७४,मेलबोर्न

व्यक्ति को सख्ती से निर्देश का पालन करने का प्रयास करना चाहिए

आध्यात्मिक गुरु की आज्ञा को सख्ती से पालन करने के सिद्धांत को माननाचाहिए| आध्यात्मिक गुरु अलग-अलग लोगों को अलग-अलग निर्देश देते हैं| जैसे चैतन्य महाप्रभु ने रूप गोस्वामी, सनातन गोस्वामी एवं जिव गोस्वामी को प्रचार करने को कहा जबकि श्री रघुनाथ दास गोस्वामी को सख्ती से संन्यसचार का पालन करने को कहा| सभी गोस्वामियों ने चैतन्य महाप्रभु कि आज्ञा का कठोरता से पालन किया| यह भक्ति में प्रगति का सिद्धांत है| श्रीगुरु से आज्ञा प्राप्त करने के बाद उसका सख्ती से पालन करना चाहिए. यह सफलता का मार्ग है|

श्री चैतन्य चरितामृत अंत्य लीला ६.३१३

इस ही प्रकार भक्ति-लता सूख जाती है

नियमों का त्याग कर अपनी मर्ज़ी से कार्य करने को मत्त-हांथी अपराध कहा गया है, और यह भक्ति लता को जड़ से उखाड़कर उसके टुकड़े-टुकड़े कर दता है| इस प्रकार भक्ति लता सूख जाती है| ऐसा अपराध ख़ास तौर पर तब होता है जब कोई गुरु के निर्देशों की अवमानना करता है| इस गुरु-अवज्ञा कहते हैं| एक भक्त को इसीलिए आध्यात्मिक गुरु के विरुद्ध अपराध करने से इसिलए बचना चाहिए उनके अवज्ञा करके| जैसे ही कोई आध्यात्मिक गुरु के निर्देशन से भटक जाता है तभी से भक्ति लता उखाड़ना शुरू हो जाती है और क्रमशः सारी पत्तियां सूख जाती है|

श्री चैतन्य चरितामृत मध्य लीला १९.१५६

आध्यात्मिकगुरु की आज्ञा शिष्य का जीवन-सन्दर्भ होता है

आध्यात्मिक गुरु से दीक्षा एवं निर्देश प्राप्त होने के पश्च्यात शिष्य कोचाहिये कि वह स्वयं को किसी और विषय-वस्तु से भ्रमितहुए बिना सदैव, बेहिचक उन्ही निर्देशों के विषय में विचार करें| श्रील विश्वनाथ चक्रवर्ती ठाकुर ने भी गीता २.४१ पर टिपण्णी करते हुए भी यही कहते है की आध्यात्मिक गुरु के निर्देश शिष्य का जीवन-सन्दर्भ है| शिष्य को इसकी चिंता नहीं रहनी चाहिए कि वह भगवद्धाम वापस जा रहा है या नहीं, उसकी पहली चिंता गुरु कि आज्ञा पालन करने की होनी चाहिए|एक शिष्य को सदैव गुरु कि आज्ञा पर चिंतन करना चाहिए और यही चिंतन पूर्ण-चिंतन है| केवल चिंतन ही नहीं अपितु उसे वास्तविकता में लाने का प्रयत्न करना चाहिए|

श्रीमद्भागवतम् ४.२४.१५

अतिरिख्त तथ्य   पाठ ९   गुरु सेवा

शिष्य जो *शिष्यता*शब्द से सम्बंधित है

आध्यात्मिक गुरु स्वीकारने का अर्थ है अपनी इच्छा से महान-व्यक्तित्व के निर्देशों एवं नियमों का पालन करने के लिए सहमत होना| शिष्य होना का यही अर्थ है---अपनी इच्छा से सहमत होना| "जी गुरुदेव, आप जो भी कहें मुझे स्वीकार है|" संस्कृत शब्द शिष्य का अर्थ है---"जो नियमों का पालन करे," और अंग्रेजी में इसे डिसाईपलकहते हैं, जिसका सम्बन्ध डिसिप्लिन से है| तो शिष्य गुरु द्वारा शिक्षित किया जाता है| "मेरे व्यक्तिगत कठिनाइयों के बावजूद भी मुझे आज्ञा का पालन करना होगा|"

श्रीमद भागवतम ५.५.१ टिटेनहर्स्ट, लन्दन में दिए प्रवचन से, १२ सितंबर १९६९

एक प्रमाणिक गुरु कि शरण में जाइये एवं सम्पूर्णहृदय से उनकी सेवा कीजिये

आध्यात्मिक प्रगति का सबसे सरल मार्ग है एक प्रमाणिक गुरु कि शरण लेकर उसकी हृदय से सेवा करें| यह सफलता की कुंजी है जैसा कि श्रील विश्वनाथ चक्रवर्ती ठाकुर ने अपनी प्रार्थना *गुरुवाष्टकम्* में लिखा है *यस्य प्रसादाद् भगवत प्रसादः*|गुरु कि सेवा कर कृपा प्राप्त करने से भगवान कि कृपा प्राप्त हो जाती है.. अपने पति कर्दम मुनि जो एक भक्त थे, की सेवा करने से देवहुति को भी उनकी आध्यात्मिक उपलब्धियों का लाभ मिल गया था| इसी प्रकार प्रमाणिक गुरु की सेवा करने से भगवान एवं गुरु कि कृपा साथ साथ प्राप्त हो जाती है|

श्रीमद्भागवतम ३.२३.७

आध्यात्मिक गुरु के वाणी के अनुसरण के सिद्धांत पर डटे रहें

अगर कोई शिष्य अपने आध्यात्मिक गुरु के मिशन के प्रति गंभीर है, उसे तुरंत ही वाणी एवं वपु: के माध्यम से श्री परम परमेश्वर भगवान का संग करे| यही भगवान का दर्शन प्राप्त करने का एकमात्र रहस्य है| इन्द्रिय तृप्ति करते हुए भगवान को वृन्दावन की किसी झाडी में दर्शन प्राप्त करने के प्रयास करने के बजाय अगर कोई आध्यात्मिक गुरु के वाणी के अनुसरण के सिद्धांत पर डटे रहें, इस प्रकारवह किसी भी कठिनाई के बिना भगवान का दर्शन प्राप्त करेगा|

श्रीमद्भागवतम् ४.२८.५१

आप मेरे मिशन में मेरी सहायता कर रहे है...यह वास्तविक संग है

आप लिखते हैं कि आप पुनः मेरा संग करने कि इच्छा रखते हैं, किन्तु आप क्योंयह भूल जाते हैं कि आप सदैव मेरे संग हैं? जब आप मेरे आन्दोलन में सहायता करते है तब मैं सदैव आपके विषय में चिंतन करता हूँऔर आप मेरे| यह वास्तविक संग है|

गोविन को लिखे पत्र से --- लोस अन्जेलेस १७ अगस्त, १९६९

मैं आपके साथ हूँ जैसे मेरे गुरु महाराज मेरे साथ

आध्यात्मिक गुरु हर उस जगह उपस्थित हैं जहांउनके शिष्य उनके निर्देशों का पालन का कर रहे हैं| यह श्रीकृष्ण की कृपा से ही संभव है| अपने भक्तिभाव से मेरी सेवा करने के सभी प्रयासों के कारण मैं सदैव आपके साथ हूँ जैसे मेरे गुरु महाराज मेरे साथ हैं| यह सदा याद रखें|

भक्त डॉन को लिखे पत्र से ---- लोस अन्जेलेस १ दिसंबर, १९७३

पाठ १० गुरु की वपु एवं वाणी सेवा

पाठ के विषय:

गुरु कि वाणी एवं वपुः सेवा करने के तरीके
गुरु की वपु सेवा करने का महत्त्व
गुरु कि मौजूदगी में उपयुक्त व्यवहार करना
गुरु से प्रश्न पूछना

वपुः
भौतिक शरीर

वाणी
उपदेश

साधुसंग साधुसंग सर्व शास्त्रे कय

लव मात्र साधुसंग सर्व सिद्धि हय

सभी शास्त्रोंका कहना है कि साधू संग एक क्षण के लिए भी करने से सम्पूर्ण सिद्धि प्राप्त हो सकती है|

चैतन्य चरितामृत मध्य लीला २२.५४

गुरु की उपस्थिति में उपयुक्त व्यव्हार

शिष्यों के लिए सदाचार नियम, हरिभक्ति-विलास से

- गुरु को देखते ही दंडवत प्रणाम करना चाहिए|
- गुरु के आने पर उनकी ओर मुख होना चाहिए और उनके जाने पर उनके पीछे जाना चाहिए|
- गुरु का संग बिन अनुमति के नहीं छोड़नाचाहिए|
- गुरु का नाम असावधानी से नहीं पुकारना चाहिए परन्तु आदरपूर्वक|
- उन्हें कभी गुरु की वाणी, क्रियाकलाप, वाणी की नक़ल नहीं उतरनी चाहिए|
- गुरु की वाणी का बहुत आदर करना चाहिए|

- गुरु के दंड को भी उनकी दयालुता समझना चाहिए|
- गुरु, शास्त्रों एवं भगवान की भर्त्सना कभी नहीं सुननी चाहिए और तत्काल वहां से प्रस्थान करना चाहिए|
- गुरु के हार, बिस्तर, जूतों, आसन, छायाएवं मेज़ को पैर नहीं लगाना चाहिए|
- गुरु के समक्ष पाँव नहीं फ़ैलाने चाहिए, न ही ऊंघना चाहिए, हँसना एवं अनादरपूर्ण आवाजें भी नही निकालनी चाहिए|
- गुरु के समक्ष आसन अथवा बिस्तर में नहीं बैठना चाहिए|
- गुरु के पहले किसी और का अर्चन नहीं करनी चाहिए|
- गुरु के सामने दीक्षा, शास्त्रार्थ अथवा स्वयं को उच्च नहीं बताना चाहिए|
- गुरु को आज्ञा नहीं देनी चाहिए अपितु उनके अयापालन करना चाहिए|
- गुरु के गुरु को उतना ही सम्मान देना चाहिए|
- गुरु की पत्नी, पुत्रएवं सम्बन्धियों को गुरु मानना चाहिए परन्तु बेटे के पैर नहीं धोने चाहिए|

हरी भक्ति विलास से, प्रमाणिक शिष्य कि योग्यताएं,पंचरात्र प्रदीप से

गुरु की वपु सेवा

गुरु को शारीरिक सुख प्रदान करके उनकी सेवा करें

*गुरु शुश्रूषया*का अर्थ है व्यक्ति को व्यक्तिगत रूप से शारीरक सुख प्रदान कर उनकी सेवा करना जैसे, नहलाना, कपडे पहनना, बिस्तर लगाना व भोजन पकाना| यह *गुरु शुश्रूषया* कहलाता है| गुरु कि सेवा एक साधारण सेवक बनकर करनी चाहिए एवं जो भी संपत्ति शिष्य के पास है वह सब गुरु की सेवा में लगा देनी चाहिए|

श्रीमद्भागवतम् ७.७.३०-३१

वज्र के समानकठोर एवं पुष्प केसमान कोमल

एक आचार्य या वैष्णव परंपरा के महान व्यक्तित्व अपने सिद्धांतों के प्रति बहुत कठोर होते है, परन्तु कई बार वे वज्र कीतरह कठोर भले ही क्यों ना हों, कभी-कभी वज्र केसमानकोमल भी होते हैं| वास्तविकता में, वे स्वतन्त्र हैं|

चैतन्य चरितामृत अदि लीला ७.५५

श्रेयस्तु गुरुवद्वृत्तिर नित्यमेव समाचरेत्
गुरुपुत्रेषु दारेषु गुरोश्चैव स्वबन्धुषु

आध्यात्मिक गुरु कि पत्नी, बेटे एवं सम्बन्धियों का उतना ही सम्मान करना चाहिए जितना गुरु को किया जाता है|

प्रमाणिक गुरु कि योग्यताएं, हरी-भक्ति विलास से,
पहला विलास, श्लोक ८४ , पञ्चरात्र प्रदीप से

गुरु के परिवार-जन उन्हें साधारण पुरुष ही समझते हैं...

अगर कोई भगवान हरि, राम अथवा श्रीकृष्ण को साधारण व्यक्ति समझता है, इसका यह अर्थ नहीं के वे साधारण पुरुष हो गए| इसी प्रकार श्रीगुरु जो श्रीभगवान केप्रमाणिक प्रतिनिधि हैं, के परिवार-जन उन्हें साधारण पुरुष समझते हैं तबश्री गुरु साधाराण नहीं बन जाते| गुरु भगवान जितने ही श्रेष्ठ हैं और अगर कोई छात्र आध्यात्मिक प्रगति हेतु गंभीर है, वह इसदृष्टि से आध्यात्मिक गुरु का आदर करे| इस सिद्धांत से तनिक-सा भी भ्रमण एक शिष्य के अध्ययन एवं साधना का विनाश कर सकता है|

श्रीमद्भागवतम्७.१५.२७

गुरु के गुरुभाइयों का आदर करें

श्री अद्वैत प्रभु एवं श्री चैतन्य महाप्रभु के आध्यात्मिक गुरु इश्वर्पुरी, दोनों ही श्री माधवेंद्र पूरी के शिष्य थे जो श्री नित्यानंद प्रभु के भी गुरु हैं| इसीलिए श्री अद्वैत प्रभु, जो चैतन्य महाप्रभु के आध्यात्मिक चाचाश्री है काभी सम्मान करना चाहिए क्योंकि एक शिष्य को गुरु के समान उनके गुरुभाइयों का भी आदर करना चाहिए|

चैतन्य चरितामृत आदि-लीला ५.१४७

भक्त का चरित्र है वैष्णव सदाचार का पालन व संरक्षण

प्रिय सनातन, तुम सम्पूर्ण ब्रम्हांड के उद्धार करने वाले हो एवं महान संत एवं देवगण आपको स्पर्श कर शुद्ध होते हैं, यह एक भक्त का चरित्र है कि वह वैष्णव सदाचार की रक्षा एवं पालन करे| वैष्णव सदाचार का पालन एक भक्त का आभूषण है| अगर कोई इन सदाचारों के विरुद्ध जाता है तबजनता उसका अपमानकरती है और उसका इस संसार एवं अगले में भी सर्वनाश हो जाता है| सदाचार का पालन करके तुमने मेरे मन को संतुष्टि कियाहै|

चैतन्य चरितामृत, अन्त्य –लीला अध्याय ४,
चैतन्य महाप्रभु सनातन गोस्वामी से

गुरु से जिज्ञासा

यह चुनौतीपूर्ण मनोभावसे नहीं किया जाना चाहिए

भागवत श्रवण के दौरान स्पष्ट अर्थ जानने के लिए कोई प्रश्न कर सकता है परन्तु यह चुनौती-पूर्ण भाव से नहीं किया जा चाहिए| प्रश्न विषय एवं वक्ता के प्रति अत्यंत सम्मान के साथ प्रस्तुत किये जाने चाहिए| यह भगवद्गीता में भी बताया गया है| एक व्यक्ति को विनम्र मनोभाव एवं प्रमाणिक स्रोतों से श्रवण करना चाहिए| इसीलिए इन साधुओं ने श्रील सूत गोस्वामी को अत्यंत आदरपूर्वक संबोधित किया|

श्रीमद्भागवतम् १.१.५

अलौकिक विज्ञान से सम्बंधित प्रश्न ही किये जाने चाहिए

व्यक्ति को जिज्ञासु होना चाहिए, प्रमाणिक गुरु से सीखने के लिए, अत्यंत जिज्ञासु|अलौकिक विज्ञान से सम्बंधित प्रश्न ही किये जाने चाहिए (*जिज्ञासु श्रेय उत्तमं*)|'*ऊतम*' का अर्थ है भौतिक विद्या से परे| आम तौर पर जनता भौतिक विषय वस्तु के प्रति अत्यंत जिज्ञासु रहती है, परन्तु वह व्यक्ति जो भौतिक विषय वस्तु में अपनी रूचि खो चूका है और केवल आध्यात्मिक ज्ञान मं रूचि रखता है वह दीक्षित होने के लिए उत्तम है|

उपदेशामृत शोल्क ५

गुरु की वाणी सेवा का महत्त्व

वाणी का अस्तित्व सदैव के लिए रहता है

भौतिक दृष्टिकोण के अनुसार ॐ विष्णुपाद श्रील भक्तिसिद्धंत सरस्वती ठाकुर प्रभुपाद इस जगत से दिसंबर १९३६ के अंतिम दिवस को प्रस्थान कर गए| मैं सदैव उनकी वाणी और उनके वचनों के रूप में आज भी अनुभव करताहूँ|संग दो प्रकार से होता है वपु अथवा वाणी| वपु का अर्थ है शारीरिक मौजूदगी| भौतिक उपस्थिति कई बार होती है कई बार नहीं परन्तु वाणी सदैव उपस्थित होती है| व्यक्ति को वाणी का लाभ उठाना चाहिए न कि वपु का|भगवद्गीता, एक उदाहरण है, जो श्रीकृष्ण कीवाणी है| भगवान स्वयं पांच हज़ार वर्ष पूर्व स्वयं उपस्थित थे परन्तु अब, भौतिक दृष्टिकोण के अनुसार, नहीं हैं, भगवद्गीता अभी भी उपस्थित है|

चैतन्य चरितामृत, अन्त्य-लीला --- समापन-वाक्य

वाणी वपु से अधिक महत्पूर्ण है

गुरु की शिक्षाओं का पालन उनके स्वरूप केअर्चनसे अधिक महत्वपूर्ण है, परन्तु दोनों में से किसी की भी उपेक्षा नहीं किया जाने चाहिए| स्वरूप कहलता है वपु एवं शिक्षाएं, वाणी| दोनों कि पूजा होनी चाहिए. वाणी वपु से अधिक महत्वपूर्ण है|

तुष्ट कृष्ण को लिखे पात्र से, अहेम्दाबाद १४ दिसम्बर, १९७२

राजा की गोद में बैठा हुआ खटमल

जहाँ तक व्यक्तिगत संग का प्रश्न है मैं अपने गुरु महाराज के साथ केवल चार या पांच बार ही रहा किन्तु मैंने उनका संग कभी नहीं छोड़ा, एक क्षण के लिए भी नहीं|क्योंकि मैं उनके निर्देशों का पालन कर रहा हूँ इसीलिए मैंने कभी भी विछोह का अनुभव नहीं किया|मेरे कुछ गुरु-भाई है भारत में जो गुरु महाराज के संग रहे परन्तु अब वे उनकी आज्ञा का पालन नहीं कर रहे| राजा की गोद में बैठे हुए खटमल के समान| वह अपनी स्थिति के प्रति बड़ा गर्वान्वित रह सकता है परनुत राजा को काटने के आलावा वह कुछ नहीं कर सकता| सेवा का संग स्वरूप के संग से अधिक महत्वपूर्ण है|

सत्धन्य को लिखे पत्र से, कलकत्ता २० फरवरी, १९७२

अगर आप कृपया मेरा आन्दोलन पूर्ण करने का प्रयत्न करेंगे... यह हमारा सदा-संग होगा

जहाँ तक मेरा प्रश्न है मैं अपने गुरु से विछोह अनुभव नहीं करता क्योंकि मैं उनके इच्छानुसार उनकी सेवा करने का प्रयत्न कर रहा हूँ| यह हमारीआदर्शोक्ति होना चाहिए| अगर आप कृपया मेरा आन्दोलन पूर्ण करने का प्रयत्न करेंगे... यह हमारा सदा-संग होगा|

हम्स्दुत को लिखे पत्र से --- लोस अन्जेलेस २२ जून, १९७०

विछोह की अनुभूतियाँ अलौकिक आनंद में बदल जाएँगी

कृपया विछोह में सुखी रहे| मैं अपने गुरु महाराज से १९३६ से बिछड़ा हुआ हूँ परन्तु मैं उनके साथ तब तक हूँ जब तक उनके निर्देशानुसार कार्य कर रहा हूँ| हम सभी को एक साथ श्रीकृष्ण कि संतुष्टि के लिए कार्य करना चाहिए जिससे विछोह की भावनाएं अलौकिक आनंद में बदल जाएँगी|

उद्धव को लिखे पत्र से --- बोस्टन ३ मई, १९६८

पाठ ११ गुरु-त्याग (आध्यात्मिक गुरु का त्याग)

पाठ के विषय

गुरु-त्याग के सिद्धांत
गुरु के सम्बन्ध में चिंताओं को प्रस्तुत करने की विधि
पुनर्दीक्षा
इस्कॉन में भक्ति जारी रखना

गुरु-त्याग की विधि एवं सिद्धांत

कोई शिक्षक जो अवैध कार्यों में लिप्त रहता है, त्याग करने के लायक है

आध्यात्मिक सूत्रों के अनुसार, जो आध्यात्मिक गुरु व्यभिचारी होता है, जिसने भेद-दृष्टि खो दी है त्याग करने के योग्य है|

भगवद्गीता २.५

अगर गुरु स्वयं को अयोग्य सिद्ध करता है तो वह त्याग करने योग्य है

शास्त्रों के अनुसार अगर गुरु स्वयं को अयोग्य साबित करता है तो वह त्याग करने योग्य है...

गुरोर् अप्यवलिप्तस्य कार्याकार्यं अजानतः
उपथप्रतिपन्नस्यपरित्यागो विधीयते

अगर गुरु भक्ति छोड़कर किसी और नीच पथ पर अग्रसर हो जाता है, इन्द्रिय तृप्ति के प्रति आसक्त हो जाता है और कर्तव्य-निष्ठता खो बैठता है, तबउसका त्याग कर देना चाहिए|

महाभारत, उद्योग पर्व १७९.२५

आप गलती से एक धूर्त के पास आ गए... उसका त्याग करें

फिर भी अगर कोई गलती से एक धूर्त के पास आ गया है, ग्रन्थ यहाँ है| जैसे ही आपक पता चले कि "यह धूर्त है और कृष्ण के विषय में कुछ नहीं जानता, मैं इसके पास आ गया हूँ, " उसका त्याग करें| यह शास्त्रों में वर्णित है|

गुरोर् अप्यवलिप्तस्य कार्याकार्यं अजानतः
उपथप्रतिपन्नस्यपरित्यागो विधीयते

अगर गलती से भी आप धूर्त व्यक्ति के पास आ गए हैं जिसे गुरु होने का ज्ञान नहीं, आप उसका त्याग कर सकते हैं. उनसे क्यूँ जुड़े रहे? उसका त्याग कीजिये|

कक्ष वार्तालाप --- जनवरी ३१, १९७७, भुवनेश्वर

जब गुरु स्वयं को योग्य सिद्ध करे तब, इस्कॉनअपने शिष्यों की रक्षा कैसे करता है? अपनी टिप्पणियां

नीचे लिखें

गुरु से सम्बंधित शिकायतें दर्ज करना

निम्नलिखित में से एक से एक शिष्य अपने गुरु से जुडी चिंताओं को बाँट सकते हैं:

- मंदिर एवं जी.बी.सी प्राधिकारी
- शिक्षा गुरु
- इस्कॉन रेसोल्व

आप आध्यात्मिक गुरु का संग त्यागते हैं...यहआपके लिए अच्छा नहीं है...

जब कोई अपने गुरु का त्याग करता है तब उसका भी एक कारण होता है| यह कारण शास्त्रों में वर्णित है, *गुरोर् अप्यवलिप्तस्य कार्याकार्यं अजानतः*|*कार्य अकार्य*| अगर एक आध्यात्मिक गुरु को यह नहीं पता कि क्या किया जाना चाहिए और नियमों के विरुद्ध कार्य करता है उस स्थिति में उसे त्याग देना चाहिए| परन्तु जबतक आपको यह न दिखे, आप आध्यात्मिक गुरु का संग नहीं त्यागें, यह आपके लिए लाभकारी नहीं है अपितु आपका पतन है|

श्रीमद भागवतम १.१६.३६ --- टोक्यो, जनवरी ३०, १९७४

जबतक आपके मन्त्र गुरु उपस्थित हैं आप कही और नहीं जा सकते...

एक दिन श्रील गदाधर पंडित ने पुनर्दीक्षाकी इच्छा का कारण बतलाया| उन्होंने कहा कि उन्होंने अपना गुरु द्वारा दिए गए इष्ट-मन्त्र एक अयोग्य व्यक्ति को बता दिया है जिसके कारण उनका मन अशांत हो गया है| “हे स्वामी, आप मुझे पुनर्दीक्षा करें उसी इष्ट-मन्त्र से जिससे कि मेरा मन आनदमय हो सके|” श्रीभगवान ने कहा, “जिन्होंने आपको इष्ट-मन्त्र प्रदान किया है उनके प्रति अपराध न करने के प्रति अत्यंत सावधान रहे| जब तक आपके मन्त्र गुरु उपस्थित हैं आप कहीं और नहीं जा सकते, अथवा मेरे पास भी नहीं आ सकते| यह आपके और मेरे दोनों के ही जीवन में समस्याएँलाएगा|”

श्री चैतन्य भागवात अन्त्य खंड अध्याय १० श्री पुण्डरीक विद्यानिधि की लीलाएं

बोधः कलुषितस्तेन दुरात्म्यं प्रकतीकर्तं
गुरुर्येनपरित्यक्तस तेन त्यक्तः पुराहरिः

“गुरु का त्याग करने से चरित्र अत्यंत दुर्बल हो जाता है और बुद्धि कलुषित हो जाती है| निश्चित ही ऐसा व्यक्ति भगवान श्रीहरि द्वारा अस्वीकृत किया जा चुका है| ”

ब्रम्ह-वैवर्त पुराण

पुनर्दीक्षा

एक भक्त जिसने जी.बी.सी. के निर्देशानुसार एवं वरिष्ठ इस्कॉनभक्तों से चर्चा कर गुरु का त्याग करने का निर्णय ले लिया है वह एक प्रमाणिक इस्कॉन गुरु से दीक्षा ले सकता है|इस्कॉन लॉ मैं वर्णित प्रथम एवं द्वितीय दीक्षा की सामान्य प्रक्रियाएँ अपनानी चाहिए|

इस्कॉन लॉ ७.२.६

गुरु त्याग करने के बाद व पुनर्दीक्षित होने से पहलेकिन-किन उपायों से एक शिष्य श्रील प्रभुपाद से जुड़ा

रह सकता है, सूचीबद्ध करें|

कृपया मेरी शिक्षाओं के माध्यम से मेरा सदैव स्मरण करें, और हम सदा संग रहेंगे

कृपया मेरी शिक्षाओं के माध्यम से मेरा सदैव स्मरण करें और हम सदा संग रहेंगे| जैसा कि मैंने श्रीमदभागवतं के प्रथम संस्करणों में लिखा है, "गुरु सदैव अपने निर्देशों कि द्वारा जीवित रहते हैं और शिष्य उनके साथ, " क्योंकि मैंने अपने गुरु कि सदैव सेवा की और उनकी शिक्षाओं का पालन किया, इसीलिए अब मैं उनसे कभी नहींबिछड़ता|

चिदानंद को लिखे पत्र से --- भक्तिवेदांत मैनर २५ नवंबर, १९७३

इकाई ४

सहयोगपूर्वक सम्बन्ध पूर्ण करना और समाकलन

पाठ १२   गुरु को प्रस्तुत करना

श्रील प्रभुपाद को प्रस्तुत करना

वर्तमान   इस्कॉन गुरुओं को प्रस्तुत करना

पाठ १३   इस्कॉन गुरुओं के साथ सम्बन्ध

गुरु   की दृष्टि से भेद करना

सहयोगपूर्ण संबंधों का विकास करना

पाठ १४   पाठ्यक्रम   पुनरावलोकन

पाठ १२   अपने गुरु को प्रस्तुत करना

पाठ के विषय

श्रील प्रभुपाद को प्रस्तुत करना

वर्तमान इस्कोन गुरुओं को प्रस्तुत करना

श्रील प्रभुपाद को प्रस्तुत करना

श्रील प्रभुपाद को इस्कॉन के संस्थापकाचार्यएवं पूर्व-प्रतिष्ठित शिक्षा-गुरु के रूप में भविष्य और वर्तमान में, प्रचारित करने के लाभ नीचे दिए बक्से में सूचीबद्ध करें|

इस्कॉनके वर्तमान गुरुओं को प्रस्तुत करना

इस्कॉन गुरुओं को प्रस्तुत करने के कुछ अनोप्युक्त तरीके नीचे दिए बक्से में सूचीबद्ध करें.

इस्कॉन गुरुओं को अनोप्युक्त ढंग से प्रस्तुत करने के संभव परिणामों को नीचे दिए बक्से में लिखें....

अतिरिख्त कथन   पाठ १२ अपने गुरु को प्रस्तुत करना

नए सदस्यों को श्रील प्रभुपाद की शरण में जाने का निर्देश दें

इस्कॉन लॉ ७.२.१ प्रथम (हरिनाम) दीक्षा

(पेज ३० देखें)

उपाधियों का उपयोग

इस्कोन के संस्करणों जैसे पुस्तकों, मग्ज़िनों, आवेदन पत्रों वें पम्फलेटों में प्रभुपाद केपूरा नाम उपाधियों सहित जैसे संस्थापकाचार्य एवं ॐ विष्णुपाद प्रदर्शित होना चाहिए|

इस्कॉन लॉ २.३.१

नाम-पट्टिकाएं

उन इस्कॉन मंदिरों एवं इमारतों में श्रील प्रभुपाद का नाम पहले से ही नहीं लिखा हुआ है| उनमे ऐसे बिल्ले लगवाय जाएँ जिनपर श्रील प्रभुपाद का नाम उनके उपाधि समेत अर्थातसंस्थापकाचार्य अंतर्राष्ट्रीय कृष्ण भावनामृत संघ लिखा हुआ होना चाहिए| यह भक्तिवेदांत बुक ट्रस्ट की समस्त इमारतों पर लिखा होना चाहिए एवं श्रील प्रभुपाद द्वारा स्थापित किसी और संस्था कीइमारतों पर भी|

इस्कॉन लॉ २.३.३

व्यक्ति को अपने गुरु छुपाना चाहिये...

गोपयेद देवतं इतम गोपयेद गुरुम आत्मनः
गोपयेक च निजाम मंत्रम गोपएं निज-मालिकाम

एक व्यक्ति को अपने इष्ट-देव, अपने गुरु, अपने मन्त्र एवं अपनी जप माला सभी को छुपकर रखना चाहिए|

हरी भक्ति विलास, श्लोक २.१४७

गुरु का सार्वजानिक प्रदर्शन, पोस्टरों, जप थैलियों एवं कमीजों इत्यादि के द्वारा...

इस्कॉन के शिक्षा एवं दीक्षा गुरुओं के शिष्यों को सार्वजानिक रूप से गुरु की तस्वीरों वाली कमीजें, जप-बैज, टोपियाँ इत्यादि धारण नहीं करनी चाहिए| (श्रील प्रभुपाद क आलावा)

इस्कॉन लॉ/ अनुशंशा ६.४.८ अर्चन एवं सदाचार

इस्कॉन शिक्षा एवं दीक्षा गुरुओं की तस्वीरें

अपने इस्कॉन के शिक्षा एवं दीक्षा गुरुओं कीतस्वीरें निजी रूप से मंदिर निवासी भक्त अपने पास रख सकते है परन्तु वे इस्कॉन में सार्वजनिक प्रदर्शन हेतु नहीं है| विशेष प्रचार कार्यक्रमों एक अपवाद हैं|

इस्कॉन लॉ ६.४.८ अर्चन एवं सदाचार

वेबसाइटएं प्रमुखता से श्रील प्रभुपाद कीछविदिखाएं

इस्कॉन के सभी अधिकारीयों का यह दायित्व है कि इस्कॉनकेंद्र द्वारा संचालित सभी वेबसाइटओं केप्रथम पेज पर श्री प्रभुपाद की छवि प्रमुख रूप से प्रदर्शित की जाए| यह छवि किसी भी और व्यक्ति की छवि से बड़ी होनी चाहिए (जैसे कि जी.बी.सी, कन्द्रीय अध्यक्ष अथवा गुरु)| श्रील प्रभुपाद उनके नाम एवं उपाधि के साथ ही संबोधित किये जाने चाहिए ‘‘कृष्ण कृपामूर्ति ऐ.सी. भक्तिवेदांत स्वामी प्रभुपाद, संस्थापकाचार्य अंतर्राष्ट्रीय कृष्णभावनामृत संघ|’’

३०४, श्रील प्रभुपाद के स्थान पर जी.बी.सी का कथन (मार्च २०१३)

पाठ १३ इस्कॉन के अंतर्गत सम्बन्ध

पाठ केविषय

गुरु के बल पर भेद करना

सहयोगपूर्ण समंध विकसित करना

गुरु के आधार पर भेद करना

भेद-भाव

"दो अलग-अलग वस्तुओं में अंतर का दर्शन करना, दृष्टिकोण अथवा समझ के माध्यम से|"

ऑक्सफ़ोर्ड इंग्लिश डिक्शनरी दूसरा संस्करण, आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस

"भेद-भाव अतार्किक व्यवहार है एक व्यक्ति के साथ जो सामान्यतः उनके एक समूह अथवा वर्ग से सम्बंधित होने से प्रेरित होता है... इसमें व्यक्ति को कुछ सुविधाओं से वंचित कर दिया जाता है जो अन्य वर्गों के व्यक्तियों को प्राप्त होती हैं|"

समाज-शास्त्र की भूमिका, ७वां संस्करण, न्यू यॉर्क,

डब्लू. डब्लू. नॉर्टन एवं कंपनी २००९ पेज ३२४

उस समय का वर्णन करें जब आपने इस्कॉन में शिक्षा एवं दीक्षा गुरु के आधार पर अनोप्युक्त भेद-भाव

देखा था

गुरु के आधार पर अनोप्युक्त भेद-भाव के कारण होने वाली दीर्घकालीन समस्याओं का वर्णन करें

सहयोगपूर्ण सम्बन्ध स्थापित करना

अपनी दृष्टिकोण का वर्णन करें इस्कॉनकीस्थिति का जब इस्कॉनके सभी शिष्य एवं गुरु आपस में सकारात्मक एवं सहयोग-पूर्ण सम्बन्ध बनाये रखेंगे...

मैं आपकी आपसी मित्रता से इतना खुश हूँ की मैं आपके सर्व-सौभाग्य का आशीर्वादकरता हूँ

श्रीभगवान ने कहा: प्रिय राज-पुत्रों, मैं आपके मध्य मित्रता से बहुत प्रसन्न हूँ| आप सभी एक ही कार्य में संलग्न हैं---भक्तिमय सेवा| मैं आपकी आपसी मित्रता से इतना प्रसन्नहूँ कि मैं आपके सर्व-सौभाग्य का आशीर्वाद देता हूँ|अब आप मुझसे कोई भी वरदान मांग सकते हैं|

श्रीमद्भागवतम् ४.३०.८, भगवान का रजा प्रचिनाबर्हिशत के पुत्रों से वार्तालाप

इस संस्था को एक साथ सखने हेतु सहयोग करें, मेरे जाने के पश्च्यात

“आपक मेरे प्रति प्रेम,” श्रील प्रभुपाद कहते हैं, “इसमें दिखेगा कि आप संस्था को एक साथ रखने के लिए , मेरे जाने के बाद कितना सहयोग करते हैं|”

श्रील प्रभुपाद लीलामृत खंड ६, ५२. “मैंने अपना कार्य कर दिया है”

संघ में शक्ति है और विभाजन में पतन

चैतन्य महाप्रभु ने स्वयं हमारा सहयोग माँगा था| वे परमेश्वर हैं, स्वयं कृष्ण| इसीलिए सहयोग बहुत ही महत्वपूर्ण है| किसी को भी यह नहीं सोचना चाहिए कि “मैं कितना सक्षम हूँ, अकेला ही पर्याप्त हूँ|” नहीं, केवल सहयोग के बल पर ही हम कुछ बड़ा कर सकते हैं| “संघ में शक्ति है और विभाजन में पतन|” इसीलिए कृष्ण भावना का प्रचार दृढ़ता से करें, और कृष्ण आपकी सहायता करेंगे| वे सर्वाधिक शक्तिमान हैं| इसीलिए, हमसभी को भी एक साथ रहना चाहिए|

राधा दामोदर संकीर्तन पार्टी के साथ कक्ष वार्ता से
मार्च १६, १९७६, मायापुर

आपने इस कोर्स से क्या सीखा?

परिशिष्ट

१. अतिरिख्त कथन
२. श्रील प्रभुपाद के स्थान पर जी.बी.सी का कथन (मार्च २०१३)
३. दीक्षा-गुरु की आवश्यक योग्यताएं
४. इस्कॉन में दीक्षा के लिए योग्यताएं

५. गुरु के व्यवहारों के मानक
६. पतित गुरु का त्याग
७. आधिकारिक संतुलनस्थापित करना
८. कक्षा में व्यव्हार के मानदंड

परिशिष्ट १ अतिरिख्त कथन

पाठ १ स्वागत एवं परीचय

“हमें केवल अपने गुरु की ही आज्ञा का पालन करनाहै...”

हमें केवल अपने गुरु की ही आज्ञा का पालन है, कृष्णभावनामृत का प्रचार एवं वैष्णव का अनुसरण करना है|आध्यात्मिक गुरु दोनों श्रीकृष्ण एवं वैष्णवों का प्रतिनिधि होता है: इसीलिए आध्यात्मिक गुरु के आदेशों का पालन करने व हरे कृष्ण महामंत्र का जाप करते रहिये, सब कुछ शुभ होगा|

श्रीमाद्भागवतं ४.२३.७ के तात्पर्य से

“यह प्रशिक्षण संस्थान होना चाहिए..”

जैसे ही कोई मेरे पास शिष्य बनने के लिए आता है, मैं उससे कहता हूँ “आपको यह आदतें छोडनी होंगी|” जब वह सहमत होता है तब मैं उसे स्वीकार करता हूँ| और इसी प्रकार मेरे पास कुछ प्रशिक्षित शिष्य हैं|इसीलिएशास्त्रों पर आधारित एक प्रशिक्षण संस्थान होना चाहिए| तब सम्पूर्ण स्थिति बदलने कीसम्भावना है|

राज्यपाल से वार्तालाप --- अप्रैल २०, १९७५, वृन्दावन

पाठ ५ गुरु-पादाश्रय

यस्यदेवेपराभक्तिर यथादेवेतथागुरौ
तस्यैतेकथिता ह्यर्थाः प्रकाशन्तेमहात्मनः

“उन महात्माओंपर जिन्हें गुरु एवं भगवान पर अगाध श्रद्धा है, सम्पूर्ण वैदिक ज्ञान अपनेआपप्रदर्शित हो जाता है|”

श्वेताश्वर उपनिषद् ६.२३

गुरु को आहुति सम्पूर्ण समर्पण से देनी चाहिए...

एक शिष्य को आध्यात्मिक गुरु की साधारण सेवक कीतरह सेवा करनी चाहिए और जो कुछ भी उसके पास है वह गुरु कोअर्पित कर देना चाहिए|*प्राणैर अर्थैर धिया वाचा*| सभी के पास उनका जीवन, अर्थ, उनकी बुद्धि एवं उनकेवचन हैं और सभी को गुरु के माध्यम से भगवान कोअर्पित करना चाहिए| कर्त्तव्य के आधार पर सब कुछ श्री गुरु को अर्पित करना चाहिए अपने ह्रदय से...बाह्य रूप से प्रसिद्धि प्राप्त करने के लिए नहीं...

श्रीमद्भागवतम्७.७.३०-३१

एक प्रमाणिक गुरु की शरण ग्रहण करें एवं सपूर्ण ह्रदय लगाकर उनकी सेवा करें

आध्यात्मिक प्रगति का सबसे आसन मार्ग है एक प्रमाणिक गुरु की शरण लेकर उसकी ह्रदय से सेवा करें| यह सफलता की कुंजी है जैसा की श्रील विश्वनाथ चक्रवर्ती ठाकुर ने अपनी प्रार्थना गुरुवाष्टकम में लिखा है *यस्य अप्रसादाद भागवत प्रसादः*| गुरु की सेवा कर कृपा प्राप्त करने से भगवान कीकृपा प्राप्त हो जाती है| अपने पति कर्दम मुनि जो एक भक्त थे, कीसेवा करने से देवहुति को भी उनकी आध्यात्मिक उपलब्धियों का लाभ मिल गया था| इसी प्रकार प्रमाणिक गुरु की सेवा करने से भगवान एवं गुरु की कृपा साथ-साथ प्राप्त हो जाती है|

श्रीमद्भागवतम ३.२३.७

पाठ ७ दीक्षा की प्रतिज्ञाएँ

गुरु एवं उनके निर्देशों का पालन करने के प्रति लगाव

आपको यह समझना चाहिए किदीक्षा के समय हवन कुंड के समक्ष आपने आध्यात्मिक गुरु को एक प्रतिज्ञा अर्पित की थी| आपको इस प्रतिज्ञा का उल्लंघन नहीं करना चाहिए| आप कहते हैं कि आपको

भक्तो का संग पसंद है परन्तु आप भौतिक आकर्षण से कैसे बचेंगे? जब आप नियमित एवं अपराध रहित तरीके से भगवान का नाम नहीं जप रहे हैं? आध्यात्मिक गुरु एवं उनके निर्देशों के प्रति लगाव दोनों अभिन्न हैं| मेरे यह आज्ञा है कि मेरे सभी शिष्य प्रतिदिन मंगल आरती में उपस्थित हों एवं १६ माला हरे कृष्ण महामंत्र का जप करें|

यह जीवन बहुत ही अस्तिर है. किसी भी क्षण म्रत्यु हो सकती है, इसीलिए वरिष्ठ अधिकारीयों, आध्यात्मिक गुरु एवं श्री कृष्ण के भगवद-गीता के निर्देशों के सदैव निकट रहना चाहिए.

राधाकांत को लिखे पत्र से --- वृन्दावन २० अगस्त, १९७४

यह रस्साकशी है

यह रस्साकशी है| इसीलिए माया से कभी न घबराएं| केवल जप को बहतर करें और आप विजयी होंगे| बस,*नारायण-पराः सर्वे न कुतास्चन बिभ्यति (श्रीमद भागवतम ६.१७.२८)*| हम माया से निडर हैं क्योंकि श्रीकृष्ण यहाँ हैं| जी हाँ, कृष्ण कहते हैं *कौन्तेय प्रतिजानिही न में भक्त प्रनाश्यन्ति (गीता ९.३१)*| आप बस घोषणा करें, “मेरे भक्त का माया द्वारा कभी विनाश नहीं होगा|” माया कुछ नहीं कर सकती| हमें केवल बलशाली बनना है| और बल क्या है? हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे, ऊँचे स्वर में जाप करें| जी हाँ|

भगवद गीता ३.६-१० ---- लोस अन्जेलेस, दिसंबर २३, १९६८

पाठ १२ गुरु को प्रस्तुत करना

जैसे कि हम अपने शिष्यों को अपना नाम जपने को नहीं कह रहे “भक्तिवेदांत स्वामी, भक्तिवेदांत स्वामी” नहीं| वे हरे कृष्ण जप रहे हैं|*हरित्वेना समस्त-शस्त्रैर उक्तः*- “गुरु श्री कृष्ण के समान सम्मान के योग्यहोते हैं|” परन्तु इसका यह अर्थ नहीं कि मैं उन्हें अपने नाम का जप करने को कहूँ, “भक्तिवेदांत स्वामी, भक्तिवेदांत स्वामी” यह क्या है? हम सिखा रहे है, “हरे कृष्णा जपिए|” हरेर नाम, हरेर नाम...

श्रील प्रभुपाद की प्रतःकालीन सैर से, २९ मार्च १९७४, बम्बई

खुद को बार-बार महाप्रभु का भक्त बताना

खुद को बार-बार महाप्रभु का भक्त बताना “मैं गौरांग का, मैं गौरांग का” कहकर, पर्याप्त नहीं है| जबकि वे जो महाप्रभु की शिक्षाओं का पालन कर रहे हैं वे ही उनके अनुयायी होने का फल प्राप्त करेंगे|

श्रील जगदानंद पंडित, प्रेम विवर्त ८.६

अगर व्यवसाय दोनों पक्षों से उत्तम है... तब कृष्णभावनामृत बहुत, बहुत आसन है व्यक्ति को यह समझने के प्रति गंभीर रहना चाहिए, और उन्हें एक योग्य महात्मा के पास जाना चाहिए|तब यह व्यवसाय सफल होगा| यह वैदिक विधि है ... गुरु के एवं शिष्य कीऔरसे, दोनों ओर से अगर सौदा उत्तम है तब ही कृष्णभावनामृत में प्रगति अत्यंत सरल होगी|

श्रीमद भागवतम १.५.२९, पर प्रवचन से,
वृन्दावन १० अगस्त, १९७४

परिशिष्ट २

श्रील प्रभुपाद के स्थान पर जी.बी.सी. का कथन

३०३. श्रील प्रभुपाद के स्थान पर जी.बी.सी. का कथन (मार्च २०१३)

या कि श्रील प्रभुपाद के पूर्व प्रतिष्ठित स्थान, इस्कॉन के शिक्षा एवं दीक्षा गुरुओं, एवं सभी अन्य इस्कॉन सदस्यों के सम्बन्ध में एक एक संक्षिप्त कथन द्वारा स्पष्ट किये जाने की आवश्यकता है औरइस्कॉन के अंतर्गत शिक्षा एवं दीक्षा गुरुओं के कार्यों को भी स्पष्टता से वर्णित करने की भी:

संकल्प:

जी.बी.सी. पुष्टि करती है:

इस्कॉन के संस्थापकाचार्य, पूर्व-प्रतिष्ठित शिक्षक एवं सर्वोच्च अधिकारी होने के नाते श्रील प्रभुपाद काइस्कॉन के प्रत्येक भक्त के साथ विशिष्ट सम्बन्ध हैं| परम परमेश्वर भगवान श्रीकृष्ण सर्वोच्च गुरु हैं और उन्ही की कृपा गुरु परंपरा के माध्यम से प्राप्त होती है| अंततः एक भक्त का उद्धार श्रीकृष्ण ही करते हैं उनकी कृपा की अभिव्यक्तियों के विभिन्न संयोजनों द्वारा| इनके अंतर्गत निम्नलिखित आते है, चैत्य गुरु, श्रील प्रभुपाद, गुरु परंपरा, एक दीक्षा गुरु, अन्य शिक्षा गुरु, भगवन्नाम, शास्त्र एवं भक्ति के नौ अंग| भगवान कीकृपा इन सभी तक सीमित नहीं रहती|

इन सहयोगी तत्त्वों के अंतर्गत, श्रील प्रभुपाद इस्कॉन के संस्थापकाचार्य होने के कारण इस्कॉन के सभी सदस्यों के पूर्व-प्रतिष्ठितशिक्षा गुरु हैं|इस्कॉनकीसभी पीढ़ियों के सदस्य श्रील प्रभुपाद की शरण ग्रहण

करनेके लिए प्रोत्साहित किये जाते हैं| यह सभी इस्कॉन सदस्यों का अधिकार है एवं वे प्रोत्साहित किये जाते हैं कि वे श्रील प्रभुपाद की पुस्तकों, शिक्षाओं, सेवा एवं उनके इस्कॉनसंघ के माध्यम से निजी संबध स्थापित करें|

श्रील प्रभुपाद द्वारा उनकी पुस्तकों, प्रवचनों एवं शिक्षाओं में दिए गए उपदेशोंका पालन करने के लिए इस्कॉन के सभी नेताओं एवं शिक्षा व दीक्षा गुरुओ को जी.बी.सी के अंतर्गत सहयोगपूर्ण तरीके से कार्य करना चाहिए| मोटे तौर पर इस्कॉन के सभी नेताओं, शिक्षा व दीक्षा गुरुओं का कार्य श्रील प्रभुपाद को उनके गुरु महाराज श्रील भक्ति सिद्धांत सरस्वती ठाकुर और ब्रम्हा मध्व गौडीय सम्प्रदाय की सेवा करने में सहायता करना है| जो इस्कॉनमें शिक्षा एवं दीक्षा गुरु के रूप में कार्यरत है उन्हें चाहिए कि वे अपने वचन एवं आचरण से श्रील प्रभुपाद कीशिक्षाओं का प्रचार करने में अनुकरणीय हों| शिक्षा गुरु श्रील प्रभुपाद एवं गुरु परंपरा कि ओर से आध्यात्मिक निर्देश प्रदान करते हैं| दीक्षा गुरु श्रील प्रभुपाद एवं गुरु परम्परा के सेवार्थ आध्यात्मिक निर्देश, प्रेरणा, दीक्षा, आध्यात्मिक नाम और आगे चलकर एक योग्य शिष्य को,गायत्री मन्त्र प्रदान करते हैं|

श्रील प्रभुपाद ने स्पष्ट रूप से व्याख्यान दिया है कि जो व्यक्ति कृष्ण भावनामृत का सख्ती से पालन कर रहे हैं वे मुक्त स्थिति पर ही हैं और इसी कारण शुद्ध भक्त हैं जबकि वे वास्तव में मुक्त न भी हों| (यह शुद्ध भक्ति किसी के पद से नहीं अपितु उसे साक्षात्कार से होती है|) page 66 ends

इस्कॉन के अंतर्गत जो शिक्षा एवं दीक्षा गुरु की सेवा प्रदान करते हैं उन्हें चाहिए कि वे श्रील प्रभुपादके निर्देशों के सख्ती से पालन करें और जबतक वे ऐसा कर रहे वे मुक्त स्तर पर हैं| तब वे श्रील प्रभुपाद एवं गुरु परंपरा की उनके कृपा के बल पर, एक प्रमाणिक प्रतिनिधि के रूप में, सेवा कर पायेंगे| और साथ-साथ यह समझना चाहिए कि अगर यहशिक्षाएवं दीक्षा गुरु अगर सख्ती से सिद्धांतों का पालन नहीं करेंगे तब उनका पतन हो जायेगा| अर्थात दीक्षा गुरु के रूप में कार्य करने कर अर्थ है कि जी.बी.सी के अंतर्गत अन्य अधिकारीयों से तालमेल बैठते हुए एक “नियमित गुरु” के रूप में कार्य करें जैसा कि श्रील प्रभुपाद के उपदेशों से प्राप्त है|

इन तीन सिद्धांतों की चर्चा कानिष्कर्ष होते हुए भी यह वाक्य अंतिम नहीं है|भविष्य में जी.बी.सी.श्रीलप्रभुपाद, हमारे पूर्व-प्रतिष्ठित शिक्षा गुरु, शिक्षा एवं दीक्षा गुरुओं की भूमिकाओं एवं दायित्वों एवं इस्कॉन सदस्यों एवं नवदीक्षितोंके दायित्वों, को अधिक स्पष्ट करने के लिए कथन प्रदान कर सकती है|

संकल्पः

सभी जी.बी.सी. सदस्यों को यह संकल्प सभी इस्कॉन सदस्यों कीशिक्षा हेतु उपयुक्त माध्यमों से सभी इस्कॉन मंदिरों, समुदायों एवं जनसमूहों को यह संकल्प वितरित करें| यह कथन इस्कॉन के प्रारंभिक पाठ्यक्रमों, *इस्कॉनडिसाईपल्सकोर्स*, *स्पिरिचुअल लीडरशिप सेमिनार*: इस्कॉनमें गुरु होना एवं अन्य सार्थक स्थानों पर|सभी दीक्षार्थियों के लिए यह कथन पढना उनके दीक्षा-परीक्षा का भाग होगा|

आध्यात्मिक संबंधों पर अन्य विवरण आध्यात्मिकइस्कॉन प्राधिकार का समाकलन पत्रिका में पाया जा सकता है जो सन २०१२ में जी.बी.सी. द्वारा मान्यता प्राप्त है|

३०४ इस्कोन मंदिरों कि वेबसाइटओं में संस्थापकचार्य को प्राथमिकता (मार्च २०१३)

इस्कॉन मंदिरों की कई वेबसाइटएं वर्तमान समय में कृष्णा कृपामूर्ति ऐ. सी. भक्तिवेदांत स्वामी श्रील प्रभुपाद के व्यक्तित्व एवं शिक्षाओं को प्राथमिकता से अपने होम पेज पर प्रदर्शित नहीं कररही हैं| कई में श्रील प्रभुपाद कीछवि भी नहीं है| कुछेक में श्रील प्रभुपाद के प्रवचनों इत्यादि कीलिंक दी गयी हैं| श्रील प्रभुपाद की पूर्व-प्रतिष्ठित संस्थापकचार्य की पदवी को इन वेबसाइटओं में गंभीरता से नहीं दिखाया जा रहा है| कुछ साइटों मेंश्रील प्रभुपाद एवं इस्कॉनके नाम बहुत ही बारीक अक्षरों में लिखे होते हैं: जबकि वर्तमान में श्रील प्रभुपाद का पदवी सहित नाम लिखने की इस्कॉनकेन्द्रों की साइटों में कोई अनिवार्यता नहीं है|

संकल्प:

यह केंद्र अधिकारीयों कादायित्वहै कि उनके इस्कॉन केंद्र द्वारा चलायी जा रहीप्रत्येक वेबसाइट के परिचायक (होम) पेज में श्रील प्रभुपाद की छवि दिखाई जाएँ| यह छवि उस पेज में मौजूद किसी और व्यक्ति कीछवि (जैसे जी.बी.सी., केंद्रीय आध्यक्ष व गुरु)से बड़ी होनी चाहिए. श्रील प्रभुपाद की छवि उनके पूरे नाम एवं पदवी समेत होनी चाहिए जैसे *कृष्णकृपामूर्ति ऐ.सी. भक्तिवेदांत स्वामी प्रभुपाद, संस्थापकचार्य अंतर्राष्ट्रीय कृष्णभावनामृत संघ, अथवा इस्कॉनसंस्थापकाचार्य कृष्णकृपामूर्ति ऐ. सी. भक्तिवेदांत स्वामी प्रभुपाद* या इसका उपयुक्त अनुवाद|

सभी वेबसाइटओं में ऐसे लिंक्स प्राथमिक रूप से प्रदर्शित होनी चाहिए जिससे एक आकस्मिक दर्शक को श्रील प्रभुपाद की शिक्षाओं एवं चलचित्रों की सरलता से उपलब्धि हो सके| श्रील प्रभुपाद का नाम एवं पदवी उनकी छविके साथ स्पष्ट रूप से प्रदर्शित हो | दुसरे शब्दों में श्रील प्रभुपाद की छवि में वही होने चाहिए| श्रील प्रभुपाद का नाम सरलता से पढने योग्य शैली में लिखा होना चाहिए| सभी इस्कॉन केन्द्रों को यह निर्देश पारित होने के ९० दिनों के भीतर लागू करना होगा|

३०५. "इस्कॉन अधिकार पंक्तियोंके मध्य संतुलन स्थापित करना"पत्रअवलोकनयोग्य (इस्कॉन लॉ)

या कि इस्कॉन के विभिन्न प्राधिकारियों के मध्यस्थ संतुलन के आवश्यकता है;

या किदीक्षा गुरु भक्तों के जीवन के महत्वपूर्णआद्यात्मिक प्राधिकारी हैं अन्य भक्त भी एक महत्वपूर्ण किरदार निभाते हैं;

या कि जी.बी.सी. का"*इस्कॉन के प्राधिकार पंक्तियों के मध्य संतुलन*" नामक यहवर्णित करता है कि किस प्रकार गुरु एवं अन्य इसकों प्राधिकारियों की सेवाओं के मध्य संतुलन स्थापित किया जाए|

संकल्प:

"*इस्कॉन के प्राधिकार पंक्तियों के मध्य संतुलन*" संकल्प दीक्षा क पहले सभी हरिनाम दीक्षा अभ्यार्थियोंको पढना आवश्यक है| इसकी जांच करना सिफारिश करने वालेजी.बी.सी. एवं दीक्षा देने वाले गुरु का दायित्व है| तीन महीनो के अंतर्गत सभी जी.बी.सी. जोनल सेक्रेटरी:

- संकल्प का अनुवाद उन भाषाओँ में करें जिसमे दीक्षा इक्छुकों को सहूलियत हो|
- संकल्प की प्रति प्रत्येक मान्य दीक्षा-गुरुओं, राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय अधिकारीयों, मंदिर अध्यक्षों, प्रचारकों एवं अन्य अधिकारीयों को उपलब्ध करना चाहिए|

३०६. दीक्षा हेतु परीक्षा से सम्बंधित विधेयक (इस्कॉन लॉ)

जब श्रील प्रभुपाद के स्थान पर जी.बी.सी. का कथन एवं "इस्कॉन अधिकार क्षेत्रों में तालमेल" जी.बी.सी. द्वारा मान्यता प्रदान कर सभी दीक्षा अभ्यार्थी भक्तों के लिया पढना अनिवार्य किया गया है एवं सभी छात्र इन पत्रों को समझ गए हैं तथा इस्कॉनलॉ ७.२.१.१.६ के अनुसार सभी छात्रों को दीक्षा लेने के पूर्व इन पत्रों पर आधारित परीक्षा सभी छात्रों के लिए अनिवार्य की गयी है| यह परीक्षा सभी छात्रों की इन पत्रोंकी समझ ज्ञात करने का अच्छा माध्यम है|

संकल्प:

अ) इस्कॉन लॉ ७.२.१.१.६ के अनुसार आयोजित परीक्षा में निम्नलिखित ३ प्रश्न पूंछे जायेंगे सभी दीक्षा-इच्छुक छात्रों से हरिनाम दीक्षा होने के पहले:

१४. क्या आपने जी.बी.सी द्वारा पारित *श्रील प्रभुपाद के स्थान* नामक पत्र पढ़ा?

१५. क्या आपने "इस्कॉन के अधिकार-क्षेत्रों में संतुलन" नामक पत्र पढ़ा?

१६. क्या आपने "इस्कोन के अधिकार-क्षेत्रों में संतुलन" नामक पत्र के मुख्य बिंदु समझ लिए?

और बी) गुरु सेवा कमिटी जी. बी. सी.एवं गुरुओ के अनुसार दीक्षा परीक्षा में संशोधन कर सकते हैं|

page 68 ends

परिशिष्ट ३

दीक्षा-गुरु की अनिवार्य योग्यताएं

इस्कॉनलॉ ६.२.१ जी.बी.सी. २०१० के संकल्प

१. कमसेकम १० साल का दीक्षित शिष्य हो
२. सख्ती से ४ नियमों का पालन कर रहा हो, प्रातः-कालीन कार्यक्रम में उपस्थित हो रहा हो एवं १६ माला जप कर रहा हो तथा १० साल से अच्छा आचरण कर रहा हो|
३. वैष्णव सिद्धांतो के विरुद्ध कार्य करने उसके चरित्र में न हो|
४. निम्नलिखित अवगुणों से मुक्त हो:
    १.१ प्रतिष्ठा, घमंडी एवं व्यक्तिगत रूप से स्वार्थी
    १.२ निसिद्धाचार, वैष्णव सिद्धांतों के विरुद्ध आचार से
    १.३ कूटनीतिज्ञ होना
    १.४ व्यक्तिगत पूजा की आशा होना
    १.५ लाभ, व्यक्तिगत लाभ की आशा होना
५. प्रचार कार्य में दक्ष हो
६. शास्त्रज्ञान में दक्ष हो
७. सिद्धांत पर आधारित शास्त्रज्ञान, सख्त-परंपरागत रूप में बिना कुछ जोड़-घटा कर प्रचार करे|
८. प्रचार एवं परामर्श में प्रभावी हो|
९. इस्कॉन, श्रील प्रभुपाद एवं उनकी शिक्षाओं को छोड़कर किसी और के प्रति निष्ठावान न हो|
१०. श्रील प्रभुपाद एवं उनके आन्दोलन के प्रति समर्पण प्रदर्शितकरे पुस्तक वितरण एवं अन्य इस्कॉन परियोजनाओं को स्थापित करने एवं बनाये रखने के माध्यम से|
११. जी. बी. सी. को अंतिम प्रबंधन अधिकारी के रूप में माने, जी. बी. सी. के अनुसार चले और उसका समर्थन करे|
१२. २४ घंटे भक्ति कार्य में किसी भी इस्कॉन केंद्र अथवा किसी और इस्कॉनप्रमाणित प्रचार संस्था में संलग्न रहे|
१३. कम से कम पिछले दस सालों में जघन्य अपराधों में लिप्त न हो जैसे:
    १३.१ आर्थिक अपराध जिनके कारण बड़ी आर्थिक राशियों का नुक्सान हुआ हो|

१३.२ धन एवं संपत्ति के असावधानी-पूर्ण प्रबंधन के कारण क़ानूनी गतिविधि का कारण बना हो|

१३.३ अमान्य निर्णयों के द्वारा बड़ी धनराशी नष्ट की हो|

१३.४ गैर-क़ानूनी एवं गी.बी.सी. द्वारा अमान्य किसी और अनैतिक कार्य में लिप्त होना|

१४. गुरु-सेमिनार में उपस्थिति भी एक अनिवार्यता है|

विवेकाधीन योग्यताएं:

आध्यात्मिकउपाधियाँ जैसे भक्ति शास्त्री, भक्ति वैभव एवं भक्तिवेदांत (जब उपलब्ध हो) संस्तृत किये जाते हैं| गुरु के रूप मेंइस्कॉन में सेवा करने के लिए अनापत्ती प्रमाणपत्र प्राप्त करने के लिए अनिवार्य किये जाने चाहिए|

उनके चरित्र, कार्यक्रम एवं परिस्थितियों में ऐसा कुछ बनने भी नहीं होना चाहिए जिससे उनके गुरु की क्षमता पर संदेह उत्पन्न हो|

व्यक्तिगत स्थिति में किसी भी असामान्य कार्य में लिप्त न हो|उदाहरणस्वरूप, असमय परिवारिक स्थिति जिससे उनके गुरु-बनने-सम्बन्धी कार्यों में बाधा आये अथवा उनके समर्थकों एवं शिष्यों को कोई आपत्ति या परेशानी हो|

सदैव ज़िम्मेदार, इमानदार एवं एवं माननीय हो समस्त साधारण लेन-देन के कार्यों में|

page 69 ends

परिशिष्ट ४

इस्कोन के गुरुओं के आचरण के मानक

इस्कॉन लॉ ६.४.३

- सभी भक्तों के लिए श्रेष्ठ उदाहरण प्रस्तुत करे|
- अपने शिष्यों को श्रील प्रभुपाद के निर्देशों के प्रति मार्गदर्शित करे जैसे कि इस्कॉन में पढाई एवं उसका पालन किया जाताहैं|
- सभी इस्कॉन भक्तों के गुरु, श्रील प्रभुपाद एवं श्रीकृष्ण के प्रति श्रद्धा को दृढ़ करे|
- सभी गैर-दीक्षित को अपने पसंद के गुरु से दीक्षा प्राप्त करने की पूर्ण-स्वंत्रता प्रदान करे|
- शिष्यों की संख्या बढाने के लिय अपनाप्रचार न करे|
- सम्पूर्ण दीक्षा प्रक्रिया पूर्ण हुए बिना दीक्षा नहीं दे|
- इस्कॉन-गुरु द्वारा प्राप्त की गयी दक्षिणा इस्कॉनकी संपत्ति है इसीलिए उसे कृष्ण-भावनामृत कार्यों में उपयोग करना चाहिए| सारी गुरु दक्षिणा एक खाते में जमा की जानीचाहिए, बहतर होगा इस्कॉन के खाते में कमसेकम दो हस्ताक्षरों के साथ और सटीक अभिलेख रखे जाने चाहिए|
- किसी भी शिष्य के लिए एक गुरु-दक्षिणा राशी निर्धारित नहीं करनी चाहिए, न ही दीक्षा पाने के लिए कोई आर्थिक प्रतिबद्धता होनी चाहिए|
- व्यक्तिगत सेवा एवं यात्रा हेतु सहायक भक्तों की संख्या को घटना चाहिए| गुरु को कभी विपरीत लिंग के अविवाहित शिष्यों एवं विवाहित विपरीत लिंग के शिष्यों को अपने पति/पत्नी के बिना अपनी व्यक्तिगत सेवा में नहीं लगाना चाहिए और, कभी भी विपरीत लिंग के शिष्य के साथ एकांत में नहीं बैठना चाहिए|

६.४.३.२ जी. बी. सी. से समबन्ध के मानक

जी. बी. सी. को श्रील प्रभुपाद का उपयुक्त वंशज एवं अंतिम प्रबंधन अधिकारीके रूप में सम्मान देना चाहिए एवं उनके प्रति सेवक भाव होना चाहिए|

श्रील प्रभुपाद की परंपरा में गुरु होने के कारण ,इस्कॉन में कार्य करने के लिए उन्हें श्रील प्रभुपाद का समर्थक होना आवश्यक है| इसीलिए उन्हें जी. बी. सी. को अधिकारी समझा जाना चाहिए एवं उनके कथनानुसार चलना चाहिए|

जी. बी सी. द्वारा कीगयी कोई अनुशासनात्मक कार्यवाही को स्वीकार करना चाहिए, दीक्षा न देने को मिलाकर|

६.४.३.३ जी. बी. सी. क्षेत्रीय अधिकारीयों स संबंधों के मानक

जी. बी. सी. क्षेत्रीय अधिकारीयों (जोनल सेकरेटरी) के पर्यवेक्षण एवं सहयोग में कार्य करे|

अपना निवास बिना जी. बी. सी. क्षेत्रीय अधिकारीयों से सलाह किये नहीं बदलेंगे न ही ऐसे कोई कार्य जिससे मंदिर एवं भक्तों को समस्या हो|

जी. बी. सी. क्षेत्रीय अधिकारीयों को अपने आर्थिक खातं का वार्षिक विवरण दे|

६.४.३.४ इस्कोन के आध्यात्मिक अधिकारीयों से संबंधों के मानक

सभी इस्कॉनअधिकारीयों के प्रति जवाबदेह एवं सहयोगपूर्ण रहे|

किसी भी ऐसे भक्त को दीक्षित ना करे जो उपयुक्त इस्कॉनआध्यात्मिक अधिकारीयों से सिफारिश प्राप्त ना हो|

page 70 ends

शिष्यों एवं अन्य भक्तों को सदाचार पालन एवं इस्कॉन अधिकारीयों के साथ सहयोग करने हेतु उपदेशित करे|

इस्कॉन अधिकारीयों के साथ मित्रवत सम्बन्ध स्थापित करे एवं उनक साथ कभी भी अनादरपूर्वक व्यवहार न करे|

तत्कालीय अधिकारीयों के साथ चर्चा किये बगैर किसी भी शिष्य के साथ सेवा, स्थान अथवा आश्रम में बदलाव के विषय में विचार नहीं करे क्योंकि तत्कालीय अधिकारी ही भक्तों को संलग्न करने में पूर्ण रूप से ज़िम्मेदार हैं|

६.४.५ जी. बी. सी. द्वारा गुरु का अवलोकन

गुरु को दुर्व्यवहार के लिए उसे दुर्व्यवहार निम्नलिखित आदेश दिए जा सकते हैं|

६.४.५.१ चेतावनी (फटकार)

गुरु द्वारा आध्यात्मिक अपने आध्यात्मिक कार्यक्रमों से विचलित होते अथवा उनका उल्लंघन करते पाया गया, अथवा उनके द्वारा की गयी जघन्य नहीं है, और अगर गरु केवल गुरु व्यवहार के नियमों का उल्लंघन करते पाया गया (जैसे शिष्यों के लिए प्रचार करने, इत्यादि|) तब गुरु को गुप्त रूप से चेतावनी देनी चाहिए|

६.४.५.२ परिवीक्षा

जब गुरु-व्यवहार गुरु-सिद्धांत के बारम्बार उल्लंघित हो, उनके द्वारा आध्यात्मिक-नियमों का जघन्य रूप से उल्लंघन करना अथवा चेतवनी पर उपयुक्त ध्यान न देने पर उन्हें परिवीक्षित किया जाएगा जिससे उनके गुरु कार्य को बदला जाएगा (जिसमे गुरु को नए शिष्यों को दीक्षित करने से रोकना भी शामिल है)| इसके साथ-साथ उन्हें कुछ विशेष सेवाओं मं संलग्न किया जाएगा उनके सुधार एवं पुनर्स्थापन हेतु|

६.४.५.३ निलंबन

अगर कोई गुरु खुले रूप से परिवीक्षा के नियमों की उपेक्षा करता है एवं बार-बार किसी नियम का उल्लंघन करे, इस्कॉन अथवा जी.बी.सी. नियों के विरुद्ध कार्य करे, अनुमति के बिनासंन्यास आश्रम बदल ले, अथवा वह भक्तों के संग एवं इस्कॉन से दूर रहे, अथवा पूर्ण रूप से साधना के सिद्धांतों से भटक जाने पर उसे निलंबित किया जा सकता है|

६.४.५.४ निष्कासन

अगर कोई गुरु मुक्त रूप से श्रील प्रभुपाद एवं इस्कॉन का विरोधी बन जाए; दानवी रूप से कार्य करे; एक मायावादी बन जाए; श्री चैतन्य महाप्रभु के सिधान्तों के विरुद्ध किसी अपसंप्रदाय की

विचारधारा का प्रचार करे; बार-बार खुले रूप से इस्कॉन एवं जी.बी.सी. अवहेलना करे; और अगर गरु का इन्द्रिय तृप्ति के प्रति लगाव अत्यधिक है तब शास्त्रानुसार वे उनके स्थान से निष्कासित किया जा सकते हैं|

७.२ दीक्षा अभ्यार्थी के दायित्व

एक भक्त को अपने गुरु के रूप में स्वीकार करना, अपनी बुद्धि के बल पर, एक दीक्षा अभ्यार्थीछात्र का व्यक्तगत दायित्व है| एक भक्त कीदीक्षा अभ्यार्थीको पुनः भगवत-धाम ले जाने के क्षमता पर पूर्ण एवं परिपक्व श्रद्धा होने पर ही दीक्षा-अभ्यार्थीको उस भक्त से दीक्षा स्वीकारनी चाहिए| एक भक्त का आध्यात्मिक विकास मापने के प्रमाणिक पैमाने है साधू, शास्त्र एवं गुरु|इस्कॉन गुरु सहमती प्राप्त करने का अर्थ है कि भक्त ने इस्कॉनलॉ द्वारा प्रमाणिकता विधि को पूर्ण कर लिया है एवं वरिष्ठ भक्तों के अनुसार वह इस्कॉनलॉ में अंकित विधि-विधान के अनुसरण में है|परन्तु यह मान्यता भगवत-साक्षात्कार का प्रमाण नहीं मान लेनी चाहिए और यह गुरु-चुनाव की प्रक्रिया में छात्र की बुद्धि को विस्थापित करने हेतु नहीं है|

७.२.१ प्रथम (हरिनाम) दीक्षा १ प्रथम दीक्षा हेतु योग्यताएं

१.१ एक साल का प्रशिक्षण काल

दीक्षा प्राप्त करने हेतु कम-से-कम एक साल से लिए एक भक्त को भक्तिमय सेवा में सकारात्मक रूप से संलग्न रहना चाहिए, सख्ती से चार नियमों का पालन करना चाहिए एवं १६ माला हरे-कृष्ण महामंत्र का जाप करना चाहिए|

इस्कॉन के भक्तों को चाहिए कि वे नए सदस्यों को श्रील प्रभुपाद का आश्रय प्राप्त करने हेतु प्रोत्साहित करें एवं जो भक्त उन्हें कृष्ण भावनामृत में निर्देशित कर रहे हैं उनसे वे मार्गदर्शन, प्रशिक्षण एवं सहायता व्यवहारिक एवं प्रत्यक्ष रूप से प्राप्त करें|इस्कॉन के सदस्य स्वयं यह निर्धारित करेंगे की वे कब और किससे दीक्षित होना चाहते हैं| उन्हें अपना ध्यान श्रील प्रभुपद के संस्थापकचार्य एवं पूर्व-प्रतिष्ठित शिक्षा गुरु होने पर लगाना चाहिए|

कृष्ण-कृपामूर्ति श्रील प्रभुपाद की वाणी से ठोस सम्बन्ध और छः महीने कि सख्त साधना के उपरांत उन्हें एक प्रमाणिक दीक्षा गुरु के द्वारा शिष्य के रूप में स्वीकार किया जा सकता है और छः महीने की अवधि के बाद उन्हें वैष्णव दीक्षा प्रदान की जा सकती है| यह समझ लेना चाहिए की इस्कॉन के अंतर्गत शिक्षा एवं दीक्षा का उद्देश्य एक भक्त का श्रील प्रभुपाद के साथ विश्वास, लगाव एवं परम की दृष्टी से,सम्बन्ध को सुदृढ़ करने के लिए हैं|

दीक्षा गुरु का चयन कर, उस गुरु से अनमति प्राप्त कर, एवं अपने मंदिर अध्यक्ष अथवा सम्बंधित अधिकारी को सूचित कर एक दीक्षा अभ्यार्थी को अपने गुरु का अर्चनआध्यात्मिक गुरु के रूप में प्रारंभ करनी चाहिए उनके प्रणाम मन्त्र को पढ़कर. अपने दीक्षा गुरु के प्रणाम मन्त्र को पढने के बाद श्रील प्रभुपाद क प्रणाम मन्त्र की कमसेकम पहला भाग अवश्य पढना चाहिए सभी पद-शिष्यों एवं आने वाली पीढ़ियों को संस्थापकचार्य के प्रति सम्मान हेतु| सम्बंधित गुरु द्वारा स्वीकारे जाने एवं मंदिर अध्यक्ष को सूचित किये जाने के छः महीने बाद ही वास्तविक दीक्षा प्रक्रिया आरम्भ होगी|

१.४ मंदिर समाजों में रहने वाले भक्त

उपरोक्त बतायो गयी आवश्यकताओं के अतिरिख्त मंदिर परिसरों में निवास करने वाले भक्तों को एक वर्ष का प्रशिक्षण और नियमित रूप से प्रातःकालीन कार्यक्रम में उपस्थित होना आवश्यक है|

१.५ मंदिर के बाहर रहने वाले भक्त

भक्त जो मंदिर प्रांगण के बाहर निवास करते हैं एवं प्रतिदिन प्रातःकालीन कार्यक्रम में उपस्थित होने में असमर्थ हैं, उनके लिए यह अनिवार्य है कि उनके घर में अथवा निकटतम नाम-हट्ट केंद्र के कार्यक्रमों में नियमित रूप से उपस्थित हों|

१.६ परीक्षा उत्तीर्ण करना

इससे पहले की किसी भक्त को इस्कॉन के किसी प्रमाणित गुरु का आश्रय ले एवं उसकी दीक्षा के लिए सिफारिश की जाये, उसे श्रील प्रभुपाद की शिक्षाओं की प्रारंभिक समझ का प्रदर्शन करना होगा मौखिक एवं लिखित परीक्षा के माध्यम से जो मंदिर अध्यक्ष अथवा समान अधिकारी की निगरानी में होगी|

जब कोई भक्त एक इस्कॉन गुरु से आश्रय प्राप्त करने के उपरांत किसी और गुरु का आश्रय प्राप्त करने की इच्छा रखता है तब इसकी सुचना निकटतम मंदिर अधिकारी एवं दोनों गुरुओं को दी जानी चाहिए| और नए गुरु कीस्वीकृति के छः मास उपरांत दीक्षा की विधि प्रारंभ होगी|

इससे पहले की भक्त को प्रथम हरिनाम दीक्षा प्रदान की जाये, सम्बंधित गुरु को लिखित सिफारिश पत्र प्रदान किया जाना चाहिए जो निर्धारित किया जायेगा दीक्षा अभ्यार्थीकी वर्तमान स्थिति से|

एक साल का अंतराल प्रथम एवं द्वितीय दीक्षा के बीच

द्वितीय दीक्षा हेतु योग्य बनने के लिए हरीनाम-दीक्षित भक्त को एक साल तक सकारात्मक रूप से भक्तिमय-कार्यों में संलग्न होना चाहिए, १६ माला का जप एवं ४ नियमों का सख्ती से पालन किया होना चाहिए हरीनाम दीक्षा के एक साल बाद तक| भक्त को एक साल तक मंदिर, प्रचार केंद्र, नाम-हट्ट अथवा घर पर प्रातःकालीन कार्यक्रम में उपस्थित होना चाहिए|

दो साल का विलम्ब जिनका गंभीर पतन हुआ हो

हरीनाम दीक्षा प्राप्त होने के पश्चात् किसी भक्त का यदि गंभीर रूप से पतन हो जाता है दीक्षा प्रतिज्ञाओं की अवमानना कर, गंभीर रूप से, अथवा इस्कॉनके भक्तों से लम्बे समय से संग नहीं करने के कारण| ऐसी स्थिति से सामान्य आचरण में लौटने पर उन्हें द्वितीय दीक्षा प्राप्त करने के लिए दो वर्ष के न्यूनतम अन्तराल से गुज़ारना होगा|

दीक्षा गुरु की परीक्षा विकल्प

ब्राह्मण दीक्षा के लिए शिष्य की योग्यता को जानना दीक्षा गुरु का दायित्व है| इसके लिए गुरु एक परीक्षा का आयोजन भी कर सकते हैं|

४.२.६ द्वितीय दीक्षा के लिए सिफारिश

उपयुक्त इस्कॉन अधिकारी द्वारा दीक्षा गुरु को, द्वितीय दीक्षा के लिए लिखित में सिफारिश पत्र प्रदान किया होना चाहिए| उपयुक्त अधिकारी हरीनाम दीक्षा के अधिकारी ही होते हैं|

७.२.४ दीक्षा केवल मान्यता-प्राप्त गुरुओं से

इस्कॉन के ऐसे भक्त जिन्होंने इस्कॉनगैर-मान्यता प्राप्त गुरुओं से दीक्षा प्राप्त करते हैं उन्हें इस्कॉन के अंतर्गत सेवा करने की अनुमति नहीं की जाएगी| यदि उनके दीक्षा गुरु का कोई आश्रम इस्कॉन के बाहर है तब सामान्य सदचारानुसार सभी शिष्य उस आश्रम में जाकर सेवा करें इस्कॉन में नहीं| (यह नियम उन सदस्यों पर लागू नहीं होता जिनकी दीक्षा इस्कोन में आने से पहले ही हो गयी थी|)

जबकी जी.बी.सी यह स्वीकारती है किसामान्य नियम के अपवाद हो सकते हैं| अंततः यह निकटतम इस्कॉन अधिकारीयों के निर्णय पर निर्भर करेगा कि उक्त सदस्य को अपने अधिकार क्षेत्र

में रखें या नहीं| उपरोक्त वस्तुओं के मद्देनज़र इस्कॉनअधिकारी किसी विशेष व्यक्ति के साथ इस्कॉनका संपर्क भी तोड़ सकते हैं, अपनी इच्छा के अनुसार|

अप्रमाणित गुरुओं द्वारा पहले हो चुकी दीक्षा

जिन व्यक्तियों की दीक्षा इस्कॉन में आने से पहले ही हो चुकी है किसी अप्रमाणिक गुरु द्वारा उन्हें चाहिए कि वे श्रील जीव गोस्वामी के उदाहरण का अनुसरण करें| जिसके अनुसार ऐसे बेकार, कुल-गुरु का त्याग किया जाना चाहिए एवं एक प्रमाणिक गुरु स्वीकारना चाहिए|

७.३ मार्गदर्शनों से७.३.१ अमान्य "दीक्षा" समारोह

उन परिस्थितियों में जब व्यावहारिक गुरु-शिष्य सम्बन्ध इस्कॉन लॉ के नियमों के आधार पर मान्यता प्रदान नहीं किये गए हैं, तब किसी भीइस्कॉनसदस्य को दीक्षा-उत्सव के किसी भी अंग जैसे कि भक्त-नाम प्रदान करना, शुद्ध माला प्रदान करना या कंठी माला प्रदान करना या किसी और प्रतिज्ञा कार्यक्रम, अथवा उनके किसी मिश्रण में भाग लेना, दीक्षा उत्सव के समान कोई भी आयोजन करना|

जब ऐसी गतिविधियों का पहले से ही समापन हो चूका हो:

१. सभी प्रतिभागियों को यह सूचित किया जाना चाहिए की कोई भी दीक्षा नहीं हुई है न ही दीक्षा लेने की कोई प्रतिज्ञा ली गयी है|
२. इस कार्यक्रम में शामिल कनिष्ठ भक्त को एक प्रमाणिक गुरु का आश्रय लेने का प्रयत्न करना चाहिए जिनपर वह पूरी तरह से विश्वास कर सकता हो|
   सभी प्रतिभागी भक्तों को ऐसे किसी भी नाम का प्रयोग करना बंद कर देना चाहिए जो उस कार्यक्रम में प्रदान किये गए हों|

८.२.१.५ इस्कॉन में दीक्षा प्राप्त निवासी भक्त

वे भक्त जो इस्कॉन के केन्द्रों में निवास करते हैं और सेवाएं प्रदान करते हैं उनकी दीक्षा इस्कॉनमें ही होने चाहिए| ऐसा भक्त जो इस्कॉन में आने से पहले किसी और संप्रदाय से दीक्षा प्राप्त कर चुका तबयह अपवाद है एवं स्थानीय जी.बी.सी. की अनुमति और उपदेशानुसारइस्कॉन में रह एवं सेवा प्रदान कर सकता है|

१५.४.१ गृहस्थ भक्तों की दीक्षा

गृहस्थ भक्तों को दीक्षा हेतु इस्कॉन लॉ द्वारा प्रमाणित उन सभी नियमों का पालन करना होगा जो सामान्य दीक्षा एवं गुरु स्वीकृति के लिए लागु होते हैं|इस्कॉन लॉ के अनुसार स्थानीय अधिकारीयों का दीक्षा-अभ्यार्थी के पास सिफारिश पत्र होना चाहिए| यह उसी प्रकार होना चाहिए जोकि एक सामान्य भक्त की स्थिति मैं होता है| अगर स्थानीय अधिकारी किसी भक्त को दीक्षा हेतु योग्य मानते है तब उस दीक्षा अभ्यार्थीको सूचना देनी चाहिए की दीक्षा प्राप्त करने के लिए वह कैसे योग्य बन सकता है, इस्कॉन लॉ के अनुसार| दीक्षा के लिए कोई आर्थिक अनुबंध करना अथवा कोई

परिशिष्ट ६
पतित "गुरु" का त्याग (इस्कॉन के नियम)

निश्चित राशी निर्धारित करना भी श्रील प्रभुपाद एवं इस्कॉनलॉ द्वारा अमान्य है| जैसा कि इस्कॉन लॉ में कथित है कि सिफारिश पत्र के प्राप्त होने के बाद भी गुरु दीक्षा देने को बाध्य नहीं होते|

न.ब. निम्लिखित नियम श्री नरहरी सरकार(श्री चैतन्य महाप्रभु के पार्षद) द्वारा लिखित *श्रीकृष्ण भावनामृत*, श्रील जीव गोस्वामी द्वारा लिखित *भक्ति सन्दर्भ* एवं श्रील भक्ति-विनोद ठाकुर द्वारा लिखित *जैव धर्म* पर आधारित है| ऐ.सी. भक्तिवेदांतस्वामी प्रभुपाद की शिक्षाओं के अतिरिख्त|

६.५.१.१ कब एक गुरु का त्याग किया जा सकता है

गुरु के स्वीकार करने पर अथवा विश्वसनीय सूत्रों की गवाही के आधार पर जब यह सिद्ध कर दिया जाएकि गुरु दीक्षा के समय पतित थे तब शिष्य को यह अधिकार है गुरु का त्याग करे और अन्य किसी प्रमाणिक गुरु से दीक्षा प्राप्त करने का|

६.५.१.२ एक पतित गुरु का त्याग कब किया जाये

६.५.१.२.१ इन्द्रिय तृप्ति में अंधाधुन्द लिप्त

अगर गुरु इन्द्रिय तृप्ति में अंधाधुन्द लिप्त है और स्वयं गुरु की स्वीकृति अथवा विश्वसनीय सूत्रों से प्राप्त सूचना से ज्ञात होता है कि वे नियमित रूप से चार नियमों का उल्लंघन कर रहे हैं और उनके सुधार की कोई सम्भावना नहीं है, तब शिष्य को गुरु का त्याग कर सकता है और पुनार्दीक्षाप्राप्त कर सकता है|

६.५.१.२.२ जब गुरु दानवी गुणों का प्रदर्शन करने लगे

जब गुरु दानवी गुणों का प्रदर्शन करने लगे अथवा इस्कॉन का विरोधी हो जाये, उसका त्याग कर पुनार्दीक्षा प्राप्त की जानीचाहिए|

६.५.१.३ पतित गुरु का त्याग कब नहीं किया जाये

जब गुरु इन्द्रिय तृप्ति में लिप्त होते हुए चार नियमों में से किसी एक या अधिक नियमों का उल्लंघन करता हुए पाया जाएपरन्तु उनके सुधार की सम्भावना हो तब शिष्यों को उनका त्याग नहीं करना चाहिए अपितु सुधार होने का इंतज़ार करना चाहिए और सभी शिष्यों को शिक्षा गुरु के रूप में,श्रील प्रभुपाद एवं वरिष्ठ वैष्णवों का आश्रय ग्रहण करना चाहिए |

६.५.१.४ कब एक निलंबित गुरु का त्याग करें

एक शिष्य जिसने अपने गुरु को प्रति विश्वास पूर्ण रूप से खो दिया है और उनके प्रति अपराध-भाव जागृत कर लिया है, एवं अपनी श्रद्धा को पुनः जागृत करने के सभी प्रयासों में असफल रहा हो उनके उपदेशों सुनने के बाद भी, वह अपने गुरु के अनुमति के अनुसार उनका त्याग कर दूसरा गुरु स्वीकार कर सकता है| एक भक्त को उसके स्थानीय जी.बी.सी के परामर्शानुसार कार्य करना चाहिए, अगर निलंबित गुरु अनुमति नहींप्रदान करते तब शिष्य को अपने स्थानीय जी.बी.सी से अनुमति प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए|

६.५.१.५ मार्गदर्शन हेतु "गुरु आश्रय"

वे भक्त जिनके गुरु का पतन हो गया है वे जी.बी.सी. के "गुरु आश्रय" एवं "पुनर्दीक्षा सम्बंधित प्रश्नोत्तर" जैसे पत्रों से निर्देश प्राप्त करें|यह पत्र आध्यात्मिक गुरु का आश्रय प्राप्त करने एवं शिक्षा गुरु के

किरदार पर भी इस्कॉन के निर्देशों को प्रस्तुत करते हैं| (page 75 ends)

इस निबंध के द्वारा उन सिद्धांतों को परिभाषित किया जायेगा जिनका शिक्षा व दीक्षा गुरु, उनके शिष्यों, स्थानीय जी.बी.सी., क्षेत्रीय सचिवों, मंदिर अध्यक्षों एवं इस्कॉन प्रमाणित प्रबंधकों द्वारा पालन किया जाना चाहिए|इसका ध्येय है गुरु एवं प्रबंधकों के बीच मिथ्याबोध से बचना, एवं भक्तों को इन मिथ्यबोधो से रक्षित करना|

“आध्यात्मिक गुरु ” अर्थात शिक्षा, दीक्षा अथवा दोनों

यह समझा जाना चाहिए कि अब से, जब तक विशिष्ट रूप से कथित नहीं किया जाये, “आध्यात्मिक गुरु” का अर्थ शिक्षा(अर्थात वे प्रबंधक भी जो इस रूप से कार्य कर रहे हों) एवं दीक्षा गुरु होगा| इसके अलावा, जब भी “आध्यात्मिक अधिकारी” का प्रयोग होता है तब उस समय उसका अर्थ कोई भी (आध्यात्मिक गुरु या प्रबंधक) जिनके उपदेशों के बल पर एक भक्त की भक्ति में श्रद्धा स्थापित हुई है और विकसित हो रही है|

इस्कॉन के अंतर्गत अधिकार

यह निबंध इस्कॉन के प्रबंधन प्रणाली का विस्तृत अथवा अंतिम विश्लेषण नहीं है न ही गुरु-तत्व का--- गुरु के अपेक्षित कर्तव्यों व गुणों एवं गुरु चुनने की प्रक्रिया|

इस निबंध का वास्तविक उद्देश्य इस प्रकार है- चाहे एक भक्त दीक्षा गुरु, शिक्षा गुरु, संन्यासी, जी.बी.सी., क्षेत्रीय सचिव, मंदिर अध्यक्ष, कंग्रिगेशन प्रतिनिधि अथवा कोई भी और हो एक अधिकारिक पद पर, उसे अधिकार तभी प्रदान किये जायेंगे जब वे श्रील प्रभुपाद के उपदेशानुसारइस्कॉन में जी.बी.सी के अधिकार के अंतर्गत सेवा करने में सहमत हो|

इस आधार को स्थापित करने के लिए हमें और कुछ नहीं केवल इसी तथ्य पर बल देना है कि श्रील प्रभुपाद ने अपनी शिक्षाओं में इसी आधार पर बल दिया एवं कार्यालयी पत्रों में भी जिनपर उन्होंने स्वयं हस्ताक्षर किये थे| श्रील प्रभुपद ने स्पष्ट रूप से जी.बी.सी. को सर्वोच्च प्रबंधन अधिकारी के रूप में स्थापित किया है और यह भी निर्दिष्ट किया है की जी.बी.सी के अधिकारक्षेत्र में सभी इस्कॉन भक्तों एवं गुरुओं को आध्यात्मिक मार्गदर्शन प्रदान करने का दायित्व भी है|

संवाददाता: “आपके आन्दोलन का कोई उत्तराधिकारी शिक्षक भी है”?

श्रील प्रभुपाद: “मैं कुछ भक्तों को प्रशिक्षित कर रहा हूँ, अर्थात, विकसित भक्त जो बड़ी ही सरलता से दायित्व संभल लेंगे| मैंने उन्हें जी.बी.सी. बना दिया है|”

दुसरे शब्दों में, वस्तुतः जी.बी.सी सर्वोच्च प्रबंधन अधिकारी है परन्तु प्रबंधन ही नहीं उनका दायित्व शिक्षा भी है|

अधिकार की दो पंक्तियाँ

क्योंकि प्रत्येक भक्त आध्यात्मिक प्रेरणा अपने वरिष्ठ अधिकारीयों से प्राप्त करता है, इसीलिए अधिकार की दो पंक्तिया इस्कॉनमें होती हैं--- एक मुख्यतः आध्यात्मिक है और दूसरी मुख्यतः

प्रबंधन|संस्थापकाचार्य के आदेशों का पालन दोनों ही पंक्तियाँ अपने अन्योन्याश्रित एवं अद्वितीय उद्देश्यों से करती हैं| दोनों को अपने अधिकार-क्षेत्र में भक्तों को आश्रय देने का अधिकार है|यह आश्रय शिक्षा एवं उदाहरण दोनों द्वारा प्रदान किया जा सकता है|

दोनों पंक्तियों के बीच अंतर बताकर— एक मुख्यतः आध्यात्मिक दूसरी मुख्यतः प्रबंधक-- से हम यह नहीं कह रहे कि दोनों पन्तियाँ एक दुसरे की विरोधी हैं, न ही हम यह कह रहे हैं कि आध्यात्मिक पंक्ति अधिक शुद्ध अथवा विशेषाधिकृत है|

"प्रबंधन भी एक आध्यात्मिक क्रिया है... या श्रीकृष्ण की व्यवस्था है|"

"हमारे प्रचार कार्य में, हम कितनी सारी पुस्तकें वितरित करते हैं और कितने अधिक धन एवं संपत्ति से वास्ता रखते है, परन्तु क्योंकि यह सभी श्रीकृष्ण-भावनामृत से सम्बंधित हैं, इन्हें भौतिक नहीं मन जाना चाहिए| इसीलिए कोई भी व्यक्ति जो इस प्रकार के प्रबंधन में अपना मन लगा रहा है वह कृष्ण-भावनामृत से बाहर नहीं हो जाता| अगर कोई व्यक्ति प्रतिदिन १६ माला का जप एवं चार नियमों का पालन सख्ती से करता है, तब कृष्ण-भावनामृत के प्रचार हेतु उसके सभी सौदे कृष्ण-भावनामृत के आध्यात्मिक अभ्यासों से अभिन्न हैं|"3

एक आध्यात्मिक समाज का प्रबंधक केवल नियमों की घोषणा कर एवं उन्हें लागु कर अपने प्रबंधन दायित्व को नहीं निभा सकता| नियमों का आध्यात्मिक आधार होना चाहिए एवं उन्हें वैष्णव सिद्धांतों के अनुसार लागु एवं कार्यान्वित किया जाना चाहिए| जो प्रबंधक इस समझ के साथ कार्य करते हैं वे सामान्यतः अपने कनिष्ठों का आध्यात्मिक दायित्व उठा सकते हैं|

इसीलिए हमें आध्यात्मिक एवं प्रबंधनीय में एकता देखनी चाहिए| परन्तु दोनों में कुछ भेद भी है, साथ-साथ आने वाली एकता व भेद को समझने के लिए दो पृथक नाम व उनके विवरण दिए गए हैं|

अधिकार की आध्यात्मिक पंक्ति

अधिकार की आध्यात्मिक पंक्ति आरम्भ होती है श्रीकृष्ण से व ब्रम्हा, नारद एवं व्यास एवंहमारे संस्थापकाचार्य,श्रील प्रभुपाद से होती हुई आती है|

१संवाददाता के साथ कक्ष-वार्तालाप,. लोस एनजेलेस, ४जून, १९७६

२ कक्ष-वार्तालाप, १६ जनवरी,. १९७७, कोल्कता(तत्लकालीन कलकत्ता)

३ श्रीमद भागवतं, ५.१६.३, तात्पर्य

जो हमारे संप्रदाय के प्रति शरणागत हैं एवं जी.बी.सी. के अधिकार-अंतर्गत सेवा प्रदान करते हैं वे आध्यात्मिक पंक्ति के अंतर्गत आश्रय एवं शिक्षा प्रदान कर सकते हैं|आध्यात्मिक पंक्ति में जी.बी.सी., जी.बी.सी आंचलिक सचिव, आध्यात्मिक गुरु, सन्यासी, क्षेत्रीय सचिव, मंदिर अध्यक्ष, कंग्रिगेशन नेता, यात्रा एवं सामुदायिक प्रचार शामिल हैं| वस्तुतः जब कोई एक प्रमाणिक गुरु के निर्देशों का सख्ती से पालन करता है तब वह आध्यात्मिक पंक्ति का प्रतिनिधित्व करने के योग्य हो जाता है|

सामान्यतः किसी का मुख्य आध्यात्मिक प्रतिनिधि उसका शिक्षा अथवा दीक्षा गुरु होता है|शास्त्र स्पष्ट रूप से कहते हैं कि अपने आध्यात्मिक गुरु के प्रति निष्ठावान रहना चाहिए एवं उनकी आज्ञा का पालन करना चाहिए| इसी प्रकार गुरु का अपने शिष्यों पर अधिकार होता है जिसके माध्यम से वे अपने शिष्यों को भक्ति का विकास करने हेतु प्रशिक्षित एवं शिक्षित कर सकते हैं| कृष्ण भावनामृत में विकास हेतु आवश्यक शिक्षा एवं प्रेरणा देने में इसी प्रकार आध्यात्मिक गुरु, एक भक्त के जीवन में महत्वपूर्ण किरदार निभाते हैं|

प्रबंधनीय पंक्ति

श्रील प्रभुपाद के उपदेशानुसार प्रबंधनीय पंक्ति संघ के पर्यवेक्षण हेतु है एवं इसके द्वारा पालित नियम जी.बी.सी. द्वारा निर्धारित किये जाते हैं| जब हम "अधिकारी" शब्द का प्रयोग करते हैं प्रबंधनीय सम्बन्ध में तब हमारा तात्पर्य सर्वोच्च अधिकारी से नहीं है --- शास्त्राधिकार केसमान--- परन्तु प्रचार आन्दोलन के लिए आवश्यक अधिकारी से ताकि आन्दोलन श्रील प्रभुपाद की शिक्षाओं के अनुरूप रहे|इस आवश्यक कार्य करने के लिए उनके अनुययियो ने इस्कॉन प्रबंधन प्रणाली, जो कि श्रील प्रभुपाद के उपदेशानुरूप है, मंदिरों का प्रसार, गृहस्थ भक्तों (अनिवासी भक्तों), गुरुकुल एवं कृषिक्षेत्र, साथ ही संस्थाओं एवं व्यक्तियों का हिसाब करने हेतु अपनाई गयी है|इसी प्रकार बढ़ते हुए अंग एवं उसके सदस्यों के सहायता करने हेतु| प्रबंधन ढांचे में वर्तमान रूप से सभी विभिन्न क्षेत्रीय, राष्ट्रिय एवं महाद्वीपीय जी.बी.सी. आते हैं, फिर भी यह जी.बी.सी., जो.बी.सी क्षेत्रीय सचिव, आध्यात्मिक गुरु, संन्यासी, मंदिर अध्यक्षों, गृहस्थ-भक्त प्रतिनिधियों एवं दोनों संप्रदाय एवं यात्री प्रचारकों तक सीमित नहीं रहता|

भटकाव के आरंभ की परिभाषा

सामान्यतः एक सिद्ध आवस्था में सब कुछ श्रील प्रभुपाद के इस्कॉन के दर्शन के अनुसार ही चलेगा, फिर भी हमने दोनों पंक्तियों के अधिकारीयों के बीच भेद-भाव देखे हैं|

उदाहरण, कई बार हमने आध्यात्मिक अधिकारी प्रबंधन अधिकारीयों के कार्य में हस्तक्षेप कर जाते हैं| वे स्वयं को उस क्षेत्र का प्रबंधन अधिकारी नहीं मानतेजहाँ पर उनका प्रचार प्रभावी है(जबकि वस्तुतः

वे इसके लिए ज़िम्मेदार हैं), परन्तु फिर भी वे प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से उन प्रयोजनों में प्रबंधन कर रहे होते हैं|

इसीलिए वे कई बार भक्तों, आर्थिक राशियों एवं प्रयोजनों का प्रबंधन करते हैं जिनके लिए उनपर निर्धारित व्यक्ति एवं उनके अनुयायी ज़िम्मेदार हैं, बिना सम्बंधित प्रबंधन ढांचे के स्पष्ट सहमती के जो उनके क्षेत्र में कार्यरत है|ऐसा करते हुए वे प्रबंधन पंक्तिकी उपेक्षा करते हैं और अपने आधारितों कोउनकी सेवा बदलने के लिए प्रोत्साहित करते हैं स्वयं के प्रतिबंधन ढाँचे के प्रति उन्हें निष्ठावान बनाने के लिए|

ऐसे वाकये से केवल दुविधा ही नहीं बल्कि अलगाव का भाव भी जागृत करता है| ऐसी परिस्थितियां प्रबंधकों की निराशा का कारण भी बन जाती है, कनिष्ठ प्रबंधक फिर भी इसका विरोध में स्वर नहीं उठाते, विशेषकर आध्यात्मिक गुरु के प्रति अपराध हो जाने के डर से|

दूसरी ओर, कई ऐसे प्रबंधन अधिकारी हैं जो पर्याप्त आध्यात्मिक पोषण नहीं उपलब्ध करते| इसके कारण आध्यात्मिक गुरु को हस्तक्षेप करने की प्रेरणा मिल सकती है जिसके अर्थ उनके शिष्य के सेवा में बदलाव हो सकता है|

उदाहरणस्वरूप, कई बार प्रबंधक साधना व प्रचार अथवा अपने अंतर्गत आने वाले भक्तों की भक्ति के स्थान परप्रबंधन लक्ष्यों में अधिक बल दे सकते है| प्रबंधक कई बार उन भक्तों की आध्यात्मिक प्रगति की पूरी तरह अवहेलना करते हैं, जो(भक्त) उनके प्रबंधनीय दर्शन के अनुरूप नहीं होते, जबकि इसी दर्शन के प्रति उन प्रबंधकों ने भक्तों को पर्याप्त रूप से प्रेरित नहीं किया|

प्रबंधन प्राधिकार-पंक्ति से विरोधाभास

उपरोक्त परिस्थितियाँ में आध्यात्मिक एवं प्रबंधन अधिकार-पंक्तियों के बीच तनाव उत्पन्न हो जाता है|

ऐसी परिस्थितियां तब उत्पन्न होती हैं जब ऐसे आर्थिक रूप से स्वतन्त्र भक्त हों जो किसी भी स्थानीय संघ से सम्बंधित नहीं होते| फिर भी, यह समझा जाना चाहिए कि प्रबंधन अधिकारी ने सभी भक्तों की रखवाली हेतु,सभी भक्तों एवं अभ्यार्थी भक्तों को साथ में लाने के लिए पर्याप्त प्रयास नहीं किये अपने स्थानीय प्रबंधन-क्षेत्र के अंतर्गत|

इसीलिए किस प्रबंधन क्षेत्र में रहने वाले अपने शिष्यों एक लिए नए संघ अथवा सेवाएं प्रदान करने अथवा प्रबंधन निर्देशों में हस्तक्षेप करने से पहले सम्बंधित इस्कोन प्रबंधन-अधिकारी से आदरपूर्वक अनुमति ले|

सबसे अच्छा है कि शिष्यों को स्थानीय प्रबंधकों को आदर करने हेतु प्रशिक्षित किया जाये, आध्यात्मिक गुरु-शिष्य सम्बन्ध के प्रारंभ से ही| कई इस्कॉन प्रबंधक श्रील प्रभुपाद द्वारा दिए गए मानकों के अनुसार, मंदिरों, विग्रहों एवं ग्रंथ-वितरण दायित्व निभा रहे हैं|

"विग्रह-स्थापन का अर्थ है सदैव के लिए नियमित भगवद-अर्चन"

---

[4]"आश्रितों" से अर्थ केवल आध्यात्मिक रूप से आश्रित भक्तों से ही नहीं है| कई समय भक्तगण अपने अधिकारियों पर आर्थिक रूप से भी आश्रित होते है और उन व्यवस्थाओं से आर्थिक रूप से उनका पालन होता है जो उनके अधिकारियों ने स्थापित की हैं|

[5]शिवानन्द को लिखे पत्र से, २ सितम्बर १९७१ (page 79 ends)

इसीलिए, आध्यात्मिक गुरु को श्रील प्रभुपाद के आन्दोलन की सेवा करनी चाहिए स्थानीय प्रतिनिधियों एवं प्रबंधकों के साथ सहयोग करे|

इसका अर्थ यह नहीं कि प्रबंधक को पूर्ण स्वतंत्रता है अपने अंतर्गत आने वाले सदस्यों की आवश्यकताओं के अवहेलना करने की अथवा पूर्ण स्वतंत्रता है उस गुरु की चिंताओं के अवहेलना करने की जो कि उक्त प्रबंधकों के अधिकार-क्षेत्र के अंतर्गत हैं| गुरु एवं उनके शिष्यों की चिंताओं के प्रति प्रबंधकों को संवेदनशील होना चाहिए|

अगर गुरु को यह प्रतीत होता है कि उनके शिष्यों को उन्हें दी गयी सेवाओं व दायित्वों के अनुरूप देखभाल नहीं हो रही है तो वह स्थानीय जी.बी.सी. अथवा इस्कॉनअपील संस्थाओं से अपील कर सकता है अपने शिष्यों के लिए|

इस बिंदु पर और चर्चा आगे चलकर होगी| परन्तु उसके पहले हम श्रद्धा की चर्चा करेंगे| दोनों अधिकार-पंक्तियों की बेहतर सेवा होगी जब हम इन विषयों के प्रति श्रद्धा का महत्व समझेंगे|

अधिकार निरंतर श्रद्धा-विकास के बल पर स्थापित होता है

इस्कॉन के सबसे बड़ी संपत्ति उसे अनुयायिओं की श्रद्धा है| जब कोई भी मंदिर, प्रयोजन और आया न हो केवल कुछ अनुयायी हो, अगर श्रद्धा है, सम्पन्नता आयेगी, वास्तविक रूप में|श्रील प्रभुपाद को अगर हम देखें:

"संस्कृत शास्त्रों में एक कहावत है उत्साही व्यक्ति प्राप्त करते हैं लक्ष्मी देवी की कृपा प्राप्त करते हैं|पाश्चात्य समाज में इसके अनुरूप कथन है| विश्व के इस भाग के व्यक्ति भौतिक प्रगति के प्रति बहुत उत्साहीहैं और उन्हें यह प्राप्त हुई है| इसी प्रकार से, रूप गोस्वामी के अनुसार अगर हम आध्यात्मिक

विषयों के प्रति उत्साही हों तबहम आध्यात्मिक जीवन में भी सफलता प्राप्त कर सकते हैं|उदहारण के रूप में हम देख सकते हैं कि मैं आपके देश में परिपक्व आयु में आया परन्तु मेरे पास एक संपत्ति थी वह थी उत्साह एवं अपने आध्यात्मिक गुरु के प्रतिश्रद्धा| मुझे लगता है कि यही सम्पत्ती आशा की किरणें प्रदान करती हैं और वह सभी कुछ जो मैंने आपके सहयोग से प्राप्त किया है|"

और गीता ९.३ के तत्पर्यों में श्रील प्रभुपाद लिखते हैं "कृष्ण-भावनामृत का विकास करने हेतु श्रद्धा सबसे महत्वपूर्ण कारक है....केवल श्रद्धा के माध्यम से कोई कृष्ण-भावनामृत में विकास कर सकता है|"

जो आध्यात्मिक अधिकार पंक्ति में हैं उन्हें आचार एवं प्रचार के माध्यम से अपने आश्रितों की शुद्ध भक्ति, हमारे संप्रदाय, श्रील प्रभुपाद, इस्कॉन एवं उसके प्रबंधन के प्रति श्रद्धा की रक्षा करें|आध्यात्मिक गुरुओं का यह भी दायित्व है कि वे इस बात पर प्रबंधकों को आश्वस्त रखें कि गुरु स्वयं आध्यात्मिक-पंक्ति के उपयुक्त प्रतिनिधि हैं| अगर आध्यात्मिक गुरु विरुद्ध भाव में कार्य करते हैं तब अन्य की भी श्रद्धा प्रभावित होती है|

---

६ जयानंदा को लिखे पत्र से, टिटेनहर्स्ट, १५ अक्तूबर १९६९

इसी प्रकार वे जो प्रबंधन अधिकार-पंक्ति में हैं उन्हें चाहिए कि वे इस प्रकार आचार एवं प्रचार करें कि उनके प्रति आध्यात्मिक अधिकरियों एवं उनके शिष्यों कि श्रद्धा स्थापित हो एवं बरकरार रहे| अपने अंतर्गत आने वाली भक्तों की सही प्रकार देखभाल होने से आध्यात्मिक गुरु स्वतः अपने शिष्यों को प्रबंधन में सहयोग करने हेतु प्रोत्सहित करेंगे| परन्तु प्रबंधन के उनके अंतर्गत आने वाले भक्तों के आध्यात्मिक लाभों के विपरीत कार्यशैली के कारण सभी की उनके प्रति श्रद्धा प्रभावित होगी|

इसीलिए सभी इस्कॉन सदस्यों की श्रद्धा की रक्षा करने के लिए दोनों अधिकार पंक्तियों के पालन हेतु निम्नलिखित नियम बनाये गए हैं|

आध्यात्मिक गुरु स्वतन्त्र नहीं हैं

सुपरिभ्षित सिद्धांतों का परिचय करने की आवश्यकता को और स्पष्ट करने हेतु हम आध्यात्मिक गुरु के प्रबंधन ढांचे में स्थान की परीक्षा करेंगे|

जब श्रील प्रभुपाद मौजूद थे तब वही एकमात्र दीक्षा गुरु , पूर्व-प्रतिष्ठितशिक्षा गुरु, एवं सर्वोच्च प्रबंधन अधिकारी थे, जी.बी.सी. से उच्च:

"हम जी.बी.सी. के माध्यम से अंतर्राष्ट्रीय कृष्ण भावनामृत संघ का प्रबंधन कर रहे हैं| हमारे पास २० जी.बी.सी. जो सम्पूर्ण विश्व के संघीय कार्यक्रम को देख रहे हैं और उन सभी के ऊपर हूँ मैं| जी.बी.सी.

के अंतर्गत आते हैं मंदिर अध्यक्ष, सचिव एवं कोषालय अध्यक्ष, सभी केन्द्रों में| इसी प्रकार मंदिर अध्यक्ष जी.बी.सी. के प्रति ज़िम्मेदार है एवं जी.बी.सी मेरे प्रति/ इस प्रकार से हम प्रबंधन कर रहे हैं...''७

श्रील प्रभुपद की वपु प्रतुति के न होने पर ढांचा कुछ बदल गया है|श्रील प्रभुपाद ने कहा था कि जी.बी.सी. को इस्कॉन के सर्वोच्च प्रबंधन अधिकारी के रूप में कार्य करना चाहिए| साथ-साथ इस्कॉन में कई आध्यात्मिक गुरु होने चाहिए:

''कोई भी श्री चैतन्य महाप्रभु के आदेश का पालन कर रहा हैं उनके प्रमाणिक प्रतिनिधि के निर्देशानुसार, गुरु बन सकता है, और मेरी यह आशा है कि मेरे जाने के पश्च्यात मेरे सभी शिष्य प्रमाणिक गुरु बनकर सम्पूर्ण विश्व में कृष्ण-भावनामृत का प्रचार करें|''८

इससे एक चुनौतीपूर्ण स्थिति उत्पन्न होती है|कई आध्यात्मिक संस्थाओं में एक गुरु पूरी संस्था का सर्वोच्च होता है जबकि इस्कॉन में एक ही संस्था में कई गुरु हैं, ''प्रशासन प्रतिनिधि'' के साथ-साथ वह ''सर्वोच्च प्रबंधन अधिकारी'' भी होती है पूरी संस्था केलिए| जो आध्यात्मिक गुरु हैं उन्हें श्रील प्रभुपद के आदेश का पालन करना है जी.बी.सी. की अंतर्गत रहते हुए|

संस्था के नीति-नियमों, जी.बी.सी.-प्रमाणित पत्र एवं उसके द्वारा लिए गए प्रबंधन निर्णयों का पालन करने हेतु आध्यात्मिक गुरु बाध्य हैं| इसी बध्यता के अंतर्गत है दायित्व अपने शिष्यों को इस्कॉन के वर्तमान प्रबंधन एवं भक्त-सेवा संघ के साथ संग व सेवा करने हेतु प्रेरित करना शिष्यों के निवास-स्थान के अंतर्गत बजे कि केवल स्वयं (गुरु) या गुरु के संघ एवं प्रयोजनों के साथ जिनका इस्कॉन आंचलिक ढांचे से कोई सम्बन्ध नहीं हैं|

शिष्यों को अपने अधिकारीयों के बीच टकराव करवाने से बचना चाहिए

शिष्यों को इस्कॉन का बड़ा चित्र देखने का प्रयास करना चाहिए| निश्चित ही आध्यात्मिक गुरु और स्थानीय जी.बी.सी अथवा प्रबंधक एक दूसरे से भक्तिमेंअधिकविक्सितहो सकते हैं|

---

[७]वासुदेव को लिखे पत्र से, न्यू वृन्दावन, ३० जून १९७६

[८]मधुसूदन को लिखे पत्र से, नवद्वीप, २ नवम्बर १९६७

फिर भी, संघ के आध्यात्मिक प्रबंधन, जो हमने स्पष्ट रूप से प्रस्तुत किया है| श्रील प्रभुपाद ने जी.बी.सी को पूर्ण अधिकार दिए हैंउनके व्यक्तिगत सदस्यों एवं अन्य प्रबंधकों को भी|

अगर किसी शिष्य/शिष्या को यह दुविधा हो जाती है कि उसके गुरु जी.बी.सी. एवं इस्कॉनके नीति एवं नियमों से उच्च हैं तब उसकी यह त्रुटी गुरु एवं अन्य अधिकारीयों द्वारा ठीक की जानी चाहिए|अन्यथायह त्रुटी आध्यात्मिक एवं प्रबंधन पंक्तियों में विरोध का कारण बन सकती है|

निश्चय ही, सभी शिष्यों को अपने इस्कॉन अधिकारी का आज्ञा पालन उसी प्रकार करना चाहिए जैसे उनके शिक्षा एवं दीक्षा गुरु अपने अधिकारीयों का करते हैं|

प्रचार एवं आचार दोनों से ही केवल भक्ति हेतु नहीं बल्कि इस्कॉन के प्रबंधन ढांचे के सम्बन्ध में भी शिक्षित एवं प्रशिक्षित करना चाहिए| साथ-साथ स्वयं को भी शिक्षित एवं प्रशिक्षित करना चाहिए उस ढांचे के सम्बन्ध में|

सिद्धांत जो परिचित किये जा रहे हैं

गुरु के शिष्यों की शिक्षा

निम्नलिखित की स्पष्ट समझ हेतु अपने समस्त शिष्यों को प्रदान करने का आध्यात्मिक गुरु का दायित्व है:

१. आध्यात्मिक गुरु के अधिकार श्रील प्रभुपाद के प्रति उनके विश्वास से आता है| इसका का अर्थ है श्रील प्रभुपाद, उनके इस आन्दोलन में कार्य करने के आदेश एवं इस्कोन सम्मिलित हैं.
२. आध्यात्मिक गुरु इस्कॉन का सदस्य है इसीलिए जी.बी.सी. के प्रति ज़िम्मेदार है|
३. केवल आध्यात्मिक गुरु हो जाने से किस भक्त को कुछ विशेष अधिकार नहीं मिल जाते| और अपने अधिकारों का आध्यात्मिक गुरु को शिष्यों के ऊपर दुरूपयोग नहीं करना चाहिए|
४. शिष्यों को उसी प्रकार इस्कॉन अधिकारीयों का अनुसरण करना चाहिए जिस प्रकार सभी शिक्षा एवं दीक्षा गुरुओं ने उदाहरण स्थापित किया है|
५. शिष्यों के लिए यह आवश्यक कार्य है कि वे आध्यात्मिक गुरु के माध्यम से कृष्ण को शरणागत होंऔर इसी कार्य में यह निहित है किवे इस्कॉन प्रबंधन में अपने वरिष्ठों को पहचाने व उनका आदर करें जो उन्हें आध्यात्मिक प्रगति करने में सहायता प्रदान कर रहे हैं|
६. आध्यात्मिक रूप से परिपक्व प्रबंधक शिष्यों के शिक्षा-गुरु हो सकते हैं जो उनके दीक्षित शिष्य नहीं हैं| इस तरह के समबन्ध शिष्यों के दीक्षा गुरु द्वारा पूर्ण रूप से प्रोत्सहित किये जाने चाहिए|

गुरु का आचरण

इसके साथ-साथ प्रबंधन अधिकार पंक्ति के प्रति आदर प्रकट करने हेतु एवं उनकी आध्यात्मिक-पंक्ति में श्रद्धा बनाये रखने हेतु आध्यात्मिक गुरु को:

१. इस्कॉनमंदिर अथवा प्रचार केंद्र में पहुँचने से पहले स्थानीय प्रबंधक से आध्यात्मिक गुरु को यह पूछना चाहिए कि वे किस प्रकार अपनी इस यात्रा में, केंद्र में सेवा प्रदान कर सकते हैं|
२. किसी ऐसी जगह में जाने से पहले जहाँ कोई भी इस्कॉन मंदिर अथवा प्रचार केंद्र नहीं है, एक आध्यात्मिक गुरु को आंचलिक जी.बी.सी. से उनके उक्त स्थान पर प्रचार योजनाओं की चर्चा करनी चाहिए जिनमें गुरु सेवा कर सकते हों|
३. अगर प्रबंधन निर्णयों में भेद-भाव हैतब गुरु को मान्य-अधिकारी के साथ सहयोग करने का पूरा प्रयास करना चाहिए. अगर कोई निर्णय नहीं निकलता मान्य अधिकारी के मत को टालते हुए उच्च अधिकारी से सहल करनी चाहिए|

प्रबंधकों के दायित्व

इस्कॉनमें सहयोग की स्थापना करने हेतु एवं आध्यात्मिक अधिकार-पंक्ति के प्रति आदर व्यक्त करने हेतु, इसके साथ-साथ आध्यात्मिक गुरुओं का प्रबंधन के प्रति विश्वास कायम रखने हेतु सभी प्रबंधकों को:

१. उनके अधिकार-क्षेत्र में आने वाले सभी गुरुओं एवं यात्री प्रचारकों के सुझावों को ध्यानपूर्वक सुने विशेषकर उन सुझावों को जो गुरु के शिष्यों से सम्बंधित हैं|
२. उनपर निर्भर करने वालों का भक्ति के प्रति श्रद्धा की रक्षा करें एवं शिक्षा एवं दीक्षा गुरु स्वीकारने के सिद्धांतों के प्रति भी|
३. भक्त-संरक्षण प्रणाली का समर्थन एवं प्रोत्सहित करे (जो है, सलाहकार प्रणाली, ब्राह्मणी सुझाव बोर्ड इत्यादि) अपने प्रबंधन क्षेत्र के अंतर्गत|
४. निश्चित करें की उनके अधिकार के अंतर्गत सभी प्रबंधक भक्त-संरक्षण में प्रशिक्षित हों|
५. दौरा करने वाले आध्यात्मिक गुरुओं को उनके शिष्यों के आध्यात्मिक स्वास्थ्य का पूर्ण विवरण दें|
६. ज़रूरतमंद शिष्यों के लिए आध्यात्मिक गुरुओं एवं यात्री प्रचारकों के दौरों को प्रोत्सहित करें|
७. निश्चित करें की दीक्षा सिफ़ारिशो की कारगर प्रणाली हो जिसके कारण प्रबंधनीय लाभ हेतु हेरा-फेरी की सम्भावना कम हो|

सारांश

भक्तों के आध्यात्मिक जीवन के पूर्ण पोषण को बढ़ावा देने के लिए, श्रील प्रभुपाद ने इस्कॉन को एक प्रबंधन प्रणाली प्रदान की स्पष्ट अधिकार रेखाओं के साथ|इस्कॉन के सभी सदस्यों को इसका

सम्मान कर इसके अंतर्गत कार्य करना चाहिए| इसका लक्ष्य आध्यात्मिक है जो कि: इस्कॉनके सदस्यों के भक्ति विकास, भक्तो के संग, सेवा-संभावनाओं एवं कारगर प्रचार तकनीकों के माध्यम से आसन बनाना हैं| साथ-साथ प्रमाणिक गुरु से दीक्षा लेने की प्राथमिक आवश्यकता पर भी बल देता है|

सर्वाधिक आवश्यक हैं हमारे संस्थापकाचार्य श्रील प्रभुपाद जो इस्कॉन के कई भक्तों की दीक्षा गुरु हैं और सभी भक्तों के शिक्षा गुरु हैं वर्त्तमान एवं भविष्य में| महत्वपूर्ण वर्तमान में इस्कॉनमें कार्यरत विभिन्न शिक्षा एवं दीक्षा गुरु भी हैं|

सभी गुरुओं एवं उनके शिष्यों को भी इसी प्रकार संस्था के अनेक प्रबंधकों के महत्व को समझना चाहिए, जो संस्था शिष्यों को मार्गदर्शित एवं प्रशिक्षित करते हैं और इस्कॉनकी सुविधाओं का प्रदान करते हैं जिससे शिष्यों का आध्यात्मिक विकास सही रूप से हो सके| सभी गुरुओं एवं उनके शिष्यों को प्रबंधन प्रणाली के साथ सहयोग करना चाहिए, स्वयं के आध्यात्मिक लाभ एवं संस्था की भलाई के लिए|

श्रील प्रभुपाद को प्रसन्न करने, समाज की एकता को बनाये रखने एवं संकीर्तन आन्दोलन का प्रचार करने का सर्वश्रेष्ठ उपाय है आपस में आदरपूर्ण एवं सहयोगपूर्ण भाव रखना|

श्रील चैतन्य महाप्रभु के भाव में श्रील प्रभुप्पद चाहते थे की संकीर्तन आन्दोलन सम्पूर्ण विश्व में फैले "प्रत्येक गाँव एवं शहर में"| उन्होंने निरंतर यात्रा, लेखन एवं प्रवचन के माध्यम से यह इच्छा व्यक्त की|उन्होंने अपने शिष्यों से दूर देशों में मंदिर एवं अन्य केंद्र खोले, ग्रन्थ वितरण करने एवं प्रसाद वितरित करने का अनुरोध किया| यह श्रील प्रभुपाद की इच्छा है कि इस्कॉन फैलता रहे एवं चैतन्य महाप्रभु के कृपा-चन्द्र की तरह और अधिक उगता रहे|

इसी उद्देश्य हेतु श्रील प्रभुपाद ने एक प्रबंधन ढांचे के अंतर्गत इस्कॉनके स्थापना की| इसका उद्देश्य श्रील प्रभुपाद द्वारा बने गए भक्तों के आध्यात्मिक पोषण एवं आश्रय हेतु बनाये गए मानकों को बनाये रखना है| बद्ध आत्माओं को श्री गौर-निताई के कृपा प्रदान करते हुए श्रील प्रभुपाद को प्रसन्न करना — इस्कॉन के अंतर्गत सभी, आध्यात्मिक गुरुओं, प्रबंधकों को एक सामान

परिशिष्ट ८

इस्कॉन डिसाईपल्स कोर्स पर जी.बी.सी. का संकल्प

सहयोगपूर्ण रूप से कार्य करना एक ढांचे के अंतर्गत|

संकल्प(मार्च २०१४)

या कि इस्कॉनडिसाईपल्स कोर्सजैसा कि जी.बी.सी. गुरु सेवा कमिटी द्वारा विकसितकिया गया है, सभीप्रथम एवं द्वितीय दीक्षा अभ्यार्थियों के लिए उत्तीर्ण करना अनिवार्य है, नियम लागू जन्माष्टमी २०१५ से| इस तिथि के उपरान्त कोई भी गुरु ऐसे अभ्यार्थी को दीक्षित न करे जो डिसाईपल्स कोर्स उत्तीर्ण नहीं कर पाया है| और यह अभ्यार्थियोंकी सामान्य योग्यताओं के साथ है|

इसके साथ सभी जी.बी.सी. सदस्य एवं मंदिर अध्यक्ष यह सुनिश्चित करें कि उनके अधिकार क्षेत्रों कि जन्माष्टमी २०१५ के पहले-पहल

- दीक्षा गुरु चुनने के पहले सभी भक्त डिसाईपल्स कोर्स उत्तीर्ण करने के लिए सूचित एवं प्रोत्साहित किये जाएँ|
- भक्तों को डिसाईपल्स कोर्स में भाग लेने की सुविधा उपलब्ध हो|
- पर्याप्त शिक्षकों को कोर्स मेंपढ़ानेकी सुविधा उपलब्ध करवाई जाए|
- कोर्स उत्तीर्ण किये बिना किसी भी भक्त को दीक्षा स्वीकार करने नहीं दिया जाए| (निम्नलिखित अपवादों को छोड़कर)

इस्कॉनडिसाईपल्स कोर्सके सभी आयोजकों एवं शिक्षकों के लिए यह अनिवार्य है कि:

अ. कमसेकमपांच साल के दीक्षित भक्त हों|
आ. उन्होंनेडिसाईपल्सकोर्स उत्तीर्ण किया हो|
इ. डिसाईपल्स कोर्स आयोजक द्वारा अनुमति प्राप्त हों|
ई. उन्होंने वी.टी.ई. का टीचर ट्रेनिंग कोर्स # १ उत्तीर्ण किया हो अथवा को समान अनुभव अथवा पशिक्षण प्राप्त हों|
उ. स्थानीय जी.बी.सी. प्रतिनिधि से अनुमति प्राप्त हों|
ऊ. उन्हीं पुस्तिकाओं से पढ़ायें जो कि जी.बी.सी. गुरुसेवा कमिटी द्वारा उपलब्ध करवाया गया हो|

अशिक्षितभक्तगणका भी इस कोर्स में स्वागत है| कोर्स के पूर्ण होने के उपरान्त को एक न्यूनतम मौखिक परीक्षा उत्तीर्ण करनी होगी| कुछविशेषपरिस्थितियों जैसे की गंभीर शारीरिक स्थिति के कारण स्थानीय मंदिर अध्यक्ष उसे माफ़ कर सकते हैं|

कुछ आसाधारण परिस्थितियों के कारण कोई जी.बी.सी. अपने अधिकार क्षेत्र में इन नियमों को लागुकरना कठिन पा रहा है तब ३१ जुलाई २०१५ तक जमा किये गए आवेदन पर गुरु सेवा कमिटी काल को एक साल तक बाधा तक बढ़ा सकती है|

*टी.टी.सी. १ के नियम से रियायत एक स्थानीय जी.बी.सी. सचिव, शिक्षक की परिपक्वता और शैक्षणिक कलाओं के आधार पर,प्रदान कर सकता है| मायापुर इंस्टिट्यूट जी.बी.सी. को एक सूची प्रदान करे जिनके आधार पर यह चुनाव किया जा सके|

परिशिष्ट ९

कक्षा व्यव्हार सम्बंधित नियम

उपयुक्त पठन वातावरण बनाये रखने हेतु छात्रों को निन्मलिखित दीक्षा-निर्देशों का पालन करना होगा.

१. हम पूर्ण पाठ्यक्रम के दौरान मौजूद रहेंगे.
२. हम सभी सहयोग प्रदान करेंगे.
३. हम छात्रों के य्प्दन का आदर करेंगे भले ही हम उनसे सहमत न हों.
४. हम भिन्न वार्तालापों से बचेंगे.
५. हम कक्षा में सेलफोन के उपयोग से बचेंगे.
६. हम कक्षा में व उसके बाहर गोपनीयता बरक़रार रखेंगे.
७. हम पदवी से बल प्राप्त करने से बचेंगे.
८. कोई भी कार्य जो व्यक्ति के लिए असहज हो हम उस्ससे बिना कारण बताये वापस लेने का अधिकार का आदर करते हैं.
९. हम अपने अशित परिणामों की सफलता हेतु पूर्ण दायित्व लेते हैं.
१०. हम व्यव्हार एवं विवादों से निपटेंगे, व्यक्तियों से नहीं.
११. हम किसी भी निर्णय का आदर करेंगे.

परिशिष्ट ९

आगे अध्ययन हेतु पुस्तकें

इस्कॉन में शिष्यता के विषय में अधिक जानकरी के लिए चात्रगण निम्नलिखित ग्रंथों का अध्ययन कर सकते हैं|

आध्यत्मिक गुरु और शिष्य

ए.सी. भक्तिवेदांत स्वामी प्रभुपाद

भक्तिवेदांतबुक ट्रस्ट

हाउटू फाइंड गुरु (How to Find Guru)

गोपाल जिउ पब्लीकेशंस

द प्रोसेस ऑफ़ इन्क्वायरी (The Process of Inquiry)

श्री श्रीमद गौर गोविन्द स्वामी

गोपाल जिउ पब्लीकेशंस

द शिक्षा गुरु : इम्प्लीमेंटिंग ट्रेडिशन इन इस्कॉन (The Siksa-guru: Implementing in ISKCON)

शिवराम स्वामी

टोर्चलाइट पब्लिशिंग

शिक्षा आउटसाइड इस्कॉन? (Siksa Outside ISKCON?)

शिवराम स्वामी

लाल पब्लिशिंग

वेन गुड फार्च्यून अराईजेज़ (When Good Fortune Arises)

गोपाल जिउ पब्लीकेशंस

इस्कॉनडिसाईपल्स कोर्स

आयोजक: इस्कॉनउज्जैन

विस्तृत अनुसूची

पहला दिवस (७ नवम्बर २०१४) **इकाई १: परिचय, सिद्धांत एवं विषय**

समय:

पाठ १	स्वागत एवं परिचय	३०मिनट
पाठ २	गुरु-तत्त्व और परम्परा	७५ मिनट

समय:

पाठ ३	श्रील प्रभुपाद- इस्कॉन के संस्थापकाचार्य	७५मिनट
पाठ ४	इस्कॉन के गुरु	९० मिनट

दूसरा दिवस(८ नवम्बर २०१४) **इकाई २: गुरु के साथ सम्बन्ध स्थापित करना**

समय:

पाठ ५	गुरु-पादाश्रय	७५ मिनट
पाठ ६	गुरु का चयन	९० मिनट

समय:

पाठ ७	दीक्षा की प्रतिज्ञाएँ	६० मिनट
	मूल्यांकन इकाई १ और २	७५ मिनट

तीसरा दिवस **इकाई ३: गुरु के साथ सम्बन्ध के अनुरुप कार्य करना**

समय:

पाठ ८	गुरु-पूजा	९० मिनट
पाठ ९	गुरु-सेवा	७५ मिनट

समय:

पाठ १०	गुरु-वपुएवं वाणी सेवा	९० मिनट
पाठ ११	गुरु-त्याग	७५ मिनट

चौथा दिवस **इकाई ४: सहयोगपूर्वक सम्बन्ध पूर्ण करना**

मूल्यांकन/ समेकन

समय:		
पाठ १२	गुरु को प्रस्तुत करना	७५ मिनट
पाठ १३	इस्कॉन के अंतर्गत सम्बन्ध	९० मिनट
समय:		
	पाठ ३-४ का मूल्यांकन	७५ मिनट
पाठ १४	सम्पूर्ण कोर्स सारांश	९० मिनट